मन एक दर्पण

जेंडर समानता कुंजी

लड़का–लड़की की सामाजिक पहचान से जुड़ी
मान्यताओं को समझने में, सहायक पुस्तक

राष्ट्रीय अभियान
एक साथ

स्त्री - पुरुष बराबरी में
पुरुषों की भागीदारी

मन एक दर्पण

जेण्डर समानता कुंजी

लड़का-लड़की की सामाजिक पहचान से जुड़ी
मान्यताओं को समझने में, सहायक पुस्तक

प्रकाशनः सेण्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस (सीएचएसजे)

लेखन व सम्पादनः जगदीश लाल

मार्गदर्शनः अभिजीत दास, सतीश कुमार सिंह

पृष्ठ सज्जाः सीएचएसजे क्रियेटिव कम्यूनिकेशन

चित्रणः गणेश डे

मुद्रणः क्रियेशन ग्राफिक्स, लखनऊ

वित्तीय सहयोगः रिलायंस फाउन्डेशन

प्रकाशित : 2017

© सीएचएसजे 2017

केवल निजी वितरण हेतु

प्रस्तावना

'मन एक दर्पण' समानता कुँजी अभ्यास पुस्तक की संरचना उन समानता के साथियों के लिए की गई है जो इस अभ्यास पुस्तिका के अध्ययन से जेंडर आधारित सामाजिक धारणाओं पर अपनी सकारात्मक जानकारी बढ़ा पायेंगे। तत्पश्चात समानता के साथी जेंडर गैर बराबरी आधारित धारणाओं को बदलकर जेंडर समानता आधारित मानक तैयार करने के लिए सतत् प्रयास करेंगे।

जेंडर समानता के लिए 'मन एक दर्पण' समानता कुँजी पुस्तक को पूरा करने में उन सभी व्यक्तियों एवं सन्दर्भ श्रोतों का, जिनके लेखों, विचारों, चित्रों व रचनाओं से पुस्तक की संरचना को पूर्ण किया गया है, इस योगदान के लिए अभियान की ओर से धन्यवाद। पुस्तक संरचना में किसी एक खास क्षेत्र या प्रान्त को ध्यान में रखकर लेखन कार्य नहीं किया है। पुस्तक लेखन में जेंडर विषयों की गम्भीरता एवं व्यापकता को केन्द्रित कर पुस्तक को तैयार किया गया है।

'मन एक दर्पण' समानता कुँजी पुस्तक लेखन में यदि कोई टिप्पणी या कोई वाक्य असहज लगे तो पाठकगण क्षमा करें। समानता के साथी पुस्तक की मंशा को सर्वोपरि रखकर पढ़ें, जो कि जेंडर आधारित सामाजिक धारणाओं को बदलने व जेंडर समानता लाने के लिए पुरूषों की भागीदारी पर केन्द्रित है। लेखन का तरीका व लेखन की त्रुटियों के लिए लेखनकर्ता की ओर से आपके महत्वपूर्ण सुझाव स्वीकार्य हैं।

'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान

'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान

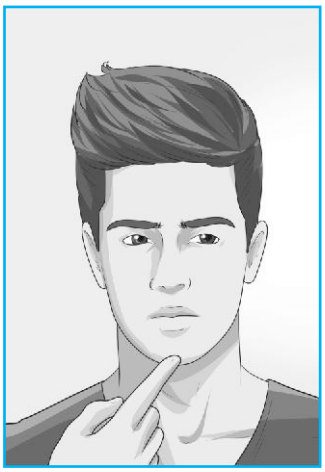

'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान जेंडर आधारित भेदभाव से भरे सामाजिक कायदे कानूनों को बदलने के लिए पुरूषों की भागीदारी को बढ़ाना है। यह अभियान 2016 में विभिन्न नागरिक संगठनों द्वारा इस एहसास के आधार पर शुरू किया गया है कि भले ही हमारा देश आर्थिक मोर्चे पर तेजी से आगे बढ़ रहा हो मगर जेंडर आधारित हिंसा और भेदभाव से मुक्ति के लिए सामाजिक धरातल पर प्रगति वैसी नहीं हो रही है जैसी होनी चाहिए महिलाओं के साथ होने वाली बर्बर हिंसा की घटनाएं बढ़ती दिखायी दे रही हैं। समाज में महिलाओं की दोयम दर्जे की हैसियत के पीछे सिर्फ इस बर्बर शारीरिक हिंसा का ही हाथ नहीं है। बल्कि जन्म से ही लड़कों व लड़कियों के लिए तय सामाजिक कायदे–कानूनों के कारण बेटियों और बेटों, पुरुषों और महिलाओं से अलग–अलग उम्मीदें की जाती हैं। कम उम्र में शादी, लिंग आधारित चयन, महिलाओं पर घर और बाहर काम का दोहरा बोझ, उनके पास शैक्षिक अवसरों व कमाई के मौकों का अभाव यह हमारे समाज में जेंडर आधारित भेदभाव के सिर्फ कुछ लक्षण हैं।

'एक साथ' का सपना

यह अभियान इस विश्वास पर आधारित है कि महिलाओं की स्थिति बदलने के लिए जरूरी है कि बदलाव की जिम्मेदारी भेदभाव झेल रही महिलाओं के बजाय उन लोगों के कंधों पर भी डाली जाए जो उन सामाजिक–कायदे कानूनों को सींचते हैं। अभियान इस विश्वास पर आधारित है कि जेंडर समानता पूरे समाज के लिए आवश्यक है और लिहाजा जेंडर न्याय के लिए पुरुषों को भी बराबर जिम्मेदारी उठानी चाहिए। दिसंबर 2012 में दिल्ली में एक युवती के साथ हुए बर्बर बलात्कार और हत्या के बाद पुरुष भी अभूतपूर्व संख्या में पूरे भारत की सड़कों पर उतर आये थे। तभी से महिला विरोधी हिंसा के मुद्दों पर पुरुषों की सक्रियता और सहभागिता लगातार बढ़ती जा रही है। दिल्ली में नवंबर 2014 में

द्वितीय मेनइंगेज ग्लोबल सिम्पोजियम की तैयारी के दौरान पहली बार जेंडर न्याय के लिए ऐडवोकेसी अभियान में पुरुषों को भी शामिल करने का प्रयास किया गया था और 95 सहभागी देशों के प्रतिनिधियों ने मिलकर दिल्ली घोषणापत्र जारी किया था। इसके दो साल बाद शुरू किया जा रहा 'एक साथ' अभियान परिवर्तन की जवाबदेही के लिए तैयार पुरुषों व लड़कों की ऊर्जाओं को दिशा देगा।

अभियान का मकसद :

ऐसे पुरूषों व लड़कों को पहचानना जो जेंडर समानता के लिए पहल करने को तैयार हैं। यह अभियान परिवार, समुदाय और विभिन्न संस्थानों में लैंगिक भेदभाव पर आधारित सामाजिक कायदे–कानूनों को बदलने के लिए उनकी सक्रिय सहभागिता को बढ़ावा देगा।

'एक साथ' की कार्यनीति :

साझीदार संगठनों के कार्यक्रमों और (फेम) फोरम टू इंगेज मेन सदस्यों द्वारा किये गये कामों जैसे मेन्स ऐक्शन टू स्टॉप वायलेंस अगेंस्ट वीमेन (मासवा) नेटवर्क व समझदार जोड़ीदार कार्यक्रम के दो दशकों के अनुभवों के आधार पर है।

सार्वजनिक कार्यक्रमः समुदायों और संस्थानों में समन्वित कार्यक्रम का आयोजन ताकि पुरुषों की जेंडर आधारित भूमिकाओं के बारे में जागरूकता पैदा हो और ऐसे पुरुषों को पहचाना जा सके जो समानता साथी बन सकते हैं।

क्षमतावर्द्धनः इन पुरुषों के साथ जेंडर समता और मर्दानगी से जुड़े मुद्दों पर लगातार संवाद और बदलावोन्मुखी कार्यवाही के लिए अभियान के साझीदार संगठनों द्वारा सहायता।

सामुदायिक पहल, समानता साथियों को संबंधित समूहों के नेटवर्क में जोड़ा जाना ताकि वे एक–दूसरे को प्रोत्साहन दे सकें। सामुदायिक पहल करने वाले समूह बनाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया जाएगा।

संचार : विभिन्न माध्यमों से साथियों व सामुदायिक समूहों के प्रयासों का आदान–प्रदान किया जाएगा। उनकी सामुदायिक संवेदीकरण गतिविधियों से अभियान के अगले चक्र की शुरूआत होगी।

कार्यक्षेत्र : चयनित ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में लागू होगा। शैक्षिक संस्थान। सार्वजनिक स्थल। जैसे कि बाजार और कार्यस्थल जैसे जगहों पर भी अभियान क्रियान्वित होगा।

'एक साथ' अभियान दस से अधिक राज्यों में, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड, ओडीशा, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, उत्तराखंड, राजस्थान, हिमाचलप्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात में चलाया जायेगा राष्ट्रीय सचिवालय सेंटर फॉर हेल्थ ऐण्ड सोशल जस्टिस, नई दिल्ली में

बनाया गया है।

साझेदारी : यह अभियान तीन नेटवर्कों का एक संयुक्त अभियान है फोरम टू एंगेज मेन (फेम) जो जेंडर के मुद्दों पर पुरुषों व लड़कों के बीच काम कर रहे संगठनों का राष्ट्रीय नेटवर्क है।

इंडिया एलायंस फॉर जेंडर जस्टिस (आईएजीजे), जो कि ग्लोबल सिम्पोजियम के आयोजन में सक्रिय रहे संगठनों का एलायंस है। वन बिलियन राइजिंग (ओबीआर), जो महिला विरोधी हिंसा के खिलाफ वैश्विक अभियान है

कौन हो सकते हैं समानता के साथी?

समानता के साथी इस अभियान का आधार होंगे। यह ऐसे पुरुष हैं जो अपनी और अपने आसपास की जिंदगियों में बदलाव लाना चाहते हैं। उम्मीद है कि ये प्रकिया सतत् रूप से चलायी जा सकेगी।

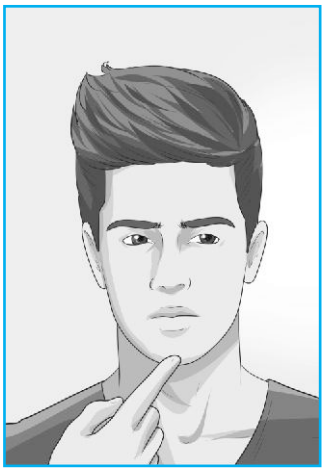

समानता के साथी आपने आस पास के लोगों को खासकर पुरूषों को जेण्डर समानता का साथी बनाने के लिए प्रेरित करेंगे। साथी बदलाव की शुरूवात स्वयं से करेंगे। समानता के साथी जेंडर आधारित परम्परागत मान्यताओं को बदलकर नये मानक बनाने की पहल करेंगे।

समानता के साथी जेंडर आधारित भेदभाव, समता समानता, जेंडर आधारित हिंसा, मर्दानगी व यौन अधिकारों पर अपनी समझ को गहरा कर पायेंगे, स्वयं में बदलाव ला पायेंगे, इस पुस्तिक में महत्वपूर्ण विषयों का चयन किया गया है। ये विषय सामाजिक जीवन में महत्व रखते हैं। समानता के साथी चाहे स्कूल/कालेज संस्थान के छात्र हों, चाहे गॉव में खेती कास्तकारी के काम से जुड़े हों या अन्य रोजगार नौकरी पेशा वाले हों, इस पुस्तक का उपयोग कर जेंडर समानता के लिए जेंडर सामाजिक अवधारणाओं के विषयों को समझ पायेंगे। सामानता के साथी दर्पण पुस्तिका के अध्ययन के बाद यह समझ पायेंगे कि किस तरह हमारे समाज में जेंडर भेदभाव व्याप्त है, इसकी पहचान कर पायेंगे, यह भी जान पायेंगे कि किस तरह जेंडर आधारित मान्यताओं व धारणाओं का ताना बाना समाज में प्रचलित है और खुद किस तरह इन उलझनों/शंकाओं में फस कर अपने घर परिवार व समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव व हिंसा आधारित व्यवहार किया जाता है यह समझ पायेंगे। समानता के साथी अपने काम आदि के साथ–साथ इस पुस्तक के माध्यम से अपनी समझ को बढ़ाते हुए जेंडरगत मान्यताओं को तोड़ पायेंगे। अपने व्यक्तिगत व सामाजिक क्षेत्र में जेंडर के नये समता समानता मूलक धारणाओं को बनाने की पहल करेंगे।

समानता के साथी आईवीआरएस (*Interactive Voice Response System*) व ऑन लाईन कोर्स में कैसे जुड़ें–

इस पुस्तक के अध्ययन के साथ–साथ समानता के साथी आई.वी.आर.एस. के माध्यम से अपने मोबाईल पर विभिन्न रूचीकर तरीकों से अपनी जानकारी व समझ को बढ़ा सकते

हैं तथा जो समानता के साथी कम्प्यूटर की जानकारी रखते हैं या पहुँच है वो साथी ऑन लाईन प्रशिक्षण में अपना पंजीकरण करा कर जुड़ सकते हैं। समानता के साथी के जुड़ाव के लिए सर्म्पक पता–

'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान सचिवालय

सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस

बेसमेंट यंग वोमन हॉस्टल न. 2 एवन्यू 21 जी. ब्लाक साकेत न्यू दिल्ली 110017

फोन न. 91–11–26511425. 26535203

www.eksaathcampaign.net

पुस्तक का उपयोग कैसे करें?

'मन एक दर्पण'समानता कुंजी अपने आप में एक विषय आधारित सम्पूर्ण पुस्तिका है, जो समानता के साथी को लड़का लड़की की सामाजिक पहचान, जेंडर आधारित सामाजिक धारणाएं, जेंडर आधारित भेदभाव, समता समानता, कम उम्र में विवाह, मर्दानगी, जेंडर आधारित हिंसा व यौन अधिकारों जैसे विषयों पर जानकारी बढ़ाने का माध्यम है। कोई भी व्यक्ति इसका उपयोग अपनी समझ बढ़ाने, आपसी चर्चा व कार्यशाला संचालन में उपयोग कर सकते हैं। समानता के साथी इस पुस्तक का उपयोग वहां कर सकते हैं जहां पर लगता है आप उलझन में हैं, और आपकी समझ में नहीं आ रहा है कि अब क्या जबाब दें क्या सही है कैसे जेंडर समानता की बात आयेगी। इस पुस्तक से सही गलत के फर्क को जान पायेंगे।

समानता के साथियों को क्या समझना जरूरी है–

1. छोटी छोटी बातें हमारे समाज में या हमारे आस पास जेंडर भेदभावों से जुड़ी होती हैं। जिनको हम नज़र अन्दाज कर देते हैं, लेकिन इनका लड़कियों व महिलाओं के जीवन में प्रभाव पड़ता है। ये छोटी छोटी बातें किस्से, कहावतें, मुहावरे और मान्यताओं के रूप में प्रचलित होती हैं। जिसके कारण लड़कियां व महिलाएं कोई जवाब नहीं दे पाती! उन्हें लगता है, कि शायद ये बातें सही हैं। समानता के साथी इन उदाहरणों पर चर्चा करायें कि सही क्या है। इन मान्यताओं से किसके जीवन में असर पड़ रहा है, इसका सही जवाब क्या है, पुरूष स्वयं में भी सोचें कि इन धारणाओं व मान्यताओं के कारण पुरूषों को भी एक तरह का कलंक लग रहा है जबकि सारे पुरूष इन मान्यताओं को सही नहीं ठहराते–**अतः समानता के साथी इन धारणाओं को बदलने के लिए नये मानक बनाने की पहले करने लगेंगे।**

.....

2. समानता के साथी दैनिक कामों में जेंडर, मर्दानगी, संसाधनों पर नियत्रंण व पहुॅच, जेंडर आधारित मान्यतायें जैसे–कम उम्र में विवाह, बालिका शिक्षा, लड़कियों व महिलाओं के साथ होने वाली छेड़छाड़, घर के अन्दर महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा व घर के कामों में मददगार भूमिका आदि विषयों पर अपनी जानकारी व समझ को बढ़ा पायेंगे–

अतः समानता के साथी अपने व्यक्तिगत जीवन में बदलाव के लिए प्रेरित होंगें व अपनी मददगार भूमिका बनाने लगेंगे।

3. समानता के साथी यौन अधिकार एंव यौन स्वास्थ्य विषयों पर समाज में प्रचलित गलत धारणाओं को समझने लगेंगे। अपने पार्टनर के साथ बराबरी के रिश्तों को बनायें रखेंगे। वे समझेंगे कि उन्हें यौन व्यवहारों में मर्दानगी किस तरह लड़कों व पुरूषों को जोखिम में डालती हैं उन से उभरने के लिए अपनी सोच में बदलाव लाना जरूरी है। इन विषयों पर खुली चर्चा करने का माहौल तैयार करने में मददगार बनेंगे। **अतः समानता के साथी अपने व्यक्तिगत जीवन में बदलाव के साथ सामाजिक दायरे में भी हस्तक्षेप करने लगेंगे–**

समानता के साथी का स्वागत

राम तू बता–समानता साथी बनने के लिए क्या करें? श्याम मैं भी तो वही सोच रहा हूँ। चलो ! मोहन चाचा से पूछें ? हां चलो ।

दीपक .... अरे राम और श्याम क्या सोच रहे हैं।

राम ....दीपक हमने समानता साथी बनने का निर्णय लिया है।

दीपक .....वाह क्या बात है। तब तो आप दोनों का स्वागत है।

दीपक ..... अरे मोहन चाचा आप भी ?

मोहन चाचा ....हां दीपक मैं समानता का साथी बनने को तैयार हूँ

दीपक.....तब तो चाचा आपका जोरदार स्वागत है।

समानता के साथी, पुस्तक का अगला पृष्ठ खोलें। और देखें, कि समाज से जुड़ी किन बातों को जानना जरूरी है।

विषय सूची

क्र. सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	प्रस्तावना	i
	'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान	ii
	कौन हो सकते हैं समानता के साथी	v
	पुस्तक का उपयोग कैसे करें ?	vii
	समानता के साथी का स्वागत	ix
	मन एक दर्पण पुस्तिका विषय वस्तु सूची	
(अ)	**सामाजिक लिंग (जेंडर)**	2
1	जेंडर अवधारणा	6
2	कार्य बोझ	10
3	जेंडर आधारित कार्य विभाजन	16
(ब)	**समता समानता**	24
4	सुविधा एंव प्रतिबंध	32
5	संसाधनों तक पहुँच एवं नियत्रंण	38
6	समान अवसर एवं भागीदारी	44
(स)	**जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव**	51
7	घरेलू हिंसा	59
8	घरेलू हिंसा अधिनियम 2005	63
9	यौन उत्पीड़न	65
10	लिंग आधारित चयन	68
11	अभद्र भाषा एवं हास्य कहावतें	70

12	छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा के खिलाफ कानून	74
(द)	**मर्दानगी**	78
13	मर्द व मर्दानगी	78
14	मर्दानगी का सामाजीकरण	82
15	मर्दानगी का महिलाओं एंव पुरूषों पर पड़ने वाला असर	86
16	मर्दानगी एवं सामाजिक संस्थाएं	93
(ध)	**यौनिकता, लैंगिकता**	95
17	शरीर पहचान व विविधता	98
18	यौनिक लैगिग अधिकार	101
19	साथी चयन का अधिकार व कम उम्र में शादी	107
20	यौनिक अधिकार एवं इससे जुड़े मिथ व भ्रातिंया	109

(अ) सामाजिक लिंग (जेंडर)

सामाजिक धारणा–दो शरीर अलग–अलग हैं तो बात व्यवहारों में अन्तर होगा ही ?

नीचे दिये गये चित्र में एक पिता अपने बेटा–बेटी को समझा रहे हैं कि बेटा–बेटी के लिए समाज में अलग–अलग दस्तूर बने हैं। तुम लोगों को उन्हें मानना जरूरी है आओ जानें क्या हैं ये दस्तूर ?

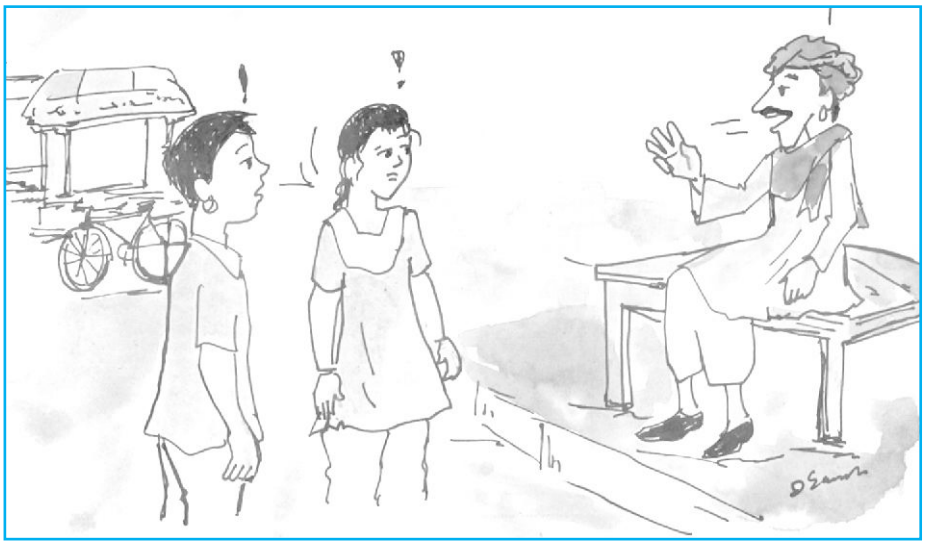

सामाजिक लिंग (जेंडर) गतिविधि–01 आओ जानें बेटा–बेटी के लिए समाज ने क्या दस्तूर बनाये हैं ?

नीचे दिये गये अभ्यास में समानता के साथियों को 15 सवालों पर अपनी राय देनी है। उन्हें तीन विकल्प अ,ब,स दिये गये हैं। उन पर सही का निशान लगाना है। विकल्प इस प्रकार हैं–

लड़कों और मर्दों (समानता के साथियों) को जबाब देना है–

सामाजिक दस्तूर	(अ)सहमत	(ब)असहमत	(स)कह नहीं सकते
1 लड़कियां भी देर रात घर से बाहर घूम फिर सकती हैं?			
2. लड़कियां आजादी का गलत फायदा उठाती हैं?			
3 औरत ही औरत की दुष्ट मन होती है?			
4. लड़कियों में इतनी अक्ल नहीं होती हैं कि वो अपने लिए वर चुन सकें?			
5. लड़कियां कभी भी लड़कों की बराबरी नहीं कर सकती ?			
6. लड़कियां भड़कीले कपड़े पहनती हैं इसलिए छेड़छाड़ की शिकार होती हैं?			
7. यौन सम्बंध में जैसा पति कहे पत्नी को करना चाहिए?			
8. शहरी लड़कियों के साथ ज्यादा बलात्कार होते हैं?			
9. असली मर्द वह है जो दूसरे मर्दों को काबू में कर सके?			
10 लड़कियों को ज्यादा छूट दे दी तो वो बहकने लगेंगी?			
11. लड़कियां अपना भला बुरा नहीं सोच सकती?			
12 लड़कियों को भी छेड़छाड़ अच्छी लगती है ?			
13. पति–पत्नी दोनों नौकरी करने वाले हैं एक को नौकरी छोड़नी है तो पत्नी को छोड़नी चाहिए			
14. पत्नी का पति को जवाब देना बदतमीजी है?			
15. लड़की को देर रात में कभी भी लड़कों से फोन पर बात नहीं करनी चाहिए			

समानता के साथी ने उपर दिये गये विकल्प अ,ब,स,में अपनी राय व्यक्त की जबाब दिया इसके लिए साथी का धन्यवाद।

अब आप जानें कि जेंडर सोच कैसे काम करती है। आओ इसके बारे में और गहराई से जानने के लिए अगला भाग पढ़ें–

हमारे समाज में जेंडर सोच किस तरह काम करती है जैसे –

महिलाओं को अपने मन के काम करने पर, घर बाहर आवाजाही करने पर, पराये मर्दों से नजर मिलाकर बात करने पर, लड़कियों के तेज़ बोलने पर, अपने मन के कपड़े पहनने पर या अपने मन से घर से बाहर जाने पर कि बेटी अब तू सयानी हो गई है जरा सम्भलकर चला कर, तू लड़की है तूझे पता नहीं अब तू बच्ची नहीं है। जब ये बातें बार बार लड़की को बोली जाती हैं तो वह अपने दायरे सीमित करने लगती है। किसी बात को बोलने से पहले दस बार सोचने लगती है। मैं लड़की हूँ। फिर ये धारणाऐं उसे आगे चलकर सौम्य, सहनशील, आज्ञाकारी महिला बनकर रहने को मजबूर कर देती हैं भले ही दूसरा उसके साथ गलत ही क्यों ना कर रहा हो। वह चुप रहती है। सब सह लेती है। इसी तरह लड़कों को बार बार अहसास दिलाया जाता है तू लड़का है। घर से बाहर निकल कर समाज को देख, तू मर्द है। तेरा काम समाज में अपनी सामाजिक पहचान बनाने की होनी चाहिए। घर में दुबककर रहेगा तो लोग मज़ाक बनायेंगे, तुझे समाज में सबसे आगे रहना है, आदि सीखाया जाता है।

यहां इन कथनों पर चर्चा कराने का आश्य यह है कि सामाजिक कहावतों, मान्यताओं व धारणाओं का तनाव महिला पुरूष दोनों के लिए है। लेकिन इन तनावों में गैरबराबरी छुपी है। ये तनाव लड़कों को आगे बढ़ने, नाम कमाने, पैसा कमाने, इज्ज़त बनाने व समाज में सत्तावान बनाने के लिए कहे जाते हैं। लेकिन लड़की व महिलाओं के लिए इसके विपरीत हैं। ये सामाजिक, कहावतें उन्हें कमज़ोर बनाने, दूसरों पर आश्रित रहने, ज्ञान व जानकारी से वंचित रहने, नेतृत्व विहीन रहने व सत्ताहीन रहने के लिए मजबूर करती हैं। इस तरह के उद्वाहरण अलग अलग क्षेत्रों में लोगों को कहते हुए सुना जाता है। (अब समानता के साथी गतिविधि 02 में जायें।)

आओ जानें महिला–पुरूष की सामाजिक व जैविक पहचान क्या है?

गतिविधि– 02

इस अभ्यास के माध्यम से समानता के साथी महिला पुरूष की सामाजिक पहचान व जैविक पहचान के अन्तर पर अपनी स्पष्टता बढ़ा पायेंगे और उन्हें अपने आस पास जेंडर सोच किस तरह काम करती है जान पायेंगे ।

समानता के साथियों को नीचे दिये गये तालिका पर अपनी राय दर्ज करनी है व आप बतायें कि ये महिला पुरूष की सामाजिक पहचान है या जैविक पहचान है ? साथी अपनी राय टिक सही का निशान लगाकर बताएं– ✓

क्रम सं	आपको पहचान बतानी है ?	(अ) सामाजिक	(ब) जैविक
1	महिला ही बच्चे को दूध पिला सकती है।		
2	बच्चा महिला ही पैदा कर सकती है।		
3	कुदरती तौर पर लड़का ही वंश चला सकता है।		
4	महिला ही बच्चे को स्तनपान करा सकती है।		
5	लड़कों में अण्डकोष व लड़कियों में गर्भाश्य होता है।		
6	कुदरत ने लड़की को कोमल लड़कों को कठोर बनाया है।		
7	लड़कों में दाड़ी मूँछ का उगना।		
8	बच्चों का बेहतर लालन पालन माँ ही कर सकती है।		
9	लड़कियां कुदरती तौर पर शंकोची स्वभाव की होती हैं।		
10	प्राकृतिक रूप से महिलाएं ममतामयी होती हैं।		

समानता के साथी ने जवाब दिया इसके लिए धन्यवाद। साथी जेंडर व सेक्स की जानकारी को और गहराई से जानें कि जेंडर और सेक्स क्या है।

जेंडर – अलग–अलग समाज में विषम परिस्थिति व काल में महिला व पुरूष के बीच निर्दिष्ट आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यताओं व मौके से सन्दर्भित होता है। जेंडर को सामाजिक रूप से सीखे गए उस व्यवहार मानकों व अपेक्षाओं से परिभाषित किया जाता है जो पुरुष व स्त्री से संबंधित हैं। समाज की दी हुई औरत–मर्द की परिभाषा को सामाजिक लिंग या जेंडर कहते हैं।

लड़का–लड़की या महिला–पुरूष की एक सामाजिक पहचान जिसे सामाजिक लिंग या जेंडर कहा जाता है। जो समाज द्वारा बनाया गया है, जिसे बदला जा सकता है, इसका स्वरूप अलग अलग जगहों पर अलग अलग होता है यह लड़कियों व महिलाओं के साथ भेदभाव को जन्म देता है जिसके फलस्वरूप महिलाओं को पहनावे में रोक–टोक, ज्यादा बोलने में प्रतिबंध, आत्मबल से कमजोर बनाये रखना व नियत्रंण में रहना सिखाया जाता हैं दूसरी ओर जेंडर अवधारणा पुरूषों को सुविधाएं देता है परन्तु सुविधाओं के साथ बहुत सारे जोखिम भी देता है जिसे समझना जरूरी है।

सेक्स :– जैविक अन्तर है जिसमें महिला का शरीर अलग है और पुरूष का शरीर अलग। ये केवल शारीरिक अन्तर है, इसमें किसी तरह का भेदभाव निहित नहीं है, इसे सेक्स कहा जाता है।

साथी ने अभ्यास सामाजिक लिंग यानि जेंडर क्या है पर प्रतिभागिता की। आपने अपनी जानकारी व समझ के स्तर पर सही गलत का विभेद किया। आप समानता के साथी बनने के लिए निम्न पर सही का निशान लगायें कि आप अपने आप को कहां देख रहे हैं–✓

आप जेंडर की बेहतर जानकारी रखते हैं –?

आप जेंडर की सामान्य जानकारी रखते हैं–?

आपको अभी स्वयं की जानकारी व समझ बढ़ानी है –?

आप समानता साथी के लिए चयनित हो गये हैं, आपका पुनः स्वागत है। अब आप मन एक दर्पण पुस्तिका के हर अभ्यास को पढ़कर अपनी जानकारी व समझ को बढ़ायें। अगला भाग अभ्यास–1 में आपको अपनी बातों को लिखकर दर्ज करना है कि आप जेंडर अवधारणा के बारे में क्या सोचते हैं ?

उत्तर माला – सामाजिक लिंग (जेंडर)
उत्तर माला – आपके सही जवाब सामाजिक लिंग (जेंडर)गतिविधि 01 1. (अ) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब) 8. (ब) 9. (ब) 10. (ब) 11. (ब) 12. (ब) 13. (ब) 14. (ब) 15. (ब)
उत्तर माला – आपके सही जवाब महिला–पुरूष की सामाजिक व जैविक पहचान (जेंडर) गतिविधि 02 1. अ 2. ब 3. अ 4. ब 5. ब 6. अ 7. ब 8. अ 9. अ 10. अ

1.जेंडर अवधारणा

नीचे दिये गये अभ्यास में समानता के साथीयों को अपने विचारों के माध्यम से व्यक्त करना है कि जो हमारे समाज में जेंडर धारणाएं बनी हुई हैं उनके बारे में साथी क्या समझते हैं ? नीचे दिये गये बाक्स में लिखें।

जेंडर अवधारणाएं गतिविधि–01

समानता के साथी थोड़ा याद करें अपने घरपरिवार, पास पड़ोस में जब लोग इस तरह कहते हैं। आप इन धारणाओं पर क्या कहेंगे,लिखें ?

सामाजिक धारणाएं	**आप क्या कहेंगे, इनके बारे में संक्षिप्त शब्दों में लिखें**
लड़का कुल दीपक होता है।	
लड़के कठोर और लड़कियां कोमल होती हैं।	
कुछ भी कहो लड़कियां लड़कों की बराबरी नहीं कर सकती।	
लड़के से वंश चलता है लड़की तो पराया धन है।	
लड़की हॅसमुख हो परन्तु उसका खुलकर हॅसना शोभा नहीं देता।	
लड़कियों का घर से बाहर जाना ठीक नहीं, ज़माना खराब है।	
लड़की पढ़ी लिखी जितनी भी हो, उसे घर के काम तो आने ही चाहिए।	
जो लड़का दस लोगों में बोल न सके वो मर्द नहीं।	
जो लड़की दस लोगों के बीच बोलने लगे उसमें लड़की के जैसे गुण नहीं।	
लड़की का कम बोलना, सौम्य व्यवहार, उसका आभूषण है।	
लड़का हो तो तेज़तर्रार हो।	
अच्छी नारी वो है जो पतिवर्ता है।	
असली मर्द वो है जो पत्नी पर नियंत्रण कर सके।	

समानता के साथी ने उपर दिये गये बातों का जवाब लिखा, समानता के साथी का धन्यवाद। अब आगे जानें कि जेंडर अवधारणा में भेदभाव कैसे निहित है –

समानता के साथीयों को जेंडर अवधारणा के अर्न्तगत यह समझना जरूरी है कि लड़कियों व महिलाओं के साथ घर व बाहर दोनों जगह भेदभाव होता है। भेदभाव क्षेत्र के आधार पर अलग अलग मान्यताओं के प्रचलन के रूप में किया जाता है जैसे–

घर के अन्दर भेदभाव–

- घर के कामों में भेदभाव।
- बाहर जाने में भेदभाव।
- पहनावे में भेदभाव।
- बोलने में भेदभाव।
- रीति रिवाजों में भेदभाव आदि।

घर के बाहर भेदभाव–

- कुछ जगहों पर जाने की मनाही।
- पूरी पढ़ाई की मनाही।
- पहनावे में भेदभाव।
- बोलने में भेदभाव।
- रीति रिवाजों में भेदभाव।
- काम व्यवसायों में भेदभाव आदि।

समानता के साथियों को यह जानना जरूरी है कि हमारे समाज में महिलाओं व लड़कियों के साथ भेदभाव किया जाता है।

समानता के साथी नीचे दिये गये चित्रों अ एवं ब पर अपने अनुभव साझा करें–

चित्र (अ) क्या आपको किसी की कोई मददगार भूमिका दिखाई दे रही है ? चित्र (ब) जब कोई मदद करता है तो घर या पास पड़ोस के लोग क्या कहते हैं ?

चित्र (अ) **चित्र (ब)**

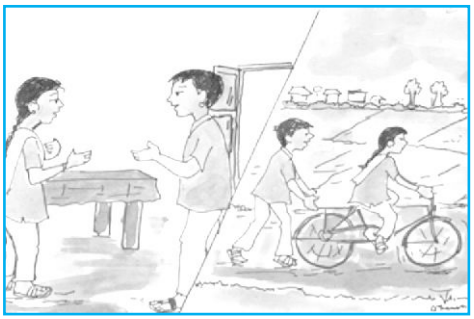

हां– नहीं –

हां या नहीं के बारे में सोचें फिर लिखें ––––––––––––?

चित्र (अ) में क्या आपको किसी की कोई मददगार भूमिका दिखाई दे रही है ? चित्र (ब) जब लोग मदद करते है तब क्या सोच के मदद करते हैं ?

चित्र (अ) **चित्र (ब)**

हां– नहीं –

हां या नहीं के बारे में सोचें फिर लिखें ––––––––––––?

आओ जानें जेंडर अवधारणा के बदलते स्वरूप–

समानता के साथियों को यह समझना जरूरी है कि समाज में आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक मान्यताओं व मौकों के आधार पर महिला पुरूष की परिभाषा में बदलाव आ जाता है। जैसे उत्तरी भारत में विवाहित महिला अक्सर घूँघट रखती है जबकि दक्षिण में ऐसा नहीं है। इसके साथ ही विभिन्न भौगोलिक आंचलों में जाति के आधार पर भी अन्तर दिखते हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत में अनुसूचित जाति की अशिक्षित विधवा महिला अपने व अपने बच्चों के भरण पोषण के लिए खेतों में मजदूरी कर सकती है। जबकि इसी क्षेत्र की अशिक्षित ब्राह्मण विधवा के घर से बाहर जाने पर रोक होती है जिससे कि वह अपना भरण पोषण मजदूरी द्वारा चाहते हुए भी नहीं कर पाती । ये विशेषताएँ भी समय के अनुसार बदलती रहती हैं। कभी–कभी यह बदलाव बाहरी कारणों से प्रतिफलित होता है। और कभी–कभी लोगों का एक समूह इनमें बदलाव ले आता है। द्वितीय महायुद्ध के पूर्व जापान में स्त्रियाँ दफ्तरों, कारखानों में काम नहीं करती थी। युद्ध लड़ने के लिए जैसे–जैसे पुरुषों की जरूरत बढ़ती गई, औरतों को दफ्तरों व कारखानों में काम पर लगाया जाने लगा। विश्व युद्ध की समाप्ति पर पहले की स्थिति नहीं लौटी। आज जापान में 90 प्रतिशत महिलाएं कारखानों, दफ्तरों या अन्य सेवा के क्षेत्र में काम कर रही हैं।

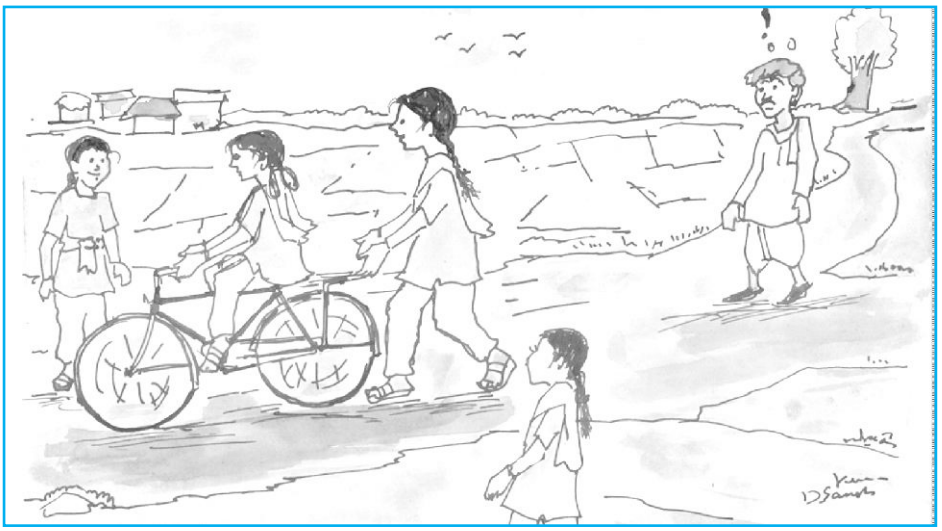

अब समानता के साथी अगला भाग अभ्यास–2 में जानें कि कार्य बोझ क्या है–?

2. कार्य बोझ

सामाजिक धारणा– काम तो पुरूष करते हैं महिलाएं घर में खाली रहती हैं ?

कार्य बोझ गतिविधि–01 कहानी : 'दीनू काका की कहानी'

दीनू काका व रमा काकी की शादी को 20 साल हो गये हैं इनके तीन बच्चे हैं। तीनों स्कूल जाते हैं दीनू काका गॉव बिरादरी में अपनी अच्छी पहचान बनाने के लिए सोचते हैं। घर में अच्छा खासा करोबार होना चाहिए। इसलिए दीनू काका ने 5 बकरियां, एक भैंस, एक जोड़ी बैल भी रखे हैं। गॉव में दीनू काका की थोड़ी बहुत खेती की जमीन भी है। खेती से भी कुछ आमदनी हो जाती है। दीनू काका गॉव के पास एक फैक्ट्री में नौकरी करते हैं। कुछ समय से दीनू काका आये दिन रोज अपनी पत्नी को सुनाते कि देखो तुम समझती नहीं, तुम सारा दिन घर में खाली रहती हो, अरे मैं काम करता हूॅ। समझा करो, थका हारा आता हूॅ। तुम जब देखो घर में चिल्लाती रहती हो, जरा समझा करो।

अब तो दीनू काका दिन में एक दो बार जरूर बोल देते कि अरे तुम खाली रहती हो इसलिए तुम्हारे दिमाग में अनाप–सनाप बातें आती रहती हैं। इन बातों को रोज सुनकर रमा काकी ने मन बना लिया कि अब तो इन्हें गणित समझाना ही पड़ेगा। एक दिन दीनू काका की छुटट्ी थी। दिन में बच्चे सब स्कूल चले गये थे रमा काकी को लगा ये मौका अच्छा है। रमा काकी बोली ये जी सुनते हो जब मैं स्कूल जाती थी गणित में हमेशा फर्स्ट आया करती थी, आप बताओ आप गणित में पास होते थे या नहीं? दीनू काका हॅसते हुये बोले बच्चों वाली बात क्यों कर रही है। रमा काकी ने कहा मुझे लगता है तुम गणित में बहुत कमजोर रहे होंगे।

दीनू काका को थोड़ा अपना अपमान सा लगा और गुस्से में बोले चल बता कौन सा सवाल जानती है जो मैं न बता सकूॅ। काकी बोली, आप आये दिन रोज मुझसे कहते हो तू खाली रहती है, काम तो में करता हूॅ। काका बोले हॉ सही बात, काम तो मैं ही करता हूॅ, तू क्या करती है बता ?

रमा काकी बोली, चलो मैंने इन दो कागजों में दो घड़ियां बनाई हैं, इसमें हम दोनों एक दिन का अपना–अपना काम भरते हैं। फिर काका बोले, ला अभी बताता हूॅ गणित क्या होता है। काकी बस मुस्करा दी, फिर घड़ी में अपना काम भरने लगी।

प्रश्न–क्या रमा काकी को अपने एक दिन काम लिखने के लिए बार–बार सोचना पड़ रहा होगा ?

हां ..... नहीं ..... सही का निशान लगायें– ✓

प्रश्न–क्या दीनू काका को अपना एक दिन का काम लिखने के लिए सोचना पड़ रहा होगा ?

हां .....नहीं .....सही का निशान लगायें – ✓

आओ जानें, रमा काकी ने कैसे गिनाये एक दिन के काम–?

घर के एक दिन के कामों की सूची	**समय**	**रमा काकी**	**दीनू काका**
रमा काकी का सुबह जगने का समय	5.30 बजे		
दीनू काका का सुबह जगने का समय	6 बजे		
हाथ मुँह धोना व चाय बनाना	5.30 से 6 बजे	✓	
जानवरों को घास चारा सानी देना	6.00 से 6.30 बजे	✓	
दूध निकालना	6.30 से 7 बजे	✓	✓
घर की साफ सफाई करना	7 से 8 बजे	✓	
अखबार पढ़ना या टीवी देखना	7 से 8 बजे		✓
जिम जाना, कसरत करना या घूमना	8 से 8.30 बजे		✓
सुबह का नाष्ता बनाना	8 से 8.30 बजे	✓	
परिवार वालों को नाश्ता खिलाना	8.30 से 9 बजे	✓	
बच्चों को स्कूल को तैयार करना	9 से 9.15 बजे	✓	
घर से बाहर जाने वालों का टिफन तैयार करना	9.15 से 9.30 बजे	✓	✓
घर से बाहर अपने काम में जाना	9.30 से 10. बजे		✓
घर के जूठे बर्तन धोना	9.30 से 10 बजे	✓	
जानवरों को पानी पिलाना नहलाना	10 से 10.30 बजे	✓	
गोबर निकालना	10.30 से 11 बजे	✓	
कपड़े धोना	11 से 12 बजे	✓	
खेतों से चारा इक्कठा करना	12 से 1 बजे	✓	
दिन का खाना बनाना	1 से 1.30 बजे	✓	
परिवार को दिन का खाना खिलाना	1.30 से 2 बजे	✓	
दिन के जूठे बर्तन धोना	2 से 2.30 बजे	✓	
टीवी में नाटक देखना	2.30 से 3 बजे	✓	
पड़ोसियों से बातचीत या काम में मदद करना	3 से 3.30 बजे	✓	
जानवरों को दिन का चारा खिलाना	3.30 से 4.00 बजे	✓	
खेतों की निगरानी जानवरों का चारा लाना	4.00 से 5 बजे	✓	
घर वापस आना आराम करना	5 से 5.30 बजे		✓
शाम का चाय नाश्ता बनाना व परिवार को बांटना	5 से 5.30 बजे	✓	
शाम का दूध निकालना	5.30 से 6 बजे	✓	✓
शाम की सब्जी काटना	6 से 6.15 बजे	✓	✓
टीवी देखना समाचार सुनना	6.15 से 7 बजे		
पड़ोसियों से गपश्प मारना	7 से 7.30 बजे		✓
रात का खाना बनाना	7.30 से 8 बजे	✓	
परिवार को रात का खाना खिलाना	8 से 8.30 बजे	✓	
रात के जूठे बर्तन धोना	8.30 से 9 बजे	✓	
किचन की साफ सफाई	9 से 9.15 बजे	✓	
टीवी में नाटक देखना	9.15 से 9.45 बजे	✓	✓
बिस्तर लगाना	9.45 से 10 बजे	✓	
दीनू काका सोये	10 बजे		
राम काकी सोयी	11 बजे	✓	

एक दिन में कुल आराम व काम के घंटे – कुल 24 घंटा

रमा काकी एक दिन में घर का काम करती है – 14 घंटा

एक दिन में रमा काकी को आराम करने को समय मिला – 7 घंटा

रमा काकी को खुद का काम करने को समय मिला – 3 घंटा

दीनू काका एक दिन काम करते हैं – 08 घंटा

दीनू काका को एक दिन में आराम करने को समय मिला – 10.30 घंटा

दीनू काका को खुद का काम करने को समय मिला – 5.30 घंटा

आगे गतिविधि–2 में समानता के साथी अपने घर के एक दिन के कामों के बारे लिखें कि समानता के साथी एक दिन में क्या–क्या काम करते हैं। अपना चार्ट तैयार करें–

कार्य बोझ गतिविधि– 02

समानता के साथी नीचे दिये गये तालिका पर अपने घर का एक दिन के काम को भरें–

घर के एक दिन के कामों की लिस्ट	समय	मैं	बहन	पत्नी	माँ	अन्य
		बजे	बजे	बजे	बजे	बजे
सुबह जगने का समय						
हाथ मुँह धोना व चाय बनाना						
जानवरों को घास चारा सानी देना						
दूध निकालना						
घर की साफ सफाई करना						
अखबार पढ़ना या टीवी देखना						
जिम जाना, कसरत करना या घूमना						
सुबह का नाश्ता बनाना						
परिवार वालों को नाश्ता खिलाना						
बच्चों को स्कूल को तैयार करना						
घर से बाहर जाने वालों का टिफिन तैयार करना						
घर से बाहर अपने काम में जाना						
घर के जूठे बर्तन धोना						
जानवरों को पानी पिलाना नहलाना						
गोबर निकालना						
कपड़े धोना						
खेतों से चारा इक्कठा करना						
दिन का खाना बनाना						
परिवार को दिन का खाना खिलाना						
दिन के जूठे बर्तन धोना						

टीवी में नाटक देखना						
पड़ोसियों से बातचीत या काम में मदद करना						
जानवरों को दिन का सानी चारा खिलाना						
खेतों की निगरानी जानवरों को चारा लाना						
घर वापस आना आराम करना						
शाम का चाय नाश्ता बनाना व परिवार को बांटना						
शाम का दूध निकालना						
शाम की सब्जी काटना						
टीवी देखना समाचार सुनना						
पड़ोसियों से गपशप मारना						
रात का खाना बनाना						
परिवार को रात का खाना खिलाना						
रात के जूठे बर्तन धोना						
किचन की साफ सफाई						
टीवी में नाटक देखना						
बिस्तर लगाना						
अन्य काम जिन्हें आप जोड़ना चाहते हो						

1. क्या समानता के साथी बतायेंगे कि आपने अपने घर में एक दिन कितने घंटे काम किया ?

कुल घंटे..... ?

2. आपको आराम को कितने घंटे मिले ..... ?

3. अपने स्वयं के काम के लिए कितने घंटे मिले ..... ?

4. क्या आप बता पायेंगे कि आपके घर में ज्यादा काम का बोझ किनके उपर है ?

महिला .....?

पुरूष .....?

प्रायः घरों में महिलाओं के ऊपर ज्यादा काम का बोझ होता है, लेकिन कहा जाता है कि महिलाएं घर में खाली रहती हैं। यदि महिलाओं के एक दिन के कामों को देखें तो बहुत ज्यादा काम का बोझ महिलाओं के ऊपर है। अतः समानता के साथी जेंडर भूमिकाओं को बदलकर घर के अन्दर महिलाओं के कामों में हाथ बढ़ायें जिससे कि उन्हें भी आराम मिल सके। समानता के साथियों को ये बदलाव स्वयं अपने घर से करनी होगी। ये बदलाव जेंडर समानता के लिए जरूरी है। पुरूषों को अपनी काम की भूमिकाओं में बदलाव लाना होगा।

समानता के साथी अगला भाग गतिविधि–2 में बतायें कि घर के अन्दर के काम पुरूष क्यों नहीं करते, या जो पुरूष कुछ मदद करते हैं तो समाज क्या कहता है, आओ जानें–

कार्य बोझ गतिविधि– 02

समानता के साथियों को सोच विचार कर लिखना है। नीचे दिये गये चित्र पर विचार करें कि क्या हमारे समाज में इस तरह घर के काम महिला पुरूष मिल बांट कर करते हैं ?

क्या हमारे आस पास घरों में कोई पुरूष घर के कामों में मदद करते हैं बतायें ?

हां–

क्यों करते है.....

.....

.....

नहीं –

क्यों नहीं करते .....

.....

.....

.....

कार्य बोझ के सही मायने क्या है ?

हमारे समाज में प्रायः महिलाओं के घर के कामों को नजरन्दाज किया जाता है। पुरूष घर से बाहर एक काम को करते हैं, उन्हें वही काम नजर आता है। क्योंकि उन कामों में पैसा मिलता है। जबकि महिलाएं दिन भर घर व बाहर, कभी बच्चों की देखभाल, कभी जानवरों से जुड़ा काम, कभी खेती बाड़ी से जुड़े काम, समय–समय पर घर की साफ सफाई, परिवार के लिए रसोई तैयार करना आदि काम करती रहती हैं। स्थिति ये है कि महिलाएं दिन भर कठपुतली की तरह इधर उधर नाचती रहती हैं। यदि हम अपने घरों में देखें तो महिलाएं सुबह जल्दी उठती हैं और रात में घर के सारे काम निपटाकर सोती हैं, महिलाओं को आराम के लिए मात्र 6 से 8 घंटे मिल पाते हैं। महिलाओं के ऊपर ज्यादा कार्य बोझ होने के कारण उनका स्वास्थ्य कमजोर रहता है। उन्हें आगे बढ़ने, कुछ नया करने या सीखने का मौका नहीं मिल पाता है। इन कारणों से महिलाएं पराधीन बनती जाती हैं। इसलिए पुरूषों को महिलाओं के कार्य बोझ को कम करने में मददगार बनना होगा। जिससे कि महिलाएं भी आत्मनिरभरता की ओर बढ़ सकें।

समानता के साथी– जेंडर समानता लाने के लिए अपनी योजना तैयार करें

1. महिलाओं के काम के बोझ को कम करने के लिए घर के अन्दर के किन–किन कामों

में आपकी भागीदारी हो सकती है लिखें ?

.....

.....

.....

.....

2. क्या समानता के साथी बतायेंगे कि जब आपने घर के अन्दर के कामों में भागीदारी की तब किस–किस तरह की चुनौतियां आई या लोगों ने क्या कहा लिखें ?

_____

_____

_____

समानता के साथी अभ्यास– 3 में जायें और समझें कि हमारे समाज में महिला पुरूष के आधार पर कामों का विभाजन किस तरह किया गया है और इसका असर क्या होता है।

3.जेंडर आधारित काम का विभाजन

सामाजिक धारणा– महिला पुरूष में अलग–अलग कामों का बटवारा इसलिए किया गया है कि पुरूष ज्यादा जानकार व मेहनती होते हैं, इसलिए पुरूषों को कठिन व जोखिम भरे काम दिये गये हैं।

अब हम गतिविधि–01 में बात करेंगे कि हमारे समाज में काम का किस तरह जेंडर आधारित विभाजन किया गया है। कौन से काम ऐसे हैं जिन्हें महिलाओं को करना है और कौन से काम हैं जिन्हें पुरूषों को करना है। ये सब सिखाया जाता है, जैसे–

जेंडर आधारित काम का विभाजन गतिविधि–01

समानता के साथी बतायें कि नीचे दिये गये चित्रों में क्या काम किया जा रहा है और काम करने वाला / वाली कौन है ?

1. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) कौन सा काम है.....लिखें ?

ब)महिला–

स) पुरूष –

क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

ब)महिला –

स) पुरूष –

3. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा है––––––––––––––––––––––––लिखें ?

ब) महिला–

स) पुरूष –

4. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा है––––––––––––––––––––––––लिखें ?

ब) महिला–

स) पुरूष –

5. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा है––––––––––––––––––––––––लिखें ?

ब) महिला–

स) पुरूष –

6. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा हैं .....लिखे

ब) महिला–

स) पुरूष –

7. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा है––––––––––––––––––––––लिखें ?

ब) महिला–

स) पुरूष –

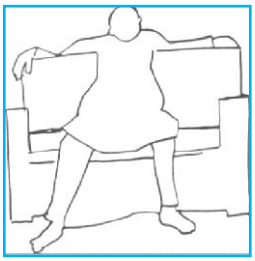

8. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) क्या काम किया जा रहा है.....लिखें ?

ब) महिला–

स) पुरूष –

9. क्या काम किया जा रहा है लिखना है और काम करने वाला कौन है सही का निशान लगायें–✓

अ) काम क्या है .....लिखें ?

ब) महिला –

स) पुरूष –

10. ये चित्र किसका है और चित्र के बारे में आप क्या कहेंगे लिखना है किसका है सही का निशान लगायें– ✓

अ) चित्र के बारे में लिखें——————————————————————लिखें ?

ब) महिला –

स) पुरूष

समानता के साथी ने चित्रों को देखने के बाद तय किया कि क्या काम किया जा रहा है, और काम करने वाला कौन है। अपने विचार लिख कर दर्ज किये, समानता के साथी का धन्यवाद।

अब समानता के साथी नीचे दिये गये प्रश्नों के बारे में लिखें ?

1. उपरोक्त चित्रों के माध्यम से आपने कैसे तय किया कि ये काम महिला कर रही है और ये काम पुरूष कर रहा है ।संक्षिप्त वाक्यों में लिखें ?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

(आपने जेंडर आधारित काम के विभाजन पर अपने विचार लिखे कि किस तरह कामों का विभाजन किया है। जवाब लिखने के लिए आपका धन्यवाद ।)

2. क्या आप बता पायेंगे कि उपरोक्त कामों में ऐसे कौन से काम हैं जिन्हें महिला पुरूष दोनों कर सकते हैं। संक्षिप्त वाक्यों में लिखें ?

————————————————————————————————————

————————————————————————————————————

(आपने जेंडर आधारित काम के विभाजन पर अपने विचार लिखे। आपका धन्यवाद। आगे पढ़ें क्या है जेंडर आधारित काम का विभाजन ।)

जेंडर आधारित काम का विभाजन क्या है?

हमारे समाज में जेंडर आधारित कामों का विभाजन इस तरह किया गया है कि महिलाओं

को ज्यादातर काम दूसरों की सेवा करना, बच्चों का लालन पालन या ऐसे काम जो उबाऊ होते हैं। वहीं पुरूष उन कामों को करते हैं जिनमें एक समाजिक पहचान बनती है, घर बाहर के काम होते हैं जिसमें पैंसों का लेन देन होता है। उन कामों में पुरूषों की जानकारी व कौशल बढ़ता है। जेंडर आधारित काम के विभाजन में यह सोच भी डाली गई है कि महिलाएं कठोर काम नहीं कर सकती हैं उन्हें हल्के काम दिये जाने चाहिए, उन्हें पहले से ही कमजोर माना जाता है। इन कामों को हम इस प्रकार समझ सकते हैं जैसे–

घर में रंग वानिश का काम– पुरूष।	घर में लिपाई पुताई काम–महिला।
घर में टीवी फ्रिज की खरीददारी का काम– पुरूष।	घर में टीवी फ्रिज की साफ सफाई का काम– महिला।
छत के जाले साफ करना– पुरूष।	घर में झाड़ू पोछा– महिला।
सोफे में खुल कर पॉव फैलाकर कर बैठना–पुरूष।	सोफे में सुकुड़ के बैठना–महिला।
बैठने का अन्दाज– ठेले में खड़े होकर सब्जी का दुकानदार– पुरूष।	बैठने का अन्दाज जमीन में बैठकर सब्जी की दुकानदार– महिला।
खड़े होकर किचन में खाना बनाता– पुरूष।	फर्श में बैठकर किचन में खाना बनाती– महिला।
ढ़ोल बजाता– पुरूष	डांस करती है– महिला
दिवार में टके शीशे पर बाल बनाता– पुरूष	घुटने में शीशा रखे बाल बनाती– महिला
कन्धे में या हाथ में लटकाए पानी की बाल्टी लाता– पुरूष।	बगल में दबाये पानी की गागर लाती– महिला।
बन्दूक से खेलता लड़का	गुड़िया से खेलती– लड़की।
कम्पयूटर लैपटॉप की सफाई करता– पुरूष।	बर्तन साफ करती– महिला।
कन्धें में बिठाकर बच्चे को टहलाता– पुरूष।	बच्चों को नहलाते या कपड़ा पहनाते महिला।
खेत में हल या टैक्टर चलाता– पुरूष।	खेत में गोबर डालना या रोपाई – महिला।
बाजार में अनाज बेचता– पुरूष।	खेत आनाज काटती समेटी– महिला।
गॉव या खेत में झगडे का फैसला करता– पुरूष।	गॉव या खेत में घास चारा के काम में मदद करती– महिला।
बीन बजाकर सांप नचाता– पुरूष।	दूर से सिर में आधा पल्लू किये सांप का नाच देखती– महिला।
आफिस में ऑडर देता– पुरूष।	कम्पयूटर पर काम करती– महिला।
जहाज उड़ाता– पुरूष।	जहाज में सवारियों को पानी देती– महिला।
टेबल पर खाना खाते– पुरूष।	घर में टेबल पर खाना खिलाती– महिला।
घर में मिक्सी ठीक करता– पुरूष।	घर में गैस साफ करती – महिला।
खेत में कीटनाशक दवा छिड़कता– पुरूष।	खेत में फसल की निराई करती– महिला।

समानता के साथी ने जेंडर आधारित काम के विभाजन अभ्यास में सक्रिय भागीदारी की समानता के साथी का धन्यवाद। आगे जानें कि जेंडर आधारित काम का विभाजन एक भेदभावपूर्ण सुनियोजित व्यवस्था है। जिसे बदलना जरूरी है।

जेंडर आधारित काम का विभाजन व भेदभाव–

महिला पुरूष के कामों के विभाजन से साफ होता है कि यह विभाजन भेदभाव पूर्ण है। इसमें महिलाओं को कमजोर व संशय से देखा जाता है। उन पर किसी काम को पूर्ण कर पायेंगी संदेह किया जाता है। जिसके कारण महिलाओं व लड़कियों को घर से बाहर के जानकारी व कौशल आधारित कामों से रोका जाता है। उन्हें घर के अन्दर संकुचित दायरे के आधार पर काम करने दिया जाता है। यह भी देखा जाता है कि महिलाओं को पैंसों के लेन देन में भी कमजोर समझा जाता है। इसलिए पैसों के निर्णय से जुड़े कामों से भी रोका जाता है।

समानता के साथी यदि जेंडर आधारित कामों के विभाजन को तोड़कर नये मानक तय करते हैं जैसे– कोई भी काम महिला पुरूष के आधार पर न बंटा हो। महिलाओं व लड़कियों को जानकारी आधारित, तकनीक आधारित, कौशल आधारित व आर्थिक निर्णयों के कामों में शामिल किया जाय व पुरूष घर के अन्दर के कामों में अपनी भूमिकाएं बनायें जिससे कि महिलाओं व लड़कियों को घर से बाहर जाने के मौके मिल पायेंगे।

समानता के साथी नीचे दिये गये चित्रों के बारे में जरा सोचें क्या ये बदलाव नहीं

समानता साथी– जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें

समानता के साथी जेंडर आधारित कामों के विभाजन में बदलाव के लिए क्या कर सकते हैं।नीचे दिये गये (अ)व (ब) खाने में अपने बदलाव की बातें लिखें व (स) नीचे दिये गये बाक्स में उन चुनौतियों व दिक्कतों के बारे में लिखें जब उन्होने कभी अपने जीवन में जेंडर आधारित कामों के विभाजन को तोड़ा।

(अ)घर के अन्दर के कामों में, जेंडर आधारित कामों के विभाजनों को बदलने में क्या करेंगे ?

.....
.....
.....
.....

(ब)घर के बाहर के कामों मे, जेंडर आधारित कामों के विभाजनों को बदलने में क्या करेंगे ?

.....
.....
.....

(स)

1. जेंडर आधारित काम के विभाजन को तोड़ने में कौन–कौन सी चुनौतियां या समस्याएं आई लिखें
   _____
   _____

समानता के साथी अगला अभ्यास (ब) में जाकर देखें कि समता व समानता क्या है। हमारे समाज में किस तरह सत्ता सम्बंध काम करते हैं आओ जानें।

(ब) समता समानता

सामाजिक धारणा–अब तो समाज में बहुत समानता आ गई है। गैर बराबरी तो मात्र कहने के बराबर है ये सब पहले की बातें हैं।

समानता के साथी समता समानता के अर्न्तगत सबसे पहले जानें कि सामजिक सत्ता सम्बंध हमारे समाज में किस तरह कार्य करता है उसका प्रभाव किसके उपर ज्यादा पड़ता है। जो लोग सत्ताहीन हो जाते हैं वो कौन हैं। आओ जानें गतिविधि 01 में सामाजिक सत्ता सम्बंध क्या है ?

समता समानता गतिविधि–01

नीचे आपको पॉच चित्रों की पहचान के बारे में जानना है। उनमें से आपको एक पहचान दी जा रही है। आप 10 वीं में पढ़ने वाली दलित गरीब घर की लड़की हो। कल्पना करें कि आप पॉच लोग गॉव के एक ही स्कूल में पढ़ रहे हो। इन पॉचों में आप 10 वीं में पढ़ने वाली दलित गरीब लड़की हैं बाकि चारों में एक सामान्य जाति वाला सरपंच का बेटा, एक निरक्षर मजदूर का बेटा, एक गॉव में रहने वाला सेठ का बेटा और एक स्कूल में चपरासी की नौकरी करने वाले की बेटी है। अब इन पहचानों के बारे में आपको विचार करना है कि सब की सामाजिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि अलग–अलग है। आप पॉचों 10 वीं की पढ़ाई के बाद अब 35 साल के हो गये हो। आप पॉचों को नीचे 8 परिस्थितियां बताई जा रही हैं। देखते कि हैं कि कौन किस स्थिति में आगे बढ़ता है और कौन पीछे रहता है। 8 परिस्थितियां चित्रों के नीचे लिखी गई हैं उन्हें पढ़ें और दिये गये निर्देशों के साथ उन्हें भरें –

(अ) 10 वीं में पढ़ने वाला सामान्य जाति सरपंच का बेटा

(ब) 10 वीं में पढ़ने वाला निरक्षर मजदूर का बेटा

(स) 10 वीं में पढ़ने वाली दलित गरीब लड़की

(द)10 वीं में पढ़ने वाला गॉव का सेठ का बेटा

(र) 10 वीं में पढ़ने वाली स्कूल में चपरासी की बेटी

समानता के साथी गोल घेरे में अपनी समझ के आधार पर कम संख्या भरें–

नीचे दिये गये स्टेटमेंट के आधार पर क्रम संख्या 1 से 8 तक सभी को भरना जरूरी है। यदि वह पहचान रखने वाले व्यक्ति उस काम को कर सकते हैं तो उसे आगे के क्रम में गोल घेरे में संख्या डालनी है यदि नहीं कर सकते हैं तो पीछे के क्रम में गोल घेरे में क्रम संख्या की जगह जीरो 0 संख्या डालनी है।

1.आपने 10 वीं पास कर लिया है अब आप शहर के एक अच्छे स्कूल में दाखिला ले रहे हैं, जो पढ़ सकते हैं आगे के क्रम के गोले में 1 लिखें जो नहीं पढ़ सकते वो पीछे के क्रम के गोले में 0 लिखें।

2. अब आप में से कालेज की पढ़ाई पूरी कर नौकरी के लिए कोर्स कर रहे हैं, जो कर सकते हैं आगे के क्रम के गोले में 2 लिखें, जो नहीं कर सकते वो पीछे के क्रम के गोले में 0 लिखें।

3.आपका रिश्तेदार आप से दस हजार रूपीये उधार मांग रहा है आपको पता है आपको अपने घर से इजाज़त लेने की जरूरत नहीं है तो आगे के क्रम के गोले में 3 लिखें, जो अपने मन से नहीं दे सकते हैं वो पीछे के क्रम के गोले में 0 लिखें।

4.गॉव के मन्दिर में कथा हो रही है, आप वहां जाकर सबके साथ बैठकर भोजन खा सकते हैं तो आगे के क्रम के गोले में 4 लिखें, जो सबके साथ बैठकर नहीं खा सकते हैं वो पीछे के क्रम के गोले में 0लिखें।

5.आपके घर में खाने के जूठे बर्तन पड़े हैं आपकी तबियत कुछ ठीक नहीं है, आपको बर्तन धोने की कोई जरूरत नहीं तो आगे के क्रम के गोले में 5 लिखें, जिनको लगता है धोने तो मुझे हीं पड़ेंगे वो पीछे के क्रम के गोले में 0 लिखें।

6.आप 35 साल के हो चुके हो, आज आपके पास बढ़िया नौकरी है, खूब पैसा है इलाके में मान सम्मान है, जिसके पास ये सब है वो आगे के क्रम के गोले में 6 लिखें, जिसे मालूम है मुझे नहीं बुलाया जायेगा वो पीछे के क्रम के गोले पर 0 लिखें।

7.आपको किसी शहर में रात हो गई है, यदि आप अकेले होटल में ठहर सकते हैं तो आगे के क्रम के गोले में 7 लिखें, जिसे मालूम है मैं नहीं ठहर सकता/सकती वो पीछे के क्रम के गोले पर 0 लिखें।

8.आपके प्रजनन अंगों में दाने निकले हैं, आपको डॉक्टर को जाकर दिखाना है। आप घर में बिना पूछे डॉक्टर को दिखा सकते हैं तो आगे के क्रम के गोले में 8 लिखें, जिन्हें घर से इजाजत लेनी पड़ेगी वो पीछे के क्रम के गोले पर 0 लिखें।

क्रम संख्या भरने के लिए लोगों की पहचान इस प्रकार है–

(अ) 10 वीं में पढ़ने वाला सामान्य जाति सरपंच का बेटा – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (पीछे की ओर) (आगे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
(ब) 10 वीं में पढ़ने वाला निरक्षर मजदूर का बेटा – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (पीछे की ओर) (आगे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
(स) 10 वीं में पढ़ने वाली दलित गरीब लड़की – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (पीछे की ओर) (आगे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
(द) 10 वीं में पढ़ने वाला गॉव का सेठ का बेटा – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (पीछे की ओर) (आगे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
(र) 10 वीं में पढ़ने वाली स्कूल में चपरासी की बेटी – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (पीछे की ओर) (आगे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०

समानता के साथी ने इस अभ्यास में अपने जीवन के जुड़े अनुभवों से भाग लिया। साथी का धन्यवाद। आगे और गहराई से जानें कि सत्ता सम्बंध क्या है ?

सामाजिक सत्ता सम्बंध–

प्रायः हमारे समाज में सत्ता सम्बंधों का बड़ा प्रभाव होता है जिसके फलरूवरूप कुछ लोग सत्तावान हो जाते हैं तथा कुछ लोग सत्ताहीन हो जाते हैं हमारे समाज में सत्ता मुख्य रूप से निम्न प्रकार देखाई देती है जाति के आधार पर सत्ता, धर्म के आधार पर सत्ता, शिक्षा के आधार पर सत्ता,पद के आधार पर, लिंग के आधार पर सत्ता, भाषा के आधार पर सत्ता, आर्थिक आधार पर सत्ता आदि अभ्यास में जो परिस्थितियां दी गई थी उनको करने में जो सक्ष्म या सत्तावान थे वो आगे बढ़ रहे थे। जैसे–

आगे बढ़ने वाले लोग –

सामान्य जाति वाले, उँचे पद वाले, ज्यादा पैंसे वाले, पढ़े लिखे लोग, बहु संख्यक लोग, पुरूष

पीछे जाने वाले लोग –

महिलाएं, गरीब दलित / पिछड़े, मजदूर, निरक्षर, अप्रवासी लोग आदि

अतः सत्ता सम्बंधों में समानता लाने के लिए समाज में जिनकी सामाजिक पृष्ठभूमि कमजोर बनाई गई है उन्हें अधिक अवसर देने होंगे व उनके अनुकूल कायदे कानून बनने में व सामाजिक फैसलों में सहयोग करना जरूरी है। सामाजिक सत्ता सम्बंध प्रायः एक जैसे भी नहीं रहते हैं, ये परिस्थिति अनुसार बदलते रहते हैं। कभी सत्तावान सत्ताहीन भी हो जाते हैं। जैसे पुरूष घर में महिलाओं व बच्चों पर सत्तावान बने रहते हैं लेकिन जब वही पुरूष बाहर अपने काम में जाते हैं अपने बॉस के आगे सत्ताहीन हो जाते हैं, अतः

सत्ता सम्बंध बदलते रहते हैं।

समानता साथी गतिविधि– 02 में जानें कि समता समानता में क्या अन्तर है।

समता समानता गतिविधि– 02

समानता के साथी बता पायेंगे कि समता समानता में क्या अन्तर है। हमें समता समानता को समझना क्यों जरूरी है। एक कहानी है जो इस प्रकार है कि –

कहानी

एक परिवार जिसमें पति पत्थर तोड़ने की मजदूरी का काम करता है। गर्भवती पत्नी है और एक बच्चा है, जो कि 15 साल का है। उनके पास 12 रोटियां हैं। आपको अपनी समझ के आधार पर बंटवारा करना है किसके हिस्से कितनी रोटीयां बांटोगे जो कि समता समानता आधारित बटवारा हो ?

समानता के साथी किसके हिस्से कितनी रोटी देना चाहेंगे, नीचे रोटीयों की संख्या भरें –

- पति के हिस्से की रोटी ––– संख्या लिखनी है ?
- पत्नी के हिस्से की रोटी ––––– संख्या लिखनी है ?
- बच्चे के हिस्से की रोटी ––––– संख्या लिखनी है ?

कहानी में आपके द्वारा समता समानता के बारे में दिये विचारों के लिए धन्यवाद। नीचे एक कहानी और दी गई है जिससे स्पष्ट हो पायेगा कि समता समानता में क्या अन्तर है।

समता क्या है ?

समानता आधारित बंटवारा समान बटवारा करके आसानी से बंटवारा किया जाता है जो कि बाहर से अच्छा लगता है लेकिन इसके परिणाम असमान होते हैं, जैसे–

एक व्यक्ति है राम जिसके पास हैं 50 रू.। हमने उसे फिर 50 रू. दिये और एक दूसरा व्यक्ति है श्याम जिसके पास हैं 10 रू.। उसे भी हमने 50 रू. दिये यह समानता आधारित बटवारा है। लेकिन इसके परिणाम असमान निकले, जैसे –

राम के पास हो गये – 50 +50=100

श्याम के पास हो गये 10+50 =60

अब समता आधारित बंटवारा करना चाहते हैं तो हमें राम को 10 रू. व श्याम को 50 रू. देना होगा जो परिणामों में समानता लायेगा, जैसे –

राम के पास हो गये – 50 +10=60

श्याम के पास हो गये 10+50 =60

जबकि हमारे समाज में ज्यादातर समानता आधारित बंटवारा किया जाता है जो कि गलत है आपने समाजिक सत्ता सम्बंधों में समझा कि हमारे समाज में लोगों की अलग–अलग पृष्ठभमि है, उनकी जरूरतें व आवश्यकताएं अलग–अलग हैं। अतः बंटवारा भी उन्हीं आधारों पर किया जाना चाहिए समाज में सत्ताहीन को सत्तावान या समानता में लाने के लिए उसे बंटवारे में अधिकतम हिस्सा यानि कि जो पहले से संसाधन सम्पन्न है उसे कम हिस्सा देना निहित है जिसे हम सकारात्मक पहल भी कह सकते हैं। इससे कमजोर लोग

भी मूलधारा के साथ जुड़ सकें।

समता समानता को और स्पष्ट समझने के लिए, सारस और लोमड़ी की कहानी पढ़ें।

एक समय की बात है। एक सारस और एक लोमड़ी थी। दोनों आपस में दोस्त थे तथा दोनों का एक दूसरे के घर आना जाना होता था। एक दिन लोमड़ी ने सारस को अपने घर बुलाया तथा मजाक में कुछ खाना नहीं दिया बल्कि एक छिछले थाली में सूप परस दिया। लोमड़ी आसानी से जीभ से सूप चाट सकती थी, किन्तु सारस अपनी लम्बी चोंच से केवल भिंगो सकता था। वह भखूे होते हुए भी भोजन छोड़ दिया। लोमडी ने कहा माफ करना सूप तुम्हारे पसन्द का नहीं है। सारस ने कहा, कोई माफी मांगने की जरूरत नहीं है। मैं आशा करता हूँ कि एक दिन तुम मेरे घर डिनर पर आओगी। जब लोमडी दूसरी बार सारस के घर गयी तो सारस ने एक बहुत ऊंचे तथा बहुत सकरे मुंह वाले बर्तन में खाना परोसा। सारस उसमें चोंच डाल सकता था किन्तु लोमडी नहीं। अतः बर्तन के बाहर सारस के चोंच से जो गिर जाता उसी को चाट कर लोमड़ी को काम चलाना पड़ा। सारस ने कहा मैं डिनर के लिये मॉफी नही मांगूगा। जो जैसा करता है वैसा ही पाने का हक रखता है।

समानता के साथी,सारस लोमड़ी की कहानी से समझ गये होंगे कि समता व समानता में क्या अन्तर है। कैसे लागों की पृष्ठभूमि, जरूरत व आवश्यकताओं को ध्यान में न रखकर किया गया बंटवारा, परिणामों में किस तरह की असमानता लाता है, जो कि आपको कहानी से पता चला।

समानता के साथी ने समता समानता पर जानकारी व समझ बढ़ाई। साथी का धन्यवाद।

समानता के साथी – जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

1. आप अपने स्तर से समता आधारित बटवारा हो इसके लिए क्या कर सकते हैं लिखें ? _____ _____	2. यदि आपने कोई समता आधारित बटवारा या न्याय करने का काम किया है तो किस तरह की चुनौतिया आई लिखें ? _____ _____

उत्तर माला – समता समानता
लोगों की पहचान – **(अ)** 10 वीं में पढ़ने वाला सामान्य जाति सरपंच का बेटा –(पीछे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० (आगे की ओर) 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, **(ब)** 10 वीं में पढ़ने वाला निरक्षर मजदूर का बेटा – (पीछे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० (आगे की ओर) **(स)** 10 वीं में पढ़ने वाली दलित गरीब लड़की – (पीछे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० (आगे की ओर) **(द)** 10 वीं में पढ़ने वाला गॉव का सेठ का बेटा – (पीछे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० (आगे की ओर) 1, 2, 4, 5, 6, 7, 8, **(र)** 10 वीं में पढ़ने वाली स्कूल में चपरासी की बेटी – (पीछे की ओर) ० ० ० ० ० ० ० ० ० (आगे की ओर)

अब समानता के साथी अगला अभ्यास– 04 में जानें कि हमारे समाज ने महिलाओं व पुरूषों को कौन–कौन सी सुविधाएं दी हैं और कौन–कौन से प्रतिबंध लगाये हैं। आओ जानें।

4. सुविधा एवं प्रतिबंध

सामाजिक धारणा–समाज में लड़कियों व महिलाओं को बहुत सारी सुविधाएं हैं, आजकल कहां प्रतिबंध हैं। सब को खुल्लम खुल्ला छूट है, ये सब मनगढ़ंत बातें हैं।

समानता के साथी इस अभ्यास में यह समझ पायेंगे कि हमारे समाज में महिलाओं के लिए कौन–कौन सी सुविधाएं हैं और उन पर कौन–कौन से प्रतिबंध लगाये हैं। तथा पुरूषों को कौन–कौन सी सुविधाएं दी हैं और कौन–कौन से प्रतिबंध लगायें हैं। समानता के साथीयों को यह समझना जरूरी इसलिए है कि जब किसी एक पर ज्यादा प्रतिबंध लगाये जाते हैं तो उसे समाज में बराबरी के मौके नहीं मिल पाते हैं। वह परिदन्य हो जाता है। आओ जानें गतिविधि 01 में सुविधा एवं प्रतिबंध क्या है ?

सुविधा एवं प्रतिबंध गतिविधिः 01

समानता के साथी नीचे दिये गये बॉक्स पर सही का निशान लगायें –✓

सुविधा एवं प्रतिबंध	(अ)महिला		(ब)पुरूष	
	(स)सुविधा	(द)प्रतिबंध	(र)सुविधा	(ल)प्रतिबंध
1.शादी का निर्णय लेना।				
2.सबके सामने खुलकर बोलना।				
3.बाहर आने जाने की आजादी ।				
4.सबके सामने रोना।				
5.अपनी कमजोरी को सबको बताना।				
6.अपनी पसन्द के कपड़े पहनना।				
7.घर बाहर के निर्णय लेना।				
8.सजने संवरने की छूट।				
9.अपनी पसन्द की शादी करना।				
10.सबके के सामने नजर मिलाकर बात करना।				
11.अपनी मर्जी से पैसे खर्च करना।				
12.अपनी मर्जी से खरीददारी करना।				
13.खुद की मर्जी से जमीन मकान के सौदे				
14.अपने शरीर को ताकतवर बनाये रखना।				
15.अपने मन पसन्द के दोस्त बनाना।				
16.अपनी पसन्द से बाल बढ़ाना				
17.मांग में सिन्दूर भरना या श्रंगार करना।				

18.तेज आवाज में बात करना।				
19.बच्चों की पढ़ाई का निर्णय करना।				
20.अपनी पढ़ाई पूरी करने की इजाजत।				
21. घर से बाहर अपनी पसन्द का काम करना।				
22. अपनी मर्जी का व्यापार करना।				
23. शव यात्रा में जाना।				
24. वंश चलाने वाला उतराधिकारी बनाना।				
25. सामाजिक फैसलों में शामिल होना।				

समानता के साथी ने अपनी समझ के आधार पर खानों में टिक यानि सही का निशान लगाया इसके लिए साथी का धन्यवाद। आगे जानें कि सामाकि रूप से महिला व पुरूष को दी जाने वाली सुविधा एवं प्रतिबंधों को समझना जरूरी क्यों है।

आओ जानें कि सुविधा एवं प्रतिबंधोंको समझना जरूरी क्यों?

हमारे समाज में महिलाओं के उपर बहुत सारे प्रतिबंध हैं जबकि पुरूषों को बहुत सारी सुविधाएं दी गई हैं कभी–कभी महिलाओं को जो काम की जिम्मेदारी दी गई है हमें वो सुविधा के रूप में नजर आती है। जबकि वह सुविधा नहीं है। कभी–कभी महिलाएं भी उन्हें सुविधा के रूप में देखने लगती हैं। जैसे महिलाएं कहती हैं हमें मांग में सिन्दूर भरने की सुविधा है या पॉव में बिच्छू पहनने की सुविधा है जो कि पुरूषों के लिए नहीं है। पुरूषों पर जरूर प्रतिबंध है। परन्तु महिलाओं के लिए भी सुविधा नहीं क्योंकि जब महिलाओं की इच्छा नहीं होती है आज मांग में सिन्दूर नहीं भरना है या पॉव में बिच्छू नहीं पहनना है लेकिन वो ऐसा नहीं कर सकती हैं। उन्हें ये सब करना ही है, ये कैसे सुविधा हो सकती है जबकि सुविधा का मतलब है कि मैं जब चाहूँ करूँ या जब चाहूँ ना करूँ। समाज में सुविधा प्रतिबंध भी इस तरह के बने हैं, जो महिलाओं पर प्रतिबंध हैं वो ही पुरूषों को सुविधा है। जेंडर आधारित सामाजिक व्यवस्था में यह भी समझना जरूरी है कि जहां एक ओर पुरूषों को बहुत सारी सुविधाएं दी हैं उन्हीं सुविधाओं में पुरूषों को बहुत सारे जोखिम भी हैं जैसे –

- महिलाओं को घर बाहर घूमने की मनाही है।
- पुरूष जब चाहे घर बाहर घूम सकते हैं।
- महिलाएं अपने मन से खुद निर्णय नहीं ले सकती हैं।
- पुरूष सारे निर्णय ले सकते हैं।
- पुरूषों को सबके सामने रोना नहीं है।
- महिलाएं कहीं भी रो सकती हैं।

समानता के साथी गतिविधि– 02 में जाकर देखें कि सुविधा एवं प्रतिबंधों का महिलाओं व पुरूषों पर क्या असर पड़ता है।

सुविधा एवं प्रतिबंध गतिविधी–02

सुविधा एवं प्रतिबंधों के कारण महिलाओं व पुरूषों पर पड़ने वाले असर परिणाम–

समानता के साथी इस अभ्यास में यह समझ पायेंगे कि हमारे समाज में महिलाओं व पुरूषों पर जो प्रतिबंध लगायें गये हैं या सुविधाएं दी गई हैं उनका दोनों पर क्या असर पड़ रहा है आप नीचे दिये गये वाक्यों के आगे सहमत व असहमत पर अपनी राय यानि कि वहां पर सही का निशान लगायें –

जो इस प्रकार हैं पहली राय–

सामाजिक धारणा	सहमत	असहमत
1. समाज में महिलाओं व पुरूषों को बराबर सुविधाएं है		
2. समाज में महिलाओं व पुरूषों पर बराबर प्रतिबंध हैं		
3. अब तो ज़माना बदल गया है, किसी पर कोई प्रतिबंध नहीं है		
4. अब तो महिलाओं को पुरूषों से ज्यादा सुविधाएं मिली हैं		
5. महिला पुरूष के लिए सुविधा एवं प्रतिबंध सामाजिक मानक हैं जो कि सही हैं		

पहली राय में सहमति व असहमति पर आपके विचार आये। आपका धन्यवाद। अब आप नीचे दिये गये परिणामों पर अपनी दूसरी राय सहमत व असहमत में व्यक्त करें कि सुविधा एवं प्रतिबंधों के कारण क्या परिणाम निकलते हैं, सही का निशान लगायें– ✓

आओ जानें–

	परिणाम	सहमत	असहमत
1.	महिलाएं कमजोर होने लगती हैं।		
2.	पुरूष ताकतवर व सक्षम बनते हैं।		
3.	महिलाओं में झिझक व दब्बूपन आने लगता है।		
4.	पुरूष नेतृत्वशील भूमिकाओं में आने लगते हैं।		
5.	संसाधनों में पुरूषों का कब्जा होता हैं		
6.	महिलाएं सत्ताहीन हो जाती हैं।		
7.	पुरूष सत्तवान बनते हैं।		
8.	महिलाओं की दूसरों पर निर्भरता बढ़ने लगती हैं।		
9.	महिलाएं अपने बारे में कुछ नहीं सोच पाती हैं।		
10.	महिलाएं शोषण हिंसा की शिकार होने लगती हैं।		
11.	पुरूषों की रक्षक के रूप में पहचान बनती है।		

समानता के साथी ने परिणामों पर दूसरी राय व्यक्त की। साथी का धन्यवाद। अब आप आगे जानें कि सामाजिक रूप से पुरूषों को दी जाने वाली सुविधाओं के कारण पुरूषों को किस तरह के तनाव हैं, आओ जानें।

सामाजिक रूप से पुरूषों को दी जाने वाली सुविधाएं एवं पुरूषों के तनाव

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि सामाजिक समानता लाने के लिए पुरूषों को अपनी सुविधाएं छोड़नी होंगी जिससे कि महिला पुरूष में बराबरी के रिश्ते बन पायें, महिलाएं भी घर बाहर के निर्णय ले सकें। महिलाओं को काम रोजगार के अवसर मिल पायें। महिलाओं को उनकी मर्जी के अनुकूल जॉब करने की छूट हो। जिससे महिलाएं भी आत्मनिर्भर बन सकें।

- पुरूष को अपने आप को हमेशा समाज में अव्वल साबित करना है जबकि ऐसा नहीं हो सकता।
- पुरूष को हमेशा हर काम में जीत हासिल करना जरूरी है जबकि ऐसा नहीं हो सकता।
- पुरूष को अपनी कमजोरी नहीं बतानी जबकि पुरूष भी कमजोर होते हैं।
- पुरूषों को कमाने का दबाव है जबकि हर पुरूष कमाने में सक्षम हो ऐसा नहीं हो सकता।
- पुरूषों को शरीर से ताकतवर होना है जबकि सारे पुरूष ताकतवर नहीं होते।

चित्र (अ) क्या हमारे आस पास इस तरह लड़कियों को खेलने की सुविधाएं मिल पाती हैं?

हां– ?

नहीं – ?

लिखें .....

.....

.....

.....?

चित्र (ब) क्या हमारे आस पास लड़कों व पुरूषों पर कोई काम को लेकर प्रतिबंध है कि उन्हें कौन सा काम नहीं करना है ?

हां–?

नहीं –?

कौन सा नहीं करना है लिखें.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

गतिविधि में भाग लेने के लिए व अपने विचार लिखने के लिए समानता के साथी का धन्यवाद। अब समानता के साथी अपनी योजना बनाएं कि सामाजिक रूप से दी गई सुविधा एवं प्रतिबंधों में बदलाव के लिए वो अपने स्तर से क्या कर सकते हैं

समानता के साथी–जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें

समानता के साथी – महिलाओं व लड़कियों पर लगने वाले प्रतिबंधों को रोकने के लिए अपने घर में क्या करेंगे लिखें _____ _____	समानता के साथी ने यदि कभी सुविधा एवं प्रतिबंधों को तोड़ने की पहल की तो किस तरह की चुनौतियां आई। लिखें _____ _____

उत्तरमाला – सुविधा एवं प्रतिबंध

आपके सही जवाब सुविधा एवं प्रतिबंध गतिविधि 01

1. (अ) – द (ब) – र 2. (अ) – द (ब) – र 3. (अ) – द (ब) – र 4. (अ) – स (ब) – ल 5. (अ) – स (ब) – ल 6. (अ) – द (ब) – र 7. (अ) – द (ब) – र 8. (अ) – स (ब) – ल 9. (अ) – द (ब) – र 10. (अ) – द (ब) – र 11.(अ) – द (ब) – र 12. (अ) – द (ब) – र 13. (अ) – द (ब) – र 14. (अ) – द (ब) – र 15. (अ) – द (ब) – र 16. (अ) – द (ब) – र 17. (अ) – स (ब) – ल 18. (अ) – द (ब) – र 19 (अ) – द (ब) – र 20. (अ) – द (ब) – र 21. (अ) – द (ब) – र 22. (अ) – द (ब) – र 23. (अ) – द (ब) – र 24. (अ) – द (ब) – र 25. (अ) – द (ब) – र

आपके सही जवाब सुविधा एवं प्रतिबंध गतिवि धि 02 (पहली राय)

1 असहमत 2 असहमत 3 असहमत 4 असहमत 5 असहमत

आपके सही जवाब सुविधा एवं प्रतिबंध गतिविधि 02 (दुसरी राय)

1 सहमत, 2. सहमत, 3. सहमत, 4. सहमत, 5. सहमत, 6. सहमत, 7. सहमत, 8. सहमत, 9. सहमत, 10. सहमत, 11. सहमत,

समानता के साथी अभ्यास 05 में जाकर देखें कि संसाधनों तक नियंत्रण एवं पहुँच के बारे में किस तरह महिला एंव पुरूष के बीच में अन्तर या समानता दिखाई देती है। आओ जानें–

5.संसाधनों तक पहुँच एवं नियत्रंण

सामाजिक धारणा–आज तो महिला पुरूष दोनों की संसाधनों पर पहुँच भी है और नियंत्रण भी है,कोई किसी से कम नहीं है।

समानता के साथी इस अभ्यास में महिलाओं की संसाधनों तक कितनी पहुँच है व कितना नियंत्रण है जान पायेंगे समानता के साथी नीचे दिये गये तालिका पर अपनी राय अपनी समझ के आधार पर अंकित करेंगे। संसाधनों से हमारा मतलब है कि जो हमें घर या बाहर के लिए आवश्यक सामान होते हैं उन्हें लोग रखते हैं। पहुँच का मतलब है कि जब व्यक्ति उसे जानता है, उससे जुड़े काम करता है तथा नियंत्रण का मतलब है कि उस संसाधन को वह अपने तरीके से जब चाहे उपयोग कर सकता है या बेच सकता है। उस संसाधन में उसका स्वामित्व होता है वह नियंत्रण है।

आओ जानें गतिविधि 01 में संसाधनों में महिलाओं व पुरूषों का पहुँच व नियंत्रण किस तरह है ?

संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण गतिविधि– 01

समानता के साथियों को नीचे दिये गये बॉक्स पर (✓) सही का निशान लगाकर अपनी राय देनी है जो इस प्रकार है–

क्र. सं.	संसाधन की पहचान	(अ) महिलाओं की पहुँच		(ब) महिलाओं का नियंत्रण		(स) पुरूषों की पहुँच		(द) पुरूषों का नियंत्रण	
		कम	ज्यादा	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा
1	साईकल/मोटरसाईकल								
2	टीवी/फ्रिज								
3	मकान								
4	खेती की जमीन								
5	घर के बर्तन								

6	गहने								
7	कपड़े								
8	भैंस								
9	बकरी								
10	खाद / बीज								
11	पैंसा								
12	मुर्गी								
13	हैण्डपम्प								
14	नकद पैसा								
15	दुकान / फैक्ट्री								
16	बाग बगीचे								
17	अनाज / फसल								
18	फर्नीचर								
19	गैस चूल्हा								
20	मोबाईल								
संसाधनों की कुल संख्या– 20		कुल निशान कम सं.– ज्यादा सं.–		कुल निशान कम सं.– ज्यादा सं.–		कुल निशान कम सं.– ज्यादा सं.–		कुल निशान कम सं.– ज्यादा सं.–	

समानता के साथी ने अपने अनुभवों के आधार टेबल में संसाधनों पर किसका नियंत्रण व पहुँच ज्यादा कम है लिखकर दर्शाया। समानता के साथी का धन्यवाद। अगले भाग में जानें कि संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण को समझना जरूरी क्यों है।

संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण को समझना

समाज में घर व घर के बाहर संसाधनों में महिलाओं की पहुँच लगभग पुरूषों के बराबर है लेकिन संसाधनों में नियंत्रण अधिकतम पुरूषों का है जो कि गलत है। यह भेदभाव है । हमारे समाज में यह अक्सर कहा जाता है कि घर व घर के बाहर तमाम संसाधनों में महिला पुरूष दोनों की पहुँच बराबर है। कोई किसी से कम नहीं है और यह भी कहा जाता है कि संसाधनों में नियंत्रण भी बराबर है जबकि ऐसा नहीं है। आप अपने घर या अपने आस पास देखें कि संसाधनों में किसका नियंत्रण है और किसकी पहुँच है जैसे उदाहरण के लिए हमारे घर में एक मोटरसाईकल खरीदनी है। बताओ कौन तय करता है? स्वभाविक है कि घर के पुरूष तय करते हैं चाहें पति हो, पिता हो, भाई हो, ससुर हो या कोई भी घर का पुरूष वो तय करते हैं कि कौन सी कम्पनी की खरीदनी है कितने तक की खरीदनी है, यह है उस संसाधन में नियंत्रण या ये भी कह सकते हैं कि कौन मोटर साईकल चलायेगा। दूसरी तरफ है पहुँच जिसमें आप देखेंगे कि घर में महिलाएं दिन भर घर में खड़ी मोटरसाईकल की देखभाल करती हैं। कुछ महिलाएं यां लड़किया आज मोटरसाईकल चला भी लेती हैं ये है उस संसाधन तक पहुँच। संसाधनों में महिलाओं का नियंत्रण न होने के कारण महिलाओं को संसाधनों की महत्वपूर्ण जानकारी नहीं हो पाती है। महिलाएं संसाधनों के बारे में सही निर्णय ले पाने में घबराती हैं। संसाधनों में नियंत्रण

न होने के कारण महिलाओं के नेतृत्वशीलता पर असर पड़ता है जो इस प्रकार है–

- जानकारी से वंचित हो जाती हैं।
- सही गलत पर निर्णय नहीं ले पाती।
- बाहरी जानकारी व ज्ञान से छूट जाती हैं।
- संसाधनों की खरीद फरोक्त में झिझक करने लगती हैं।
- अपना कौशल नहीं बढ़ा पाती हैं।
- महिलाओं के सीमित दायरे बनने लगते हैं।
- दूसरों पर निर्भरता बढ़ने लगती है आदि।

समानता के साथी गतिविधि 02 में जानें कि संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण में जेंडर मान्यताएं कैसे काम करती हैं, आओ जानें।

संसाधनों तक पहुँच व नियंत्रण से जुड़ी जेंडर मान्यताएं गतिविधि –02

समानता के साथी इस अभ्यास में अपनी राय व्यक्त करेंगे कि महिलाओं का सारे संसाधनों पर नियंत्रण होना ठीक नहीं है। और किस–किस तरह के संसाधनों में महिलाओं की पहुँच नहीं है। और कौन से संसाधन हैं जिनमें महिलाओं का नियंत्रण दिखता है। समानता के साथी सहमत व असहमत पर सही का निशान लगायें। आओ इस अन्तर को जानें–

क्रसं.	जेंडर मान्यताएं	सहमत	असहमत
1	महिलाओं का संसाधनों पर नियंत्रण होना जोखिम भरा है।		
2	महिलाओं का घर के छोटे संसाधनों में नियंत्रण हो ये ही उचित है।		
3	घर व घर के बाहर के बड़े कीमती संसाधनों में महिलाओं का नियंत्रण उचित नहीं।		
4	संसाधनों में पहुँच व नियंत्रण महिला पुरूष दोनों का होना समानता के लिए जरूरी है।		
5	महिलाएं भारी भरकम संसाधनों को संभाल नहीं सकती। इसलिए उनका नियंत्रण हो यह गलत है।		
6	संसाधनों पर पुरूषों का नियंत्रण होना पुरानी परम्परा है जो कि ठीक है।		

7	समाज ने महिलाओं के कुछ दायरे तय किये हैं, संसाधनों पर भी वही लागू होता है।		
8	महिलाएं कुदरती तौर पर पहले से कमजोर हैं, संसाधनों पर नियंत्रण करना उनके बस की बात नहीं है।		
9	संसाधनों पर पुरूषों का नियंत्रण होने से महिलाओं को कुछ फर्क नहीं पड़ता है।		
10	सभी पुरूष यह नहीं मानते कि संसाधनों पर महिलाओं का नियंत्रण होना गलत है।		

समानता के साथी ने अपने अनुभवों के आधार सहमत व असहमत पर अपने विचार व्यक्त किये। समानता के साथी का धन्यवाद। समानता के साथी आगे पढ़ें कि संसाधनों तक नियंत्रण व पहुँच में जेंडर मान्यताएं कैसे काम करती हैं।

और इसको जानना जरूरी क्यों है ?

संसाधनों पर पुरूषों का नियंत्रण कम हो इसके लिए समाज में बराबरी आये व समता मूलक समाज का निर्माण हो, महिलाएं भी आत्मनिर्भर बनें। महिलाओं को स्वालम्बी बनाने में पुरूष सहयोग की भूमिका में आयें। ये पहल करना जरूरी है। इस अभ्यास को समझने के उपरान्त यह देखने में आयेगा कि किस तरह हमारे समाज में महिलाओं के साथ संसाधनों में उनकी भागीदारी, पहुँच व निर्णय में भेदभाव किया गया है जो कि इस प्रकार दिखाई दे रहा है–

- सेवा, देखभाल व श्रम के में महिलाएं अधिक हैं जो कि भागीदारी के रूप में दिखाई दे रहा है।
- अब संसाधनों में यदि पहुँच को देखें तो महिलाओं की कम होती नजर आ रही है।
- जहां निर्णय का सवाल है वहां महिलाएं नजर नहीं आ रही हैं।
- निर्णय ही महत्वपूर्ण है उसी में महिलाएं गायब हैं जो कि सुनियोजित भेदभाव है।

इस अभ्यास के बाद समानता के साथी यह समझ पाये कि हमारे समाज में संसाधनों के निर्णय से महिलाओं को वंचित किया गया है जिसके परिणाम इस प्रकार दिखाई देते हैं– कि महिलाएं आत्मनिर्भर नहीं बन पाती, उनमें जानकारी व कौशल नहीं बढ़ पाता, उनकी भूमिकाएं सिर्फ श्रम तक सीमित होकर रह जाती हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि वो पुरूषों के नियंत्रण में आकर रह जाती हैं। जिसके कारण उनके साथ लगातार भेदभाव व हिंसा होती रहती है।

अतः समानता के साथियों को नये जेंडर समानता आधारित मानक बनाने होंगे जिसमें संसाधनों पर महिलाओं का नियंत्रण हो उन्हें किसी तरह की कोई रोक टोक न हो।

समानता के साथी– जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

समानता के साथी महिलाओं व लड़कियों का संसाधनों में नियंत्रण व पहुँच बढ़ाने के लिए क्या करेंगे लिखें ?

.....

.....

उत्तर माला– संसाधनों पर नियंत्रण व पहुँच

आपके सही जवाब संसाधनों पर नियंत्रण व पहुँच गतिविधि– 01

क्र. सं.	संसाधन की पहचान	(अ)महिलाओं की पहुँच		(ब)महिलाओं का नियंत्रण		(स)पुरूषों की पहुँच		(द)पुरूषों का नियंत्रण	
		कम	ज्यादा	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा
1	साईकल	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
2	टीवी/फ्रिज		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
3	मकान	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
4	खेती की जमीन		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
5	घर के बर्तन		ज्यादा	कम		कम			ज्यादा
6	गहने		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
7	कपड़े		ज्यादा	कम			ज्यादा	कम	
8	भैंस		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
9	बकरी		ज्यादा	कम			क्म		ज्यादा
10	खाद/बीज	कम		कम		कम			ज्यादा
11	पैसा	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
12	मुर्गी		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
13	हैण्डपम्प		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
14	नकद पैसा	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
15	दुकान/फैक्ट्री	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
16	बाग बगीचे	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
17	अनाज/फसल	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
18	फर्नीचर		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
19	गैस चूल्हा		ज्यादा	कम			ज्यादा		ज्यादा
20	मोबाईल	कम		कम			ज्यादा		ज्यादा
संसाधनों की कुल संख्या– 20		कुल निशान कम सं.–11 ज्यादा सं.– 09		कुल निशान कम सं.–18 ज्यादा सं. 02		कुल निशान कम सं.–04 ज्यादा सं.–16		कुल निशान कम सं.–02 ज्यादा सं.–18	

संसाधनों पर नियंत्रण व पहुँच गतिविधि : 02

1. असहमत 2. असहमत 3. असहमत 4. सहमत 5. असहमत 6. असहमत 7. असहमत 8. असहमत 9. असहमत 10. सहमत

अब समानता के साथी अभ्यास– 06 में जानें कि समान अवसर व भागीदारी क्या है, जानें–?

6.समान अवसर व भागीदारी

सामाजिक धारणा – कहां समान अवसर! आज के समय में सार्वजनिक स्थानों में पुरूषों से ज्यादा महिलाओं को समान अवसर मिले हैं व उनकी भागीदारी भी ज्यादा है।

इस अभ्यास में समानता के साथी सार्वजनिक स्थानों में महिला व पुरूषों को किस तरह के समान अवसर हैं व किस तरह की भागीदारी है गतिविधि 01 में जान पायेंगे।

समान अवसर व भागीदारी गतिविधि : 01

समानता के साथी नीचे दिये गये तालिका पर अपने समझ के आधार सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं व पुरूषों को किस तरह के समान अवसर हैं व भागीदरी किसकी है अपनी जानकारी व समझ के आधार पर कम व ज्यादा लिखकर अपनी राय दें।

समानता के साथी महिला व पुरूष की तालिका पर कम या ज्यादा लिखकर दर्ज करें।

सर्वाजनिक स्थानों के नाम	महिलाओं को समान अवसर व भागीदारी		पुरूषोंको समान अवसर व भागीदारी	
	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा
हैंण्ड पम्प/कुआ				
तलाब				
मन्दिर/मस्जिद/गुरूद्वारा				
चारागाह				
खेत				
कस्बे				
नुक्कड़				
चौराहा				
चौपाल				
खेल का मैदान				
बाजार				
गॉव पंचायत भवन				

सरकारी राशन की दुकान				
बैंक				
गैस गोदाम				
कोर्ट कचहरी				
थाना				
तहसील				
शमशान घाट				
चिकन/मटन षॉप				
डाकघर				
जंगल				
बीज खाद की दुकान				
सतसंग भवन				
सीनेमा घर				
सार्वजनिक स्थान संख्या–25	कुल–	कुल–	कुल–	कुल–

समानता के साथी ने अपने अनुभवों के आधार पर सार्वजनिक स्थानों में महिला पुरूष की समान भागीदारी व अवसरों को दर्शाया। सामानता के साथी का धन्यवाद। समानता के साथी नीचे दिये प्रश्न पर कुछ और सार्वजनिक स्थानों का विवरण लिखें फिर जानें कि समान अवसर व भागीदारी को जानना जरूरी क्यों है।

समानता के साथी और भी सोचें कहां–कहां पर महिलाओं व लड़कियों को समान अवसर व भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है, लिखें

.....

.....

.....

.....

.....

.....

आओ जानें कि समान अवसर एवं भागीदारी को जानना जरूरी क्यों है

समानता के साथी जान पायेंगे कि लड़कियों व महिलाओं को ज्यादातर घर के आस पास या सीमित दायरे की जगहें मिल पा रही हैं। या ऐसी जगह जहां सेवा से जुड़े काम हैं लेकिन लड़कों व पुरूषों के लिए कोई जगह ऐसी नहीं है जहां उनकी भागीदारी न हो या उन्हें रोका जा रहा हो। लेकिन महिलाओं व लड़कियों की भागीदारी नहीं दिखती है, जिन

कारणों से महिलाओं में जानकारी का आभाव रहता है व उनमें आत्मविश्वास नहीं बन पाता है जैसे–

बाज़ार–बाज़ार की परिकल्पना आती है तो दुकान में सामान बेचने वाले और खरीदने वाले ज्यादातर पुरूष ही नजर आते हैं। जहां पर महिलाएं नजर आती हैं वह ज्यादातर ब्यूटीपार्लर, लेडीज गारमेंन्टस, सब्जी की दुकान, कढ़ाई–बिनाई सेंटर, बच्चों के कपड़े खिलौने या टिफन सेंटर हैं। बाज़ार व्यवस्था में बेहतर जानकारी, शारीरिक श्रम व कुशल नेतृत्व की आवश्यकता को आधार माना गया है ताकि अधिक मुनाफा कमाया जा सके और इसके लिए महिलाओं को उपयुक्त नहीं माना जाता। बाज़ार में महिलाओं की उपस्थिति कम होने का दूसरा प्रमुख कारण होने वाली छेड़छाड़ व अन्य हिंसा की घटनाएं हैं जिससे परिवार के लोग उन्हें बाहर निकलने से रोकते हैं। इन कारणों से महिलाओं को बाज़ार व्यवस्था से जुड़े कामों को करने और सीखने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पाते।

कार्यस्थल –कार्यस्थलों में महिलाओं की सुरक्षा, उनकी निजिता व उनकी आवश्यक जरूरतों को नज़रअन्दाज़ किया जाता है। नियोक्ताओं तथा पुरूष सहकर्मी द्वारा भेदभाव व यौन शोषण की अनेक घटनाएं सुनने को मिलती हैं जिनकी वजह से उन्हें या तो

चुपचाप सहने के लिए विवश किया जाता है या नौकरी छोड़ने के लिए विवश होना पड़ता है। अगर कोई महिला इन घटनाओं का विरोध करती हैं तो उन्हें पर्याप्त मदद नहीं मिल पाती तथा उल्टा उन्हें ही दोषी ठहराया जाता है जो बहुत ही चिन्ता की बात है। आज जरूरत है कि कार्यस्थलों को महिलाओं के अनुकूल बनाया जाय तथा कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ कानून के बारे में महिलाओं और पुरूषों दोनों को जागरूक

किया जाय ताकि महिलाएं भी गरिमा और सम्मान के साथ काम कर सकें।

मनोरंजन स्थल–मनोरंजन स्थलों पर महिलाओं की पहुँच अभी भी बहुत कम है जिसका कारण यह है कि सार्वजनिक जगहों में पहले से ही पुरूषों का वर्चस्व रहा है। मनोरंजन कौन से होंगे, किसके द्वारा किये जायेंगें, किसकी छवि किस तरह की दिखानी है, ये सभी निर्णय लगभग पुरूष और पुरूषवादी सोच के तहत तय किये जाते हैं। अगर मनोरंजन के प्रकारों पर गौर किया जाय तो ज्यादातर मनोरंजन महिलाओं के शरीर व उनकी यौनिकता के इर्द गिर्द होते हैं। मनोरंजन के नाम पर कविताएं, जोक, व गाने सब महिलाओं का मज़ाक बनाते हुए सुनाए जाते हैं या फिर पुरूषों के सन्दर्भ में देखें तो मर्दानगी, ज्ञान, कौशल युक्त मनोरंजन सुनाए जाते हैं। यही कारण है कि मनोरंजन स्थल के इस तरह के माहौल से महिलाएं वहां खुद नहीं रूकना चाहती हैं तथा वहां उनकी सुरक्षा को लेकर कोई संवेदनशीलता नहीं दिखाई देती है।

यातायात–सुरक्षित यात्रा के लिए अनेक प्रकार के कानूनी प्रावधान किये गये हैं लेकिन आज भी महिलाओं के संदर्भ में सबसे बड़ी चिन्ता सुरक्षित यात्रा को लेकर होती है। जहां एक ओर महिलाओं के अनुकूल इन साधनों में व्यवस्थाओं की कमी होती है वहीं दूसरी ओर यात्रा के दौरान महिलाओं के साथ छेड़छाड़, अश्लील कमेन्ट, छिनैती, लूटपात, अपहरण व बलात्कार जैसी घटनाएं लगातार होती रहती हैं पुलिस की निष्क्रियता, भ्रष्टाचार तथा मुनाफाखोरी के चलते यातायात के नियमों व प्रावधानों की अवहेलना की जाती है तथा परिवहन के संचालन पर गाड़ी मालिक, ड्राईवर व कन्डेक्टर की मनमर्जी का सीधा असर महिलाओं के आने जाने पर पड़ता है। परिवार में भी लोगों का सहयोग न मिलने तथा बाहर निकलने पर पाबन्दी लगने के डर से वे अपनी समस्याओं को घर के सदस्यों को नहीं बता पाती तथा हमेशा अपने आप को असुरक्षित व भयभीत महसूस करती हैं। इसलिए आज युवाओं के साथ–साथ समाज के अन्य लोगों के साथ इन मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने तथा महिलाओं के लिए परिवहन की यात्रा सुरक्षित बनाने की जरूरत है ताकि वे स्कूल, बाजार, काम के स्थान आदि पर आसानी से आ जा सकें।

सही क्या है –

समानता के साथी अभ्यास से जान पाये होंगे कि–समान अवसर व भागीदारी में महिलाओं के साथ सार्वजनिक स्थानों में किस तरह का भेदभाव है। उन्हें न तो समान अवसर मिलते हैं और न ही उनकी समान भागीदारी होती है। यह जेंडर आधारित भेदभाव है। समानता के

साथी इस तरह की धारणाओं को बदलने के लिए पहल कर पायेंगे।

- सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं को समान अवसर बहुत कम।
- पुरूषों को सभी स्थानों में समान या अपनी रूची के अनुसार अवसर प्रदान हैं।
- जिन स्थानों में महिलाओं को समान अवसर हैं या भागीदारी है, वो भी काम, सेवा की जिम्मेदारीयों से जुड़ा है।
- पुरूषों को समान अवसर व भागीदारी, ज्ञान, जानकारी मौज मस्ती व मनोरंजन के स्थानों में है।
- पुरूषों को समान अवसर व भागीदारी उन स्थानों में है जहां उनकी एक सामाजिक पहचान बनती है।

समानता के साथियों को यह समझना जरूरी है कि जब महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों में समान अवसर व भागीदारी नहीं है तो उससे महिलाओं के जीवन में क्या असर पड़ता है जो इस प्रकार है–

- बाहरी जानकारी व ज्ञान के अवसरों से वंचित हो जाती हैं।
- उन्हें आगे बढ़ने का मौका नहीं मिलता।
- हिंसा भेदभाव की शिकार हो जाती हैं।
- उनमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है।
- अपने को कमजोर समझने लगती हैं।
- पुरूषों पर निर्भर रहने लगती हैं।

महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों में समान अवसर मिले तथा उनकी समान भागीदारी हो इसके लिए समानता के साथियों को स्वयं की भूमिकाओं में बदलाव लाना होगा। अपने आस पास के माहौल में चर्चा करनी होगी जिससे कि पुरूष बदलाव करने की पहल करने लगें। समानता साथी क्या करें ? जो कि इस प्रकार है –

- महिलाओं व लड़कियों को घर से बाहर जाने के मौके उपलब्ध कराने होंगे।
- समानता के साथीयों को घर के अन्दर के कामों में अपनी भूमिका बढ़ानी होगी।
- सार्वजनिक स्थानों में जेंडर समानता आधारित वातावरण निर्माण के लिए पहल करनी होगी।
- सार्वजनिक स्थानों के बारे में महिलाओं व लड़कियों को सहयोग करना होगा।

समानता के साथी–जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

समानता के साथी–महिलाओं व लड़कियों को समान अवसर व भागीदारी बढ़ाने के लिए अपने स्तर से क्या कर सकते हैं

.....

.....

.....

यदि आपने कभी महिलाओं व लड़कियों के लिए समान अवसर भागीदारी बढ़ाने के लिए पहल की तो किस तरह की चुनौतियां आई

लिखें

_____
_____?

उत्तरमाला –समान अवसर एवं भागीदारी

आपके सही उत्तर– समान अवसर एवं भागीदारी गतिविधि 01

सर्वाजनिक स्थानों के नाम	महिलाओं को समान अवसर व भागीदारी		पुरूषों को समान अवसर व भागीदारी	
	कम	ज्यादा	कम	ज्यादा
हैंण्ड पम्प/कुंआ		ज्यादा	कम	
तलाब		ज्यादा	कम	
मन्दिर/मस्जिद/गुरूद्वारा	कम		कम	ज्यादा
चारागाह	कम		कम	ज्यादा
खेत		ज्यादा	कम	
कस्बे	कम			ज्यादा
नुक्कड़	कम			ज्यादा
चौराहा	कम			ज्यादा
चौपाल	कम			ज्यादा
खेल का मैदान	कम			ज्यादा
बाजार	कम			ज्यादा
गॉव पंचायत भवन	कम			ज्यादा
सरकारी राषन की दुकान		ज्यादा	कम	
बैंक	क्म		कम	ज्यादा
गैस गोदाम		ज्यादा	कम	
कोर्ट कचहरी	कम			ज्यादा
थाना	कम			ज्यादा
तहसील	कम			ज्यादा
शमशानघाट				ज्यादा
चिकन/मटन षॉप	कम			ज्यादा
डाकघर	कम			ज्यादा
जंगल	कम			ज्यादा
बीज खाद की दुकान				ज्यादा
सतसंग भवन		ज्यादा	?	
सीनेमा घर	कम			ज्यादा
सार्वजनिक स्थान संख्या–25	कुल– 17	कुल–06	कुल–06	कुल– 18

समानता के साथी ने अपनी योजना तैयार की धन्यवाद। समानता के साथी अभ्यास (स) में जानें कि जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव क्या है।

(स) जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव

सामाजिक धारणा– महिलाओं व लड़कियों को मर्यादा में रखने के लिए कभी कभार उन पर हाथ उठाना या डांट डपट करना हिंसा नहीं होती

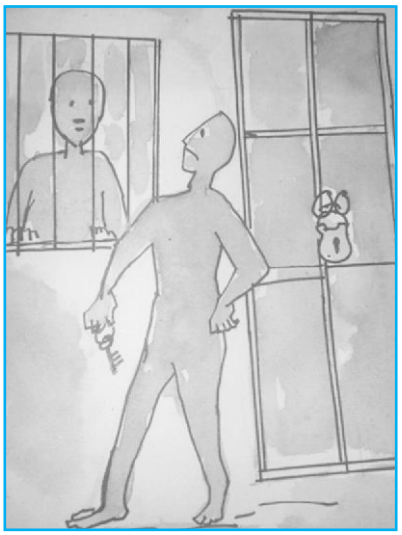

आओ जानें हिंसा क्या है ?

हिसां की समझ

समानता के साथियों को हिंसा की अवधारणा एवं विविध स्वरूपों को समझना जरूरी है तथा जेंडर आधारित हिंसा क्या है इसको भी समझना आवश्यक है हम जब हिंसा शब्द सुनते हैं हमारे दिमाग में अलग–अलग शब्द आते हैं जैसे– मारना पीटना, गाली देना, जलाना, झगड़ा करना, गोली मारना, थप्पड़ मारना आदि।

अतः विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई हिंसा की परिभाषा इस प्रकार दी गई है कि–किसी के भी द्वारा सोच समझ कर धमकी के रूप में अथवा क्रियात्मक रूप में व्यक्ति, समूह अथवा समुदाय पर किया गया बल प्रयोग जो चोट, मृत्यु या मानसिक चोट/हानि के रूप में होता है या होने का खतरा है या जिससे व्यक्तित्व का विकास अवरूद्ध होता है या वंचना होती है – हिंसा है।

समानता के साथी गतिविधि–01 में जाकर देखें जिसमें कुछ चित्र दिखाई दे रहे हैं। आपको उनको देखकर दिये गये प्रश्नों के बारे में लिखना है।

जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव गतिविधि 01

समानता के साथी नीचे दिये गये चित्रों में अपनी राय बतायें कि इन चित्रों में क्या हो रहा है आपको चित्रों की पहचान बतानी है कि कौन महिला या लड़की है। कौन लड़का या पुरूष है – ?

घर के अन्दर–

1. हिंसा किस पर हो रही है ?

.....

.....

2. हिंसा कौन कर रहा है ?

.....

.....

3. इन दोनों के बीच रिश्ता क्या है ?

.....

.....

4. हिंसा कहां पर की जा रही है ?

.....

.....

5. हिंसा की मान्यता कहाँ से आई ?

.....

.....

घर के बाहर–

1. हिंसा किस पर हो रही है ?

_____
_____
_____

2. हिंसा कौन कर रहा है ?

_____
_____
_____

3. इन दोनों के बीच रिश्ता क्या है ?

_____
_____
_____

4. हिंसा कहां पर की जा रही है ?

_____
_____
_____

- हिंसा की मान्यता कहाँ से आई?

.....

.....

.....

.....

समानता के साथी ने उपर दिये गये चित्रों के बारे में अपनी राय लिख कर दर्ज की। समानता के साथी का धन्यवाद। समानता के साथी आगे पढ़ें कि जेंडर आधारित हिंसा क्या है।

आओ जानें जेंडर आधारित हिंसा क्या है ?

कोई कृत्य या व्यवहार जो कि लड़की या महिला समझ कर उसके साथ मारपीट, ताने देना, गाली गलौज करना आदि किया जाता है उसे जेंडर आधारित हिंसा कहा जाता है।

हिंसा के अर्न्तगत केवल मारपीट ही नहीं है जब किसी की मनोस्थिति को आहत भ्रमित किया जाता है या बार–बार इस तरह के ताने देना जिसमें कि उसको असुरक्षा नजर आने लगे या आत्मग्लानि महसूस हो, भावनात्मक हिंसा है। उदाहरण के लिए, संतान या बेटा न पैदा होने, दहेज न लाने पर अपमान, उपहास, तिरस्कार, गाली, धमकी देना, चरित्र और आचरण पर दोषारोपण करना, आने जाने से रोकना, नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर करना, किसी से मिलने से रोकना, पसंद के विवाह करने से रोकना, आत्महत्या करने की धमकी देना, घर छोड़कर जाने की धमकी देना, आदि। कई घरों में पति अपना बर्ताव इस तरह बना लेते हैं कि कई दिनों तक महिला से बात करना बन्द कर देते हैं या अपने गुस्से का इजहार इस तरह से करते हैं कि घर का सामान तोड़ देते हैं या अपने कपड़े फाड़ देते हैं जिससे महिलाओं में भावनात्मक डर बना रहता है।

प्रायः महिलाओं व बच्चों के साथ भावनात्मक हिंसा का स्वरूप देखने को मिलता है क्योंकि महिलाओं व बच्चों के कोई निणर्य मान्य नहीं होते हैं और न ही उनकी बातों की स्वीकार्यता होती है। जब भी महिलाओं के द्वारा जेंडर मान्यताओं को तोड़ने का प्रयास किया जाता है तो उन्हें घर पर ही कई तरह की हिंसा का शिकार होना पड़ता है जिसमें भावनात्मक हिंसा भी शामिल है।

अब समानता के साथी गतिविधि 02 में जाकर देखें कि जेंडर आधारित हिंसा के प्रकार क्या हैं

आओ जानें जेंडर आधारित हिंसा के प्रकार गतिविधि 02

समानता के साथी इस अभ्यास में जान पायेंगे कि हिंसा कहते ही हमारे दिमाग में

कौन–कौन से शब्द स्वतः आने लगते हैं। क्योंकि समाज में आये दिन हिंसा की घटनाएं होती रहती हैं कहीं हम पर हिंसा होती है तो कहीं पर हमारे द्वारा हिंसा की जाती है। हिंसा शब्द सुनते ही हमारे दिमाग में तरह–तरह के शब्द आने लगते हैं और नीचे दिये गये चित्रों में किस प्रकार हिंसा दिखाई दे रही है ?

उपरोक्त चित्रों में किस तरह की जेंडर आधारित हिंसा के प्रकार दिखाई दे रहें हैं और कौन कौन सी हिसाएं होती हैं जैसे–छेड़छाड़, आग लगाना, गाली देना, थप्पड़ मारना, कुचलना, गला दबाना आदि और क्या हो सकते हैं लिखें ?.....

_____

_____

अब समानता के साथी जानें कि महिलाओं के जीवन चक्र में हिंसा कैसे काम करती है जैसे–

1. शिशु, बालिका व किशोरी–शारीरिक उत्पीड़न में लिंग आधारित चयन, बालिका शिशु हत्या, पीटना, खाना, देखभाल व चिकित्सकीय सेवाओं/सुविधाओं से वंचित करना किया जाता है। मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक उत्पीड़न में जबरन शादी, अलग–थलग रखना, यौन उत्पीड़न, बाल विवाह, गाली देना, ताने देना, खराब शिक्षा, स्वास्थ्य देखरेख तथा जानकारी तक पहुंच न होना या कम होना, आने–जाने पर नियंत्रण, संसाधनों तक

पहुंच में कमी या नियत्रंण आदि किया जाता है। बाल यौन उत्पीड़न में बाल वेश्यावृत्ति, व्यवहार नियंत्रण, बहलाना फुसलाना, यौन सम्बंध के लिए जबरदस्ती करना, बेचना आदि किया जाता है।

2. व्यस्क महिला–शारीरिक उत्पीड़न में घरेलू हिंसा, दहेज के लिए तंग करना, चुड़ैल घोषित कर जला देना, मनोवैज्ञानिक तथा भावनात्मक उत्पीड़न में जबरन तथा बेमर्जी की शादी, देखभाल न करना, आज़ादी की कमी आदि तथा यौन उत्पीड़न में विवाह के भीतर व बाहर, बलात्कार, जबरन यौन व्यवसाय व गर्भधारण, परिवार तथा काम की जगह पर यौन, उत्पीडऩ खरीदना–बेचना डराना–धमकाना व्यवहार नियंत्रण खराब शिक्षा, स्वास्थ्य देखरेख तथा जानकारी तक पहुॅच न होना या कम होना। आने–जाने पर नियंत्रण, बगैर भुगतान घरेलू श्रम आदि किया जाता है।

3. वृद्ध महिला– शारीरिक उत्पीड़न में घरेलू हिंसा मानसिक तथा भावनात्मक उत्पीड़न, देखभाल न करना, वैधव्य से जुड़े बंधन, आज़ादी की कमी, यौन उत्पीड़न, बलात्कार, डराना–धमकाना, यौन उत्पीड़न व्यवहार नियंत्रण, स्वास्थ्य देखरेख तथा जानकारी तक पहुॅच न होना या कम होना, आने–जाने पर नियंत्रण, बगैर भुगतान घरेलू श्रम आदि किया जाता है।

अब समानता के साथी गतिविधि 03 में जाकर देखें कि जेंडर आधारित हिंसा के सामाजिक मापदण्ड क्या हैं ?

जेंडर आधारित हिंसा के सामाजिक माप दण्ड गतिविधि– 03

समानता के साथियों को नीचे 5 बातों का जवाब अ,ब,स में देना है। जिसके लिए उन्हें दिये गये विकल्प पर टिक सही का निशान लगाना है–

समानता के साथियों के लिए पॉच बातें इस प्रकार हैं–

क्र.सं.	सामाजिक मापदण्ड	(अ) हां	(ब) नहीं	(स) कुछ पता नहीं
1	क्या हर परिवार में बेटियों के पैदा होने पर खुशी मनाई जाती है?			
2	क्या बेटी पैदा होने पर मॉ–बाप, दादा–दादी दुखी नहीं होते?			
3	क्या सभी लोग बेटियां पैदा हों दुआ मांगने लगे हैं?			
4	क्या अब कोई बेटी पैदा होने से पहले गायब नहीं हो रही?			
5	क्या बेटा–बेटी के लालन पालन में कोई भेदभाव नहीं होता?			

समानता के साथी ने अपनी सूझ बूझ से दिये गये विकल्पों में सही का निशान लगाया। कार्य को पूरा करने के लिए समानता के साथी का धन्यवाद। अब समानता के साथी आगे जानें कि जेंडर आधारित हिंसा के कारण महिला पुरूषों पर पड़ने वाले असर क्या हैं।

जेंडर आधारित हिंसा के कारण महिलाओं व पुरूषों पर पड़ने वाले असर क्या हैं ?

महिलाओं पर हिंसा के असर–जागरूकता की कमी, विकास में बाधा, आत्मसम्मान की कमी मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ : जैसे चिन्ता, सिर दर्द, उलझन और सोने की समस्या, गंभीर चोटें, हड्डी टूटना, जलना, कट जाना, पेट दर्द यौन स्वास्थ्य की समस्याएं–गर्भपात, एचआईवी, यौन के प्रति अनिच्छा, हमेशा डर या भय, आत्महत्या के विचार या मौत।

पुरूषों पर हिंसा के असर–शारीरिक चोट, गुस्सा, आक्रामक व्यवहार या हीन भावना का शिकार दिल का दौरा पड़ना, चिन्ता, उलझन या जोखिम उठाने का डर जिसमें नशा करना, अपने से कमजोर को पीटना, मारना, यौन सम्बन्धित जोखिम उठाना, नफरत,

चिड़चिड़ापन ऐसी नकारात्मक भावनाओं का निर्माण होना गंभीर चोट जैसे हड्डी टूटना, मानसिक बीमारियाँ, रक्तचाप, हृदय रोग सम्बन्धों में तनाव, अशान्ति आर्थिक या सम्पत्ति, जान–माल का नुकसान मौत, दुघर्टना सामाजिक तिरस्कार आदि।

समानता के साथी–जेंडर समानता लाने के लिए अपनी योजना तैयार करें

समानता के साथी जेंडर आधारित हिंसा को रोकने के लिए अपने स्तर ये क्या कर सकते हैं?

_____
_____
_____

उत्तरमाला – जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव
आपके सही जवाब जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव गतिविधि–01 घर के अन्दर – 1. महिला 2. पुरूष 3. पति 4. घर के अन्दर 5. समाज में घर परिवार से सीखा या देखा कि पत्नी को पीटना मारना पति का हक है। घर के बाहर – 1. लड़की, महिला 2. लड़का, पुरूष 3. अन्जान, जान पहचान वाला, साथ में काम करने वाला बॉस 4. आफिस, चौराहा, रास्ता 5. लड़के व पुरूष लड़कियों व महिलाओं के साथ छेड़छाड़ करना अपना हक जताते हैं उन्हें लगता है।
उत्तर माला– आपके सही जवाब जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव गतिविधि– 02 चित्र– 1– बलात्कार चित्र–2– घर से बाहर न जाने देना चित्र–3– बाल खींचकर घसीटना चित्र–4–धक्का मारकर घर से निकालना चित्र–5– गाली देना चित्र–6– मोबाईल में अश्लील चित्र दिखाना।
उत्तर माला– आपके सही जबाब जेंडर आधारित हिंसा व भेदभाव गतिविधि– 03 1- (ब) 2 . (अ) 3 . (ब) 4 . (अ) 5 . (अ)

अब समानता के साथी अभ्यास– 07 में जाकर देखें कि घरेलू हिंसा क्या है। आओ जानें–

7. घरेलू हिंसा

सामाजिक धारणा– घर में तो बर्तन से बर्तन टकराते रहते हैं, इसको हिंसा कहना उचित नहीं

समानता के साथी बतायें कि इनमें से हमारे आस पास या हमारे घरों में महिलाओं व लड़कियों के साथ घरों के अन्दर किस–किस तरह की हिंसाएं होती हैं या हमने अखबारों में सुना हो। आपको अपनी राय सहमत या असहमत के रूप में दर्ज करनी है, जैसे–

हिंसा		सहमत	असहमत
मुक्के मारना			
पीटना			
गला दबाना			
मारना			
जलाना			
व्यक्ति पर चीजें फेंकना			
लात मारना, धकियाना			
चोट करने के लिए धारदार हथियार का इस्तेमाल			
गाली			
आलोचना			
धमकी			
बेइज्जती			
नीचा दिखाने वाली टिप्पणियां करना			
जबरन लिंग प्रवेश/बलात्कार			
यौन हमला, जबरन यौन सम्पर्क			
यौन उत्पीड़न			
यौन संबंध के लिए महिला को मजबूर करने के लिए डराना–धमकाना			
अपहरण			
जबरदस्ती शादी			
महिला को घर से बाहर काम न करने देना			
आर्थिक नियंत्रण			
व्यक्ति को अलग थलग करना			
उनके आने जाने पर नज़र रखना			
जानकारी/सूचनाओं तक पहुंच पर रोक लगाना			

समानता के साथी ने अपनी सूझ बूझ से दिये गये विक्ल्पों पर सहमत असहमत पर सही का निशान लगाया अभ्यास को पूरा करने के लिए समानता के साथी का धन्यवाद।

अगले अभ्यास में समनता के साथी जानें कि घरेलू हिंसा को घर का मामला कह कर क्यों दबाया जाता है ?

घरेलू बातों को घर की बातें कह कर दबाना क्या उचित है ?

प्रायः हमारे समाज में घर के अन्दर के मामलों को घर के अन्दर ही दबाया जाता है, जिस कारण से घर के अन्दर महिलाओं या बच्चों के साथ होने वाली हिंसा का पता नहीं चल पाता है। अतः समानता के साथियों को यह समझना जरूरी है कि महिलाओं के साथ घर के अन्दर होने वाली हिंसा को उजागर करना, उसे रोकने के लिए पहल करना जरूरी है। देखा जाय तो महिलाओं के साथ घर के अन्दर होने वाली हिंसाओं को लिस्ट में बांध कर नहीं रखा जा सकता है, क्योंकि महिलाओं के साथ तरह तरह की यातनाएं दी जाती हैं जो कि हिंसा है। कोई ऐसी जगह नहीं है जहां पर महिलाओं के साथ हिंसा न होती हो।

समानता के साथी समझ पायें कि महिलाओं के ख़िलाफ़ हिंसा के स्वरुप व प्रकार शारीरिक प्रताड़ना मनोवैज्ञानिक/भावनात्मक हिंसा यौन हिंसा, जोर जबरदस्ती, व्यवहार नियंत्रण, शारीरिक हमला तथा अन्य व्यक्ति पर नियंत्रण के लिए धमकी का प्रयोग, बुरा बर्ताव तथा व्यक्ति के आत्मसम्मान व मूल्य को गिराना ताकि वह अपने प्रताड़क पर

अधिक निर्भर हो जाए और डर जाए, शारीरिक शक्ति या शारीरिक दवाब के द्वारा महिलाओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध यौन संबंध बनाने के लिए मजबूर करना यह शक्ति संबंध तथा भेदभाव पितृसत्तात्मक रिवाजों का परिणाम होता है। महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा की समझ के अर्न्तगत यह समझना आवश्यक है कि एक दूसरे के साथ बोलचाल सम्बोधन में एक दूसरे के प्रति एक छवि बनती है जिससे दो लोगों के बीच आदर व सम्मान का भाव बनता है।

हमारे समाज में महिलाओं के संदर्भ में पुरूषों के द्वारा या तो अलौकिक शक्तियों से जोड़कर उनकी तुलना की जाती है जैसे मॉ दुर्गा, मातृशक्ति, दयालु, कोमल आदि अन्यथा हास्य व निम्न कोटि के शब्दों व सम्बोधनों का उपयोग किया जाता है जिससे महिलाएं पुरूषों से बात करने व उनके सामने खड़े होने से भी कतराती हैं। हमारे समाज में एक दूसरे पर गुस्से के इज़हार में पुरूषों द्वारा दूसरे को दी जाने वाली गालियों में ज्यादातर गालियां महिलाओं की यौनिकता से जुड़ी होती हैं।

पुरूषों के आपसी बातचीत का केन्द्र बिन्दु महिलाओं का शरीर होता है जो कि महिलाओं पर नियत्रंण बनाये रखने की पितृसत्तात्मक सोच का हिस्सा होता है। झगड़ा दो पुरूषों के बीच होता है और गालियां एक दूसरे की महिलाओं को दी जाती हैं, जिन्हें सुनकर महिलाएं शर्मिन्दगी व ग्लानि महसूस करती हैं।

समानता के साथी– जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें

1. समानता के साथी घरेलू हिंसा को रोकने के लिए अपने परिवार के स्तर पर क्या कर सकते हैं, लिखें _____ _____	2. समानता के साथी बतायें कि घरेलू हिंसा को रोकने के लिए समुदाय स्तर पर क्या किया जा सकता है _____ _____

समानता के साथी ने जेंडर समानता के लिए योजना तैयार की। साथी का धन्यवाद। अब अगला अभ्यास– 08 में जानें कि घरेलू हिंसा कानून क्या है ?

8.घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम– 2005

सामाजिक धारणा– घर के अन्दर की बातें घर के अन्दर ही सुलझनी चाहिए, ये बातें बाहर आने से परिवार की इज्जत चली जाती है।

आओ जानें क्या है घरेलू हिंसा कानून –

घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005– महिलाओं व 18 साल के कम उम्र के बच्चों को घर के अन्दर होने वाली हिंसा से संरक्षरण प्रदान करता है। ये हिंसा किसी भी प्रकार की हो सकती है जैसे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक व भावनात्मक आदि। कोई वयस्क पुरूष जो पीड़िता के साथ घरेलू नातेदारी में रहता हो या रहा हो, पिता, भाई, पति व अन्य नातेदार, यदि उनके द्वारा महिलाओं व बच्चों के साथ हिंसा की जाती है तो उन पर घरेलू हिंसा अधिनियम के अर्न्तगत कार्यवाही की जा सकती है।

घरेलू हिंसा (धारा 3)

किसी भी पुरूष द्वारा किसी भी महिला के साथ जो साझी गृहस्थी में पत्नी, बेटी, मॉ, बहू, भाभी, बहन या विवाह की तरह के किसी भी रिश्ते में रहती हो, के स्वास्थ्य, सुरक्षा, जीवन, अंग को कोई नुकसान पहुॅचाता हो या पहुंचाने की आशंका हो घरेलू हिंसा होगी, जिसके तहत शारीरिक, भावनात्मक, मौखिक, आर्थिक व लैगिंक दुरूपयोग शामिल है। अतः घरेलू हिसा के अर्न्तगत शारीरक, मौखिक व भावनात्मक, आर्थिक तथा लैंगिक/यौनिक हिंसा को शामिल किया गया है।

क्या कहता है अधिनियम ?

पीड़ित महिला कौन? मॉ, बहन, बेटी, पत्नी, दूसरी पत्नी या कोई अन्य औरत (कोई ऐसी महिला जो आरोपी के साथ घरेलू नातेदारी में रहती हो या रही हो)। आरोपी व्यक्ति कौन पिता, पुत्र, पति, भाई, मित्र आदि (कोई वयस्क पुरूष जो पीड़िता के साथ घरेलू नातेदारी में रहता हो या रहा हो)।

घरेलू नातेदारी का मतलब? ऐसे दो व्यक्ति जो साझा गृहस्थी में एक साथ रहते हैं या थे जिनमें खून का रिश्ता, विवाह या विवाह समान रिश्ता, दत्तक या गोद, संयुक्त परिवार के सदस्य के रिश्ते। साझी गृहस्थी : ऐसी जगह जहां पीड़िता, आरोपी के साथ अकेले, घरेलू नातेदारी, संयुक्त स्वामित्व या किरायेदारी में रहती है या रह चुकी है।

बालक कौन ? ऐसा कोई व्यक्ति जो 18 साल से कम आयु का है इसके अर्न्तगत कोई दत्तक, सौतेला या पोषित बच्चा है।

घरेलू हिंसा कानून के फायदे –

- कानून का पूरा नाम क्या है (घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005)
- कानून की खासियत क्या है (यह सिविल कानून है)
- इसमें आरोपी केवल पुरूष हो सकता है (महिलाएं नहीं)
- भरण पोषण का दावा किया जा सकता है।
- यह कानून परिवार रिश्ते के अन्दर हिंसा को रोकने की बात करता है।
- महिला को घर से बाहर नहीं निकाला जा सकता है (पुरूष को बाहर रहना पड़ेगा)
- इसकी शिकायत कोई भी कर सकता है (उसे गवाह के रूप में नहीं देखा जायेगा)
- तत्काल राहत की बात की गई है।
- हर क्षेत्र में सेवा प्रदाता की नियुक्ति की गई है।
- जिला स्तर पर जिला संरक्षरण अधिकारी को नियुक्त किया गया है।
- यह कानून पुरूष विरोधी नहीं बल्कि हिंसा विरोधी है।
- केस का निस्तारण प्रकिया जल्दी होती है।

इस कानून के तहत पीड़ित या संघर्षशील महिला कैसे कानून की मदद ले सकती है उन चरणों को समझना भी आवश्यक है, जैसे–

- महिला के साथ किस किस तरह की हिंसा हो रही है।
- हिंसा करने वाला कौन है।
- पुरूष क्यों हिंसा कर रहा है।
- महिला ने कैसे एफआईआर दर्ज किया।
- कितने समय बाद सुनवायी हुई।
- भरण पोषण के लिए क्या किया गया।
- कानूनी लड़ाई में क्या महिला का पैंसा खर्च हुआ।
- निर्णय किसके हक में था आदि।

समानता साथी ने अभ्यास में घरेलू हिंसा कानून के बारे में जानकारी बढ़ाई। साथी का धन्यवाद। समानता के साथी अब अभ्यास– 09 में जान पायेंगे कि यौन उत्पीड़न क्या है ?

9.यौन उत्पीड़न

इस अभ्यास में सामानता के साथी महिलाओं के साथ होने वाले यौन उत्पीड़न के बारे में जानकारी बढ़ा पायेंगे कि यौन उत्पीड़न क्या है। आओ गतिविधि– 01 में जानें कि यौन उत्पीड़न क्या है–

यौन उत्पीड़न गतिविधि– 01

महिलाओं व लड़कियों के साथ होने वाली यौन उत्पीड़न की घटानाओं का सम्बंध हमारे सामाजिक धारणाओं का एक बहुत बड़ा कारण है जिसमें मर्दों को तैयार किया जाता है और मर्द उसे सीखकर महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न करते हैं और मर्द जिसे अपना हक समझने लगते हैं। क्या ये सही है? आओ जानें क्या सही है–प्यार पाने में क्या जायज है और किसे यौन उत्पीड़न कहा जायेगा ?

इस अभ्यास में समानता के साथी प्यार के मायने को पढ़कर (अ) या (ब) किसी भी खाने में सही का निशान लगाकर अपनी राय दर्ज करें–✓

क्र. सं.	प्यार के मायने।	(अ) जायज	(ब) यौन उत्पीड़न
1	प्यार में असली मजा तो जोर जबरदस्ती से आता है।		
2	पत्नी/पार्टनर की ना में ही हां छुपी होती है।		
3	पत्नी/पार्टनर का प्यार में दिल जीतने के लिए मर्द को पहलवान टाईप को बनाना जरूरी है।		
4	प्यार पाने के लिए पत्नी/पार्टनर से इजाजत लेने की जरूरत नहीं होती।		
5	जिस्मानी रिश्ता बनाने की ख़्वाहिश महिलाएं भी कर सकती हैं।		
6	कितने बच्चे पैदा करने हैं ये पुरूष को तय करना है।		
7	पति की खुशी के लिए पत्नी को यौन सम्बंध बनाने के लिए मना नहीं करना चाहिए ।		
8	यौन आनद लेने में पत्नी की रजामन्दी जरूरी है।		
9	लड़की बिगड़े इससे पहले उसकी जल्दी शादी कर दो।		
10	खूबसूरत लड़की को देख लड़का बहक कर ऑख मार दे या सीटी बजाये, इसमें क्या गलत है।		
11	लड़कियां भी लड़कों के द्वारा छेड़े जाने पर खुश होती हैं।		
12	पति पत्नी के साथ अपनी खुशी के लिए हर तरह का यौन व्यवहार कर सकता है।		
13	लड़कियां इसलिए सजती संवरती हैं कि लड़के हमें छेड़ें।		
14	पत्नी इधर उधर तांक झांक करे इससे पहले बच्चे पैदा कर उसे जिम्मेदारीयों में उलझा दो।		
15	लड़कों का लड़कियों को बार– बार घूरना कुदरती है।		

समानता के साथी ने 15 सवालों पर अपनी राय दर्ज की समानता के साथी का धन्यवाद। अब जानें क्या है यौन उत्पीड़न–?

यौनिक उत्पीड़न का आश्य बलात्कार, अशलील साहित्य या तस्वीर देखने के लिए मजबूर करना, महिला को अपमानित करने या नीचा दिखाने की नियति से लैंगिक प्रकृति का कोई अन्य कार्य करना या बच्चों के साथ लैंगिक दुर्व्यवहार है जो यौनिक उत्पीड़न के दायरे में आता है।

महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न की घटनाएं घर, बाहर व कार्यस्थल पर आये दिन होती रहती है। पुरूषों के द्वारा किया जाने वाला ये दुर्व्यवहार महिलाओं व लड़कियों में असुरक्षा का भाव पैदा कर देता है, जिससे महिलाएं अपना सीमित दायरा बनाने के लिए विवश होती हैं। बाज़ार, कार्यस्थल व स्कूल जाती लड़कियों के साथ छेड़छाड़ की घटनाएं उनके आवागमन को सीमित कर देता है। पुरूषों के द्वारा किया जाने वाला यह व्यवहार महिलाओं को आगे बढ़ने के मौकों से वंचित कर देता है। ये कृत्य अपराध है। काम के स्थानों में यौनिक उत्पीड़न निवारण के लिए सरकारी व गैरसरकारी स्तर पर यौन उत्पीड़न निवारण समितियों के गठन को अनिवार्य किया गया है।

यौन उत्पीड़न कई तरह का हो सकता हैं इसे कुछ प्रकारों में बांधा नहीं जा सकता है लेकिन प्रायः जो देखने व सुनने को मिलता है वो इस प्रकार है–

दांत से काटना, शरीर कुचलना, ऑख माराना, सीटी बजाना, शरीर छूना, कम्मेंटस कसना, अश्लील गाने सुनाना, वेश्यावृत्ति करवाना, विवाह के भीतर व बाहर बलात्कार, जबरन गर्भधारण, महिलाओं व लड़कियों को खरीदना–यौन सम्बंध बनाने के लिए डराना धमकाना, आदि।

मीडिया/मोबाईल में अश्लील सामग्री दिखाना :–

आज संचार के वर्तमान माध्यमों तक आम जन की पहुंच तेज़ी के साथ बढ़ी है। मोबाईल और इन्टरनेट तक युवाओं की पहुंच तथा उपभोक्तावादी संस्कृति से एक नई जीवन शैली की शुरूआत हुई है। यौनिकता से जुड़ी जानकारी उनके लिए आसान हुई है। मीड़िया के माध्यम से बाज़ार ने पितृसत्तात्मक सोच के तहत मदार्नगी व यौनिकता से जुड़े अश्लील फिल्मों व चित्रों के माध्यम से महिलाओं को यौनिक उपभोग की वस्तु के रूप में परोसा है। जिसके परिणामस्वरूप समाज में महिलाएं लगातार शोषण व दमन की शिकार हो रही हैं। युवा मोबाईल फोन से अश्लील फिल्मों को देखने के आदी बनते जा रहे हैं। जिनका असर उनकी असल जिन्दगी पर पड़ रहा है। वह जो भी फिल्मों में देखते हैं उसे बिना सोचे समझे व्यवहार में लाने की कोशीश करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप आये दिन महिलाओं व लड़कियों के साथ यौनिक उत्पीड़न की घटनाएं बढ़ रही हैं क्योंकि ज़्यादातर मीडिया में पुरूषों के यौनिक व्यवहारों को आक्रामक व धौंसपूर्ण तरीके

से प्रस्तुत किया जा रहा है।

समानता के साथी ने यौन उत्पीड़न क्या है, सकारात्मक जानकारी बढ़ाई। साथी का धन्यवाद।

उत्तर माला– यौन उत्पीड़न

आपके सही जबाब – यौन उत्पीड़न गतिविधि 01 – द, 1.– ब, 2.– ब, 3.–ब, 4.– ब, 5.– ब, 6.–ब, 7.– ब, 8.– अ, 9.– ब, 10– ब, 11.– ब, 12.– ब, 13.– ब,14.– ब, 15.– ब

समानता के साथी अगला अभ्यास– 10 में जानें कि लिंग आधारित चयन क्या है। जानें–

10.लिंग आधारित चयन

समानता के साथी इस अभ्यास में एक कहानी के माध्यम से लिंग आधारित चयन के बारे में अपनी समझ को गहरा कर पायेंगे उन्हें कहानी पर अपने विचार देने हैं यदि इस कहानी में कुछ पात्र आपसे राय मांगते है तो आप क्या कहेंगे?

कहानी–

कल्पना करिये आपके गॉव में दो परिवार रहते हैं। एक परिवार है राम किशन का दूसरा परिवार है तेजपाल का। राम किशन की शादी को 15 साल हो गये हैं उनकी दो बेटियां हैं पति–पत्नी दोनों खुश हैं। दोनों बेटियां अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रही हैं। राम किशन के मामा आये दिन राम किशन को ताना देते रहते हैं कि राम तू चुप क्यों बैठा है अरे भानजे वंश चलाने के लिए लड़का जरूरी है। तू कुछ और सोच यदि तेरे बस की बात नहीं है तो बता? में कुछ करता हूँ। ये बातें करीब एक साल से चल रही हैं। राम किशन उनकी बातों को अनसुना कर देता है। लेकिन राम किशन की पत्नी अन्दर से डरने लगी है, ये कुछ–कुछ आभास राम किशन को होने लगा है।

दूसरा परिवार है तेजपाल का। तेजपाल की शादी को 10 साल हो गये हैं, तीन बेटियां हैं। दूसरी बेटी होने के बाद तेजपाल अपनी पत्नी के साथ आये दिन मारपीट करने लगा है। तेजपाल की पत्नी भी गुस्से में अपनी तीनों बेटियों के साथ मारपीट करती है, समय पर खाना नहीं देती है। तेजपाल की पत्नी फिर से गर्भवती है। तेजपाल का परिवार इस बार अस्पतालों के चक्कर लगा रहे हैं। पड़ोसी भी आये दिन तेजपाल की पत्नी को नई–नई राय देते रहते हैं। एक दिन तेजपाल की मुलाकात आपसे होती है, तेजपाल अपनी समस्या आपको बताता है। दूसरे दिन राम किशन आपके घर आकर आपसे कुछ राय मांग रहा है। आपको दोनों को अपनी राय देनी है।

1. राम किशन किस सम्बंध में आपसे मिलना चाहता है ?
2. तेजपाल आपसे किस तरह की मदद मांगने आया है? आप क्या मदद करेंगे?
3. राम किशन के घर में किस तरह की समस्या लगती है ?
4. तेजपाल के घर में किस तरह का तनाव चल रहा है ?
5. राम किशन की पत्नी किन कारणों से डरी है ?
6. राम किशन के मामा राम किशन को क्या उपाय बताने की बात कर रहे होंगे ?

समानता के साथी ने कहानी में 6 प्रश्नों के सकारात्मक जवाब दिये। समानता के साथी का धन्यवाद। अब जानें कि लिंग आधारित चयन क्या है।

क्या है लिंग आधारित चयन–

हमारे समाज में बेटा व बेटी के प्रति अलग–अलग सामाजिक मान्यताएं हैं जिसके आधार पर उनकी परवरिश, मौके व संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। बेटों को वंश चलाने वाला, सम्पत्ति का वारिस, बुढ़ापे का सहारा आदि माना जाता है जिससे उन्हें आगे बढ़ने के तमाम मौके व संसाधन उपलब्ध कराये जाते हैं। दूसरी तरफ बेटियों को पराया धन व बोझ माना जाता है, समाज के कुछ हिस्सों में उनका जन्म लेना ही अच्छा नहीं माना जाता जिससे उनके साथ कई तरह के भेदभाव होते है व विकास के अवसरों से वंचित कर दिया जाता है।

बेटियों और बेटों के बारे में इन परम्परागत सोच व मान्यताओं के चलते ही लिंग जांच व लड़की होने पर गर्भ समापन कराया जाता है जिससे लड़कियों की संख्या लगातार कम होती जा रही है। हमारे देश में अनेक कानूनी प्रावधानों के बावजूद उनका प्रभावी क्रियान्वयन न हो पाने से लड़कियों के जन्म लेने व अन्य नागरिक अधिकारों का हनन हो रहा है।

उत्तर माला –लिंग आधारित चयन

आपके प्रश्नों के सही जवाब – लिंग आधारित चयन

1. मामा से बात करे कि हमारे घर के बारे में दखल न दें। हम लड़का लड़की में भेदभाव नहीं करते।
2. तेजपाल आपसे यह मदद चाहते हैं कि किसी तरह पता करवा दें कि गर्भ में लड़का है या लड़की। आपने तेजपाल को समझाया कि लड़का लड़की में भेदभाव करना गलत है।
3. राम किशन के घर राम किशन के मामा ने अनावश्यक दवाब बनाया है कि वंश चलाने के लिए लड़का जरूरी है।
4. तेजपाल के घर पुत्र न होने के कारण पत्नी के साथ हिंसा करने लगा है जिस कारण से बच्चे भी हिंसा के शिकार हो रहे हैं।
5 राम किशन की पत्नी इसलिए डरी हुई है कि कहीं राम किशन का व्यवहार मेरे व मेरी बेटियों के प्रति बदल न जाय।
6. राम किशन के मामा राम किशन को दूसरी शादी करने की सलाह दे रहे होंगे कि उससे लड़का पैदा होगा बार–बार राम किशन पर दवाब बना रहे हैं।

अब समानता के साथी अभ्यास– 11 में जाकर देखें कि अभद्र भाषा एवं हास्य कहावतें ज्यादातर किस पर बनी होती हैं, और उनका क्या असर होता हैं, आओ जानें–

11.अभद्र भाषा एवं हास्य कहावतें

अभद्र भाषा गतिविधि–01

इस अभ्यास में समानता के साथी अभद्र भाषा व हास्य कहावतें ज्यादातर किसके उपर बनी होती हैं जानने व समझने का प्रयास करेंगे। साथी नीचे दिये गये चित्रों पर विचार करें कि इन चित्रों में उन्हें क्या दिखाई दे रहा है ? इसके लिए आपको तीन सवाल दिये गये हैं। आपको इनके बारे में लिखना है

चित्र (अ) में निम्न जानकारी के साथ अपनी राय देनी है–

1. ये दोनों के बीच क्या रिश्ता हो सकता है?
2. इसमें कौन किसके उपर भारी पड़ता नजर आ रहा है?
3. किस तरह की भाषा का उपयोग किया जा रहा होगा?

उत्तर यहां लिखें

1. ——————————————————————————————
2. ——————————————————————————————
3. ——————————————————————————————

चित्र (ब) में निम्न जानकारी के साथ अपनी राय देनी है,

1. ये दोनों के बीच क्या रिश्ता हो सकता है?
2. इसमें कौन किसके उपर भारी पड़ता नजर आ रहा है?
3. किस तरह की भाषा का उपयोग किया जा रहा होगा?

उत्तर यहां लिखें,

1. ——————————————————————————————
2. ——————————————————————————————
3. ——————————————————————————————

एक दूसरे के साथ बोलचाल सम्बोधन में एक दूसरे के प्रति एक छवि बनती है जिससे दो लोगों के बीच आदर व सम्मान का भाव बनता है। हमारे समाज में महिलाओं के संदर्भ में पुरूषों के द्वारा या तो अलौकिक शक्तियों से जोड़कर उनकी तुलना की जाती है जैसे मॉ दुर्गा, मातृशक्ति, दयालु, कोमल आदि, अन्यथा हास्य व निम्न कोटि के शब्दों व सम्बोधनों का उपयोग किया जाता है, जिससे महिलाएं पुरूषों से बात करने व उनके सामने खड़े होने से भी कतराती हैं।

हमारे समाज में एक दूसरे पर गुस्से के इज़हार में पुरूषों द्वारा दूसरे को दी जाने वाली गालियों में ज्यादातर गालियां महिलाओं की यौनिकता से जुड़ी होती हैं। पुरूषों के आपसी बातचीत का केन्द्र बिन्दु महिलाओं का शरीर होता है जो कि महिलाओं पर नियत्रंण बनाये रखने की पितृसत्तात्मक सोच का हिस्सा होता है। झगड़ा दो पुरूषों के बीच होता है और गालियां एक दूसरे की महिलाओं को दी जाती हैं, जिन्हें सुनकर महिलाएं शर्मिन्दगी व ग्लानि महसूस करती हैं। इसी तरह हास्य कहावतें भी कही जाती हैं जो ज्यादातर महिलाओं के सन्र्दभ में कही जाती हैं।

अब समानता के साथी गतिविधि– 02 में जानें कि हास्य कहावतें कौन सी हैं। और किसके उपर बनाई जाती हैं, आओ जानें ।

हास्य कहावतें गतिविधि 02

इस अभ्यास में समानता के साथी हास्य कहावतों पर अपनी समझ बना पायेंगे कि ज्यादातर हास्य कहावतें महिलाओं व लड़कियों के बारे में बनाई जाती हैं। जैसे –नीचे दो लघु नाटिका लिखी गई हैं। उसमें किस तरह की हास्य कहावते कही गई हैं, अन्य किस तरह की और प्रचलित हैं, आप स्वयं सोचें ?

दीन दयाल–हलो ...अरे बेटा मैंने कहा तूने बैंक से पैसा निकाल कर रामपाल के हाथ

भेजा या नहीं?
राजेश– जी पिता जी पैंसा भेज दिया है परन्तु रामपाल चाचा के हाथ नहीं भेजा है।
दीन दयाल– पर किसके हाथ भेजा ?
राजेश– रेश्मा के हाथ भेजा है।
दीन दयाल– अरे पगले तू कब समझेगा ?
राजेश– क्या ?
दीन दयाल– एक कहावत है सुन ....दरवाजे में लगी कील का, आकाश में उड़ता चील का, जंगल के भील का, और लड़कियों की बातों का कभी भरोसा मत करो ?
नीचे लघु नाटिका लिखी गई है, उसमें किस तरह की हास्य कहावत कही गई है अन्य किस तरह की और प्रचलित हैं आप स्वयं सोचें,

सुनीता– अजी सुनते हो ?
गजानन्द– हां बोलो क्या कह रही हो ?
सुनीता–दीपक को रामकली दीदी के साथ गॉव भेज दूँ क्या ?
गजानन्द– तू सठिया गई क्या ?
सुनीता– क्या हुआ रामकली का नाम लेते ही तुम्हारे तेवर क्यों चढ़ गये ?

गजानन्द– तू बता राम काली कौन है ?
सुनीता– क्यों बेचारी दुखी है पति के ईलाज में उतना पैंसा खर्च करने के बाद भी नहीं बचा पाई।
गजानन्द– हां तो सुन वो विधवा है विधवा ?
सुनीता– तो क्या हुआ ?
गजानन्द– अरे कहते हैं – रांड और सांड का भरोसा नहीं करना चाहिए ?

समानता के साथी और भी सोचें कि कौन–कौन सी कहावतें हैं, जो महिलाओं की यौनिकता व उनकी बुद्वि विवेक पर शक और संशय करते हुए बनाई गई हैं। उन्हें हास्य व ताने के रूप में लोग मजाक किया करते हैं। लिखें– ?

_____
_____
_____
_____

उत्तर माला –अभद्र भाषा एवं हास्य कहावतें।
आपके सही जबाब – अभद्र भाषा एवं हास्य कहावतें गतिविधि–01 चित्र (अ) 1. भाई – बहन, बॉय फ्रेंडस – गर्लफ्रैंडस, पड़ोसी लड़का – लड़की 2. लड़का लड़की के उपर अकामक दिख रहा है। 2. चित्र में लड़का लड़की को गाली दे रहा है। चित्र (ब) 1. बाप – बेटा, मालिक – नौकर 2. बाप या मालिक लड़के को डांट रहा है। 3. चित्र में बाप या मालिक लड़के को गाली दे रहा है।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास– 12 में जाकर देखें कि छेड़छाड़ व यौन हिंसा के खिलाफ कौन–कौन से कानून हैं। आओ जानें इन कानूनों के बारे में–

12.छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा के खिलाफ कानून

छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा हमारे समाज में एक कलंक है जिसे खासकर लड़कों व मर्दों को समझना जरूरी है। क्यों? आज लड़कियां व महिलाएं मर्दों से असुरक्षा महसूस करती हैं, क्योंकि उनके साथ आये दिन छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा की घटनाएं घटती रहती हैं। जबकि सारे पुरूष छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा नहीं करते परन्तु उन्हें भी यह कलंक सहना पड़ता है। तब क्या करें? युवाओं व मर्दों को छेड़छाड़ व यौनिक घटनाओं पर चुप्पी तोड़नी होगी। इस तरह की घटनाओं का विरोध करना होगा। देखा जाय तो हमारे कानून में छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा को लेकर कानून बनाये गये हैं। लेकिन कहीं तो उन कानूनों की जानकारी नहीं है, कहीं पर उन कानूनों को अनदेखा किया जाता है। क्यों कि हमारी समाजिक सोच महिलाओं व लड़कियों के लिए दोयम दर्जे की बनी हुई है जिसके कारण से लड़कियों व महिलाओं को न तो कानूनों का फायदा मिल पाता है न उन्हें इन कानूनों के बारे में पता चल पाता है। आओ जानें कैसे छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा पर हम कानून की मदद ले सकते हैं–

समानता के साथी गतिविधि– 01 में जाकर देखें कि छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा के खिलाफ कौन–कौन से कानून हैं, आओ एक कहानी के माध्यम से जानने की कोशिश करते हैं–

छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा गतिविधि– 01

कहानी 'सीता का डर'

कहानी– सीता एक काम काजी महिला है। सीता अपने शहर में एक प्राईवेट कम्पनी में काम करती है। उस कम्पनी में करीब 30 लोग काम करते हैं जिनमें ज्यादातर पुरूष हैं। कम्पनी में सीता के साथ एक पुरूष कारीगर भी काम करता है, वह कारीगर पहले– पहले सीता को आये दिन घूरता रहता था। सीता अपनी नजरें फिरा लेती थी। सीता उस व्यक्ति से असहज होने लगी थी। लेकिन क्या करती उसे उसके साथ काम करना जरूरी था। कुछ दिन बाद वह कारीगर सीता को आये दिन छूने की कोशीश करता । एक दिन तो मौका देखकर उस कारीगर ने सीता का हाथ पकड़ लिया, सीता कुछ नहीं कर पाई। चुपचाप अपने काम में लग गई। तब से सीता काफी डरी है। सीता सोच रही है, क्या करू, कहां जाऊं? काम करना भी जरूरी है। कम्पनी में किससे शिकायत करे ?

समानता के साथियों को जवाब लिखने हैं

1. समानता के साथी अपनी राय दें कि सीता को क्या करना चाहिए ?
2. क्या इस तरह की घटनाओं के लिए कोई कानून है ?
3. क्या इस तरह की घटनाओं को महिलाएं जल्दी बताती हैं या छुपाती हैं क्यों ?

समानता के साथी ने उपर दिये गये प्रश्नों पर अपने विचार लिखे, इसके लिए समानता के साथी का धन्यवाद। अब समानता के साथी गतिविधि– 02 में एक दूसरी कहानी पढ़ें कि छेड़छाड़ व यौनिक हिंसा के खिलाफ और कौन से कानून हैं।

छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा गतिविधि – 02

कहानी 'टीना क्यों चुप है'

कहानी– टीना 12 साल की लड़की है। वह स्कूल में पढ़ने जाती है, उसे स्कूल जाने के लिए पैदल जाना पड़ता है, उसके साथ एक पड़ोसी अंकल भी उसी रास्ते से जाते हैं, वो कहीं शहर में नौकरी करते हैं। कुछ दिन तो वह अंकल टीना के साथ हॅसी मजाक करते रहे। टीना को भी अच्छा लगने लगा। कुछ दिन बाद वह अंकल टीना के लिए चॉकलेट लाने लगे। टीना मना करती पर वो जबरदस्ती उसके स्कूल के बस्ते में डाल देते। अब तो अंकल किसी न किसी बहाने आये दिन टीना को पकड़ लेते हैं और कभी गाल मरोड़ते हैं, कभी टीना को अपने से चिपका लेते हैं, जो कि टीना को अच्छा नहीं लगता है। टीना अब अंकल से कुछ घबराने लगी है। लेकिन टीना की समझ में नहीं आ रहा है कि वो क्या करे ? अंकल इन सब से अनजान बन कर रोज टीना को उसके घर से बुलाकर अपने साथ ले जाते हैं। टीना मना करती है कि अंकल मैं बाद में आऊंगी लेकिन टीना के घर वाले डांटकर टीना को अंकल के साथ जाने को कहते हैं। अब बताओ टीना क्या करे– ?

समानता के साथियों को जबाब लिखने हैं –?

1. समानता के साथी टीना को क्या राय देना चाहेंगे ?
2. क्या इस तरह की घटनाओं के लिए कोई कानून है?
3. क्या इस तरह की घटनाओं को लड़कियां जल्दी बताती हैं या छुपाती हैं क्यों ?

समानता के साथी ने उपर दिये गये प्रश्नों पर अपनी सूझ बूझ से जवाब लिखे इसके लिए समानता के साथी का धन्यवाद। आगे जानें कि कौन–कौन से कानून हैं।

छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा के खिलाफ कानून

हमारे संविधान में सभी की गरिमा एवं सुरक्षा का प्रावधान किया गया है, जिसमें खासकर कमजोर वर्ग एवं महिलाओं व बच्चों को ध्यान में रखकर कानून बनाये हैं। जिन्हें व्यवस्थागत व ढांचेगत रूप से क्रियान्वित किया गया है। जैसे किसी भी सरकारी व गैरसरकरी संस्थान या कम्पनी में यौन उत्पीड़न से सुरक्षा के लिए हर संस्थान में एक यौन उत्पीड़न से सुरक्षा कमेटी का होना अनिर्वाय है जिसकी सूचना सभी कार्यकर्ताओं को होना जरूरी है। इसी तरह घर में घरेलू हिंसा कानून व घर से बाहर भी सार्वजनिक स्थान या यातायात के दौरान भी सुरक्षा के कई कानून हैं जिनसे लड़कियों व महिलाओं को सुरक्षा प्रदान की जाती है। सुरक्षा को महत्व देते हुए यातायात में महिला सीटों को सुरक्षित किया गया है। बच्चों के लिए विशेष कानून हैं जैसे–पोस्को है। जिसमें महिलाएं छेड़छाड़ व यौन हिंसा की शिकायत दर्ज कर सकती हैं। इसी तरह देश व हर राज्य में लड़कियों, महिलाओं व बच्चों की सुरक्षा के लिए कई सारी हेल्पलाईन हैं जिनके उपयोग से सुरक्षा ली जा सकती है।

समानता के साथी– जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें

छेड़छाड़ एवं यौनिक हिंसा को रोकने के लिए आप अपने स्तर से क्या कर सकते हैं ?
_____
_____

समानता के साथी अब अभ्यास– 13 में जाकर देखें कि मर्दानगी का मतलब क्या है। मर्दानगी किसे कहते हैं, आओ जानें।

(द) मर्दानगी

मर्दानगी शब्द हमारे बात व्यवहार में आये दिन कहा जाता है। या लोगों से सुना जाता है। इस अभ्यास में समानता के साथी मर्दानगी के बारे में और गहराई से जान पायेंगे कि मर्दानगी को समझना क्यों जरूरी है आओ जाने मर्दानगी क्या है–

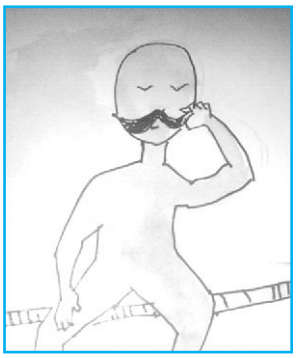

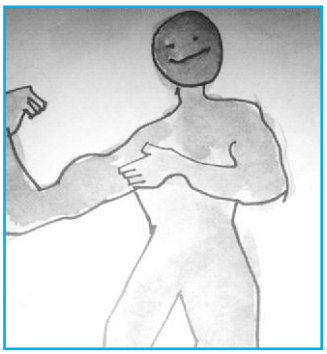

समानता के साथी मर्दानगी वाले अभ्यास में मर्दानगी के बारे में सकारात्मक जानकारी व समझ बढ़ा पायेंगे जिससे कि उन्हें अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में मर्दानगी के प्रभाव असरों को समझने में मदद मिल सके। साथी बतायें कि मर्दानगी कहते ही उनके दिमाग में कौन से शब्द आते हैं ? इन बातों को जानने के लिए गतिविधि 01 में जायें–

मर्दानगी क्या है ? गतिविधि– 01

(अ) नीचे दिये गये रिक्त स्थान में समानता के साथी उन शब्दों को लिखें जो उन्होंने सुने हैं या आये दिन उनका उपयोग बात व्यवहार में करते हैं।

मर्दानगी से जुड़े शब्दों को लिखें ?

_____

_____

(ब) समानता के साथी द्वारा जो मर्दानगी के शब्द उपर लिखे गये हैं उन्हीं को आधार मानकर मर्दानगी की एक परिभाषा लिखें जो आपको उचित लगे।

मर्दानगी की परिभाषा लिखें

_____

_____

_____

_____

सार : इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारे समाज में विभिन्न संस्थाएँ मर्दानगी के निर्माण में अहम् भूमिका निभाती हैं। ज्यादातर संस्थाओं का योगदान 'धौसपूर्ण मर्दानगी' तैयार करने में होता है तथा उसे दिखाने तथा सबसे ज्यादा स्वीकार्य बनाने में मदद करती हैं। ये संस्थायें दूसरे किस्म के मर्दानगियों को समाप्त करने या दोयम दर्जा दिलाने में भी काम करती हैं। इन संस्थाओं का मर्दानगी निर्माण में अपना अहम् हित होता है, जैसे स्कूल/कालेज में संगठित मर्दानगी का खेल के लिए उपयोग, वैसे ही सेना का उपयोग जंग जीतने के लिए या अधिक से अधिक पुरुषों का सेना में भर्ती करने के लिए किया जाता है।

समानता के साथी ने उपर दिये गये सवालों पर मर्दानगी से जुड़े शब्दों को लिखा व मर्दानगी की एक परिभाषा को लिखकर तैयार किया। समानता के साथी का धन्यवाद। अब समानता के साथी गतिविधि– 02 में जाकर देखें कि मर्दानगी सामाजिक है या जैविक– ?

मर्दानगी सामाजिक है न कि जैविक गतिविधि– 02
नीचे आपको दो चित्र दिखाई दे रहे हैं। आपको इन चित्रों को देखकर दिये गये प्रश्नों के जवाब लिखने हैं–

1. क्या हम सभी इन चित्रों में फिट होते हैं–? नहीं तो क्यों–?

_____
_____

2.क्या पुरुष में ये चारित्रिक गुण/विशेषताएं हमेशा मौजूद रहती हैं–? या बदलती हुई दिखती हैं–?

_____

_____

हमारे समाज में प्रायः कई बार लोग मर्दानगी को कुदरती मान लेते हैं जो गलत है मर्दानगी सामाजिक है, इसके स्वरूप में बदलाव आता रहता है। मर्दानगी स्थाई नहीं है। कोई भी व्यक्ति हमेशा सत्तावान नहीं रहता है। मर्दानगी हमेशा अपने से कमजोर पर हावी होती है जैसे– एक पुरूष अपने काम में अपने बॉस के आगे नम्र होकर रहता है, अपने बॉस की हर आज्ञा का पालन करता है लेकिन वही पुरूष जब घर आता है तब वह अपनी पत्नी व बच्चों के आगे सत्तावान हो जाता है। यानि कि उसकी मर्दानगी सत्तावान हो कर काम करने लगती है।

मर्दानगी का दूसरा पहलू यह भी है कि मर्दानगी हमेशा अपने को कमजोर महसूस करती है इसलिए अपनी सत्ता बनाये रखने के लिए वह हिंसा का सहारा लेती है जो कि गलत है।

समानता के साथी ने मर्दानगी से जुड़े चित्रों के बारे में अपनी राय लिखी। साथी का धन्यवाद।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास– 14 में जान पायेंगे कि मर्दानगी का सामाजीकरण कैसे होता है।

14.मर्दानगी का सामाजीकरण

इस अभ्यास में समानता के साथी मर्दानगी का सामाजीकरण किस तरह होता है नीचे दिये गये लेख में पढ़ें –

मर्दानगी की संरचना में लड़कों को बचपन से ही सिखाया जाता है कि उन्हें किस तरह का व्यवहार करना है जिससे मर्दानगी का निर्माण होता रहे। मर्दानगी का सम्बंध कुछ खास विशेषताओं और गुणों से है जो परम्परागत रूप से मर्दों के साथ जोड़े गये हैं। मर्दानगी एक सामाजिक परिभाषा है जो पुरूषों को नियत्रंक, सत्ताधारी व हिंसक के रूप में स्थापित करती है। मर्दानगी समाज द्वारा रचित है, तथा समाज द्वारा मर्दो के व्यवहार, चारित्रिक विशेषताएं, तौर तरीके, रवैए आदि तय किये जाते हैं तथा सिखाए और सीखे जाते हैं। मर्दानगी एक सामाजिक संरचना है जो समय के अनुसार एक समुदाय से दूसरे समुदाय में बदलती रहती है जिसकी वजह से मर्दानगी कई रूपों में दिखाई देती है। समाज में विभिन्न तरह की मर्दानगी की संकल्पनाएँ हैं। पुरुष या लड़का बनने के कोई एक रास्ते नहीं हैं और मर्दानगी से जुड़ी सत्ता का कोई एक ढाँचा नहीं है जैसे कि निम्नलिखित ढ़ांचों में विभिन्न प्रकार की मर्दानगी की संरचना होती है –

> लड़की उम्र में बड़ी हो तो मर्दानगी को ठेस लग जाती है लड़की लंबाई में बड़ी हो तो भी मर्दानगी को चोट लग जाती है, लड़की अधिक कमाती हो तो मर्दानगी हर्ट होती है, लड़की आग्र्यूमेंटेटिव हो तो मर्दानगी को ठेस, राह चलते समय लड़की दो कदम आगे चलने लगे तो मर्दानगी घायल हो जाती है, लड़की 'न' कह दे तब तो पक्का मर्दानगी छलनी हो जाती है, बिना पूछे या एक्सप्लेन किये पत्नी किसी पुरूष दोस्त से बात कर ले तो डाह के मारे मर्दानगी दांत पीसने लगती है, फेसबुक पे लड़की की फोटो पे अधिक लाइक आने से भी अधिकांश मर्दों का कलेजा भभक उठता है.....मतलब ये कि स्त्री पुरुषों से कमतर रहे, उनके नियंत्रण में रहे, उनपे निर्भर रहे और उनका एहसास मानती रहे तभी मर्दानगी साबित होती है।
>
> मर्दानगी (मैस्क्युलिनिटी) एक कुंठित श्रेष्ठताबोध है। इसका शारीरिक बल से कोई लेना देना नहीं बल्कि ये मानसिक दुर्बलता है, रोग है।

1. नस्ल, धर्म, जाति, खूनी रिश्ते या भौगोलिक स्थिति
2. लैंगिक पहचान, उदाहरण – समलैंगिक पुरुष, विषमलैंगिक पुरुष
3. जीवन चक्रों में बदलाव उदाहरण – बच्चे, जवान, बूढ़े इत्यादि।
4. विशेष परिस्थितियाँ उदाहरण– अपंगत्व, बीमारियाँ एच.आई.वी. ग्रसित पुरुष, इत्यादि।
5. सामाजिक संस्थाओं द्वारा बनाया गया स्वरूप उदाहरण– पंचायत, नेता, समुदाय

के प्रमुख, न्याय पंचायत के नेता इत्यादि।

6. आक्रामक, दबावपूर्ण और अन्य वैकल्पिक आधारों पर उदाहरण– गांव के दबंग, युवाओं के अनौपचारिक लीडर, पॉलीटीकल लीडर, टीम के लीडर इत्यादि।
7. एक ही व्यक्ति में मर्दानगी की अनुभूति बदलती रहती है।
8. मर्दानगी का रिश्ता सत्ता से है।
9. सत्ता के या सत्ताहीनता के अनुभव से मर्दानगी की अभिव्यक्ति बदलती रहती है।

अतः मर्दानगी का सम्बंध सत्ता से है तो तब हम कह सकते हैं कि मर्दानगी कई प्रकार की होती है जैसे–

1. धौंसपूर्ण या शासकीय मर्दानगी –

शासकीय का अर्थ है सम्पूर्ण नेतृत्व या शासन। धौंसपूर्ण या शासकीय मर्दानगी पूरी तरह कब्जा करने वाली या दूसरों पर सत्ता के इस्तेमाल से है क्योंकि यह शासन करती है और नियंत्रण करती है। यह हमेशा अपने आधीन या कमजोर पर लागू होती है जो हमें स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जो मर्द अपेक्षित ऊंचे मापदण्ड तक नहीं पहुंच पाते उन्हे जनाना कहा जाता है और मजाक उड़ाया जाता है। यहां तक कि उनका यौन शोषण भी किया जाता है। इस प्रकार की मर्दानगी उन पुरूषों को समाज से दूरी बनाये रखने को मजबूर कर देती है जो कि उनके विकास के लिए भी नकारात्मक है।

2. सामूहिक मर्दानगी–

समूह के रूप में ताकत का प्रदर्शन है। चाहे वह सड़क जाम का हो या किसी भी तरह का शक्ति प्रर्दशन हो, चाहे वह अपने अधिकारों के लिए ही हो। जैसे–एक समूह दूसरे समुहों के साथ मर्दानगी का प्रदर्शन करते हैं जिससे कि दूसरे को कमज़ोर साबित किया जा सके, जबकि वास्तव में इस तरह की मर्दानगी भी समाज के विकास के लिए बाधक है।

3. समानान्तर/वैकल्पिक मर्दानगी–

यदि हम जेंडर समानता पर विश्वास करते हैं तो हममें से प्रत्येक को सकारात्मक पुरूष तथा सकारात्मक स्त्री का संतुलित तालमेल बनाना होगा और यह तभी संभव है जब हम अपने सत्ता और दबाव के लालच को त्याग दें, ताकत के गलत इस्तेमाल को छोड़ दें व

अपनी शक्तिहीनता, गुलामी और दबने की आदत से छुटकारा पा लें। इसके लिए हमें स्वंय, रिश्तों, परिवार, समुदाय और अन्य सभी संस्थाओं में बदलाव लाना होगा। हमें अध्यात्म और विकास, अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र, विज्ञान और नैतिकता के बीच अन्तर विरोधों पर सवाल खड़ा करना होगा तथा उसे दूर करना होगा। अब तक मर्द समस्या का हिस्सा रहे हैं और अब उन्हें समाधान का हिस्सा बनना होगा। इस प्रकार वैकल्पिक मर्दानगी जेंडर भूमिकाओं व सत्ता संरचना में बदलाव की बात करती है।

धौंसपूर्ण मर्दानगी व हिंसा का सम्बन्ध–

धौंसपूर्ण मर्दानगी व हिंसा के सम्बंध को समझने के लिए समानता के साथियों को नीचे कुछ परिस्थितियाँ दी गई हैं। साथीयों को अपनी समझ के आधार पर लिखना है कि क्या हुआ होगा ?

परिस्थितियाँ इस प्रकार हैं–

1. कस्बे के ढाबे में लड़कों का दो समूह/गैंग आमने–सामनं बैठे हैं।

दोनों समूहों/गैग से एक–एक व्यक्ति की आंख टकरा गई और उनमें से एक बड़बड़ाने लगा।
आगे क्या हुआ .?

आपको लिखना है आगे क्या हुआ होगा ?

2. दीनापुर में क्रिकेट टूर्नामेन्ट हो रहा था, फाइनल मैच में रामपुर की टीम का मुकाबला जिस टीम से हो रहा था, वह जीत रही थी, क्योंकि रामपुर की टीम पर जीतने का दबाव था, इसलिए दूसरी टीम को लगा.?

आपको लिखना है आगे क्या हुआ होगा ?

3. गांव में पंचायत चुनाव के प्रचार में एक ही जगह पर दो प्रधान प्रत्याषी एक ही समय पहुँच गये, माहौल. कैसा होगा .....?

आपको लिखना है आगे क्या हुआ होगा ?

4. रामप्रसाद ने रात को अपने खेत में पानी लगाया था,
सुबह उसने देखा कि लालू प्रसाद ने उसके खेत का पानी तोड़कर अपना खेत सींच लिया। अब नहर में पानी भी नहीं है.....?

आपको लिखना है आगे क्या हुआ होगा ?

5. बस की खिड़की से गम्भीर ने अपना रूमाल सीट पर छोड़ दिया। और पान खाने बाहर आ गया। बस के अन्दर आने पर उसने देखा राजनाथ बैठा है.....?

आपको लिखना है आगे क्या हुआ होगा ?

समानता के साथियों को उपर दिये गये पांचों परिस्थितियों में क्या हुआ होगा। संक्षिप्त में लिखना है–

परिस्थिति 1—— ——
परिस्थिति 2—— ——
परिस्थिति 3—— ——
परिस्थिति 4—— ——
परिस्थिति 5—— ——

अक्सर जब पुरुष–पुरुष से उलझ पड़ते हैं, उसके पीछे धौंसपूर्ण मर्दानगी की सोच हो सकती है। कई बार दुःख को सिद्ध करने के लिए हम यह रास्ता चुनते हैं। कई बार इस धौंसपूर्ण मर्दानगी की अभिव्यक्ति से खुद का नुकसान उठाना पड़ता है और स्वयं को खतरे में डाल देते हैं। बाद में कभी–कभी पछतावा भी होता है। स्वार्थवश ऐसा भी होता है कि कई बार मर्दानगी को सिद्ध करने के नाम पर पुरुष–पुरुष को उलझाया जाता है। (जातिगत, धार्मिक, सामाजिक घटना में युवा का उपयोग)

समानता के साथी ने अभ्यास पढ़ा और अपने अनुभवों के आधार मर्दानगी के बारे में जवाब लिखा। जिसके लिए समानता के साथी का धन्यवाद। अब समानता के साथी अभ्यास–15 में जाकर देखें कि मर्दानगी का असर महिलाओं व पुरूषों पर किस तरह पड़ता है।

15.मर्दानगी का महिलाओं एंव पुरूषों पर पड़ने वाला असर

समानता के साथी बतायें कि क्या ये मर्दानगी है ? और मर्दानगी का असर महिलाओं और पुरूषों पर किस तरह का पड़ता है ? साथी अभ्यास में जुड़कर अपने विचार व्यक्त करें ।

साथी एक खेल में भाग लें जो साथी सोच समझकर सहमत/असहमत/कुछ पता नहीं जवाब देंगे वो आगे बढ़ेंगे जो साथी बिना सोचे समझे जवाब देंगे उन्हें कुछ निधारित सजा तय की गई है। साथी दिये गये विकल्पों पर टिक सही का निशान लगायें –

1. असली मर्द तो वही है, जो सब पर नियन्त्रण कर सके पत्नी को पीटना ठीक है तभी उसे पता चलता है कि मर्द क्या चीज है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

2. मुझे लगा समाज में सभी तो अपनी पत्नीयों को पीटते हैं इसलिए कभी कभी मैं भी पीटता हूँ क्योंकि ये मर्दों का हक है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

3. ये समाज में पुरूषों के द्वारा बनाई गलत सोच है, कि जब मर्द हिंसात्मक दबदबा बनाये तभी मर्द कहलाता है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

4. मर्द तो वही है जो दिन में जब तब किसी से भिड़ ना जाये या दो चार हाथ किसी पे जड़ ना दे।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

5. लड़कियों के साथ छेड़छाड़ व मजाक करने का हक तो मर्दों को समाज से मिला है नहीं तो हमें गबरू जवान कौन कहेगा।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

6. मर्द का मतलब यह नहीं कि वह ताकत के बल पर हिंसा करे या दूसरों को डरा के रखे, ये मर्दों की गलत सोच है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

7. यदि लड़कियां प्यार से न मानें तो उन्हें विवश कर दो तभी उन्हें पता चलेगा कि मर्दों से पंगा लेना कितना खतरनाक है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

8. भाई, समाज कहता है मर्द एक भंवरा है किस फूल पर नहीं बैठता, यदि लड़की समझ रही है मैं उसका आजीवन साथी बन जाऊँगा तो वो उसकी भूल है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

9. समाज में सही के साथ– साथ बहुत कुछ गलत धारणाएं भी हैं लेकिन मर्द समाज के नाम पर उन गलत धारणाओं को ढोते रहें ये सबसे ज्यादा गलत है?

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

10 मैं मर्द हूँ जिस दिन बाहर से मार खाकर आ गया या हार कर आ गया समझो घर में मुहँ नहीं दिखाऊंगा भले ही आत्महत्या ही क्यों न करनी पड़े।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

11. मर्द अगर समाज की कसौटी में खरा ना उतरे तो उसका मरना ही अच्छा है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

12. असली मर्द वही है जो ना तो अपने साथ हिंसा करता ना ही दूसरों के साथ।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

13. औरत जात होकर मुझसे बहस कर रही है, उसे नहीं पता मैं मर्द हूँ मर्द।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

14. मन करता है अपनी पार्टनर के साथ अपना दु:ख साझा करू। परन्तु क्या करूं कहीं वो मुझे कमजोर न समझने लगे इसलिए कठोर बना रहता हूँ।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

15. असली मर्द को फर्क नहीं पड़ता दूसरे मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं फर्क तब पड़ता है जब लगता है मुझसे गलती क्या हुई।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

16. हम उसके आगे झुक नहीं सकते, हम मर्दों ने मूँछे नहीं मुढ़वा ली हैं।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

17. समाज में मर्द के लिए कहा गया है, ओखल में सर डाल दिया है तो मूसल से क्या डरना।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

18. मर्द ये सोचने लगे हमें कब क्या करना है। ये सोच कर करना चाहिए जिससे कि किसी के साथ हिंसा न हो।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

19. जिस तरह तू मेरे सामने अपनी जुबान चला रही है तुझे पता है तेरे सामने मर्द खड़ा है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

20. तू जो बोल रही है ठीक बात है पर मैं कैसे माँनू , समाज मेरी मर्दानगी पर शक करने लगेगा इसलिए अपनी बकवास बन्द कर।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

21. यदि मर्द डरा धमका कर दूसरों को चुप करा रहे हैं तो ये मर्दों पर लगने वाला कलंक है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

22. बाहर काम की जगह व घर में दाखिल होते ही महिलाएं व बच्चे भयभीत ना हों तो, मर्द बनना ही बेकार है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

23. समाज कहता है मर्द को डर–भय तो बनाना पड़ेगा नहीं तो महिलाएं व बच्चे सर पर चढ़ने लगेंगे।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

24. जो मर्द डर या भय बनाकर अपना रूतबा बनाना चाहते हैं उन्हें दूसरों से नफरत के अलावा कुछ नहीं मिलता।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

25. मर्द भले ही शरीर या जानकारी से कमजोर हो परन्तु उसे अपनी कमजोरी नहीं बतानी है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

26. मर्द को घर परिवार समाज चलाना है, यदि उसने अपने को कमजोर बता दिया तो समाज में मान सम्मान गिर जायेगा।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

27. असली मर्द वह है जो अपनी कमजोरी विवशता को दूसरों के साथ साझा कर सके, इसमें उसे कोई आत्मग्लानि महसूस न हो

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

28. मर्द का दूसरा नाम जीत है, उसे जीत के अलावा और कुछ नहीं सोचना चाहिए

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

29. भावनाएं मर्द में भी हैं। यदि उन्हें सबके सामने उजागर करने लगें तो डर है कहीं घर की मुर्गी दाल बराबर ना हो जायें

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

30. सही मायने में मर्द वह है जो मर्दानगी से बाहर एक दूसरे का सम्मान/गरिमा व पहचान के बारे में सोचता है।

सहमत असहमत कुछ पता नहीं

समानता के साथी ने मर्दानगी के असर प्रभाव को जानने व समझने के लिए खेल में भाग लिया उनका धन्यवाद।

समानता के साथी–जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

समानता के साथी धौंसपूर्ण मर्दानगी से उभरने के लिए क्या कर सकते हैं? जिससे कि स्वयं के साथ भी हिंसा न हो और दूसरों के साथ भी हिंसा न हो।

_____
_____

उत्तर माला– मर्दानगी का महिलाओं व पुरूषों पर पड़ने वाला असर

1. आपकी की सजा – निर्जीव वस्तु (डस्टबीन) हैं, दरवाजे पर पड़े रहें, आगे नहीं जा सकते।

2. आपकी की सजा – भटकती आत्मा है जानवर (बन्दर) बनकर रहना है आप आगे नहीं जा सकते हैं।

3. कोई सजा नहीं – इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

4. आपकी की सजा – आप बीच रास्ते में पड़े (पत्थर) हो, जो किसी से भी टकरा जाता है। आप आगे नहीं जा सकते।

5. आपकी की सजा –दिमाग का इस्तेमाल नहीं करते, जानवर (गधा) बनकर रहना है आप आगे नहीं जा सकते हैं।

6. कोई सजा नहीं – इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

7. आपकी की सजा – आप बीच चौराहे में बना (गढ्ढा) हो, जिसमें कोई भी गिर कर मर सकता हैं आप आगे नहीं जा सकते।

8. आपकी की सजा – आप तांगे में कसे (घोड़ा) हो जो सिर्फ बंधी पट्टी के इशारे पर चलता है। आप आगे नहीं जा सकते हैं।

9. कोई सजा नहीं – इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

10 आपकी की सजा – आप तो विस्फोटक (पटाखा) हैं घर में फूटे या घर से बाहर नुकसान ही होना है आप आगे नहीं जा सकते।

11. आपकी की सजा–आप एक (तितया) हैं जिस तरह एक तितया किसी को काटने जाती है तो सारे तितया उसको काटने झपट पड़ते हैं। आप आगे नहीं जा सकते हैं।

12. कोई सजा नहीं – इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

13. आपकी की सजा – आप तो (नीम) के पत्ते हो कितना ही शक्कर डालो, फिर भी कड़वा रहेगा। आप आगे नहीं जा सकते।

14. आपकी सजा – आप एक मुर्गा हो, भोर होने पर आपको बांकना ही है भले ही घर के लोग सुनें या ना सुनें, आप आगे नहीं जा सकते हैं।

15. कोई सजा नहीं – आप इन्सान हैं, इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

16. आपकी सजा – आप तो बोतल में डली कुत्ते की पूँछ हो जो कभी सीधी नहीं हो सकती, आप आगे नहीं जा सकते।

17. आपकी सजा – आप एक कोल्हू के बैल हो जिसे लगता है शायद मुझे सिर्फ चक्कर काटना है आप आगे नहीं जा सकते हैं।

18. कोई सजा नहीं – आप इन्सान हैं, इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

19. आपकी सजा – आप तो सूखा नोक दार कांटा हैं, जिसका स्वभाव सिर्फ चुभना है, आप आगे नहीं जा सकते।

20. आपकी सजा – आप एक बिल्ली हो जिसे रस्सी भी सांप की तरह दिखाई देती है उसी पर झपट पड़ता है, आप आगे नहीं जा सकते हैं।

21. कोई सजा नहीं – आप इन्सान हैं, इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

22. आपकी सजा – आप तो दू धारी (ब्लेड) हैं, जिससे हमेशा कटने/छिलने का डर रहता है, आप आगे नहीं जा सकते।

23. आपकी सजा – आप एक फन उठाये सांप हो जिससे सभी डरे सहमे रहते हैं, आप आगे नहीं जा सकते हैं।

24. कोई सजा नहीं – आप (इन्सान) हैं, इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

25. आपकी सजा – आप तो सूखे हुए दरख्त (पेड़) हैं, जिसकी जड़ भी सूखी है। जो जरा सी हवा के झोंके से गिर सकता है।

26. आपकी सजा – आप एक पैर उपर करके सोने वाले पक्षी (तितेरी) हो, जिसमें यह डर बना रहता है कि आसमान कभी भी गिर सकता है।

27. कोई सजा नहीं – आप इन्सान हैं, इसलिए आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

28. आपकी सजा – आप सब्जी (करेला) हैं। भले ही कितने गुणी हों लेकिन आपकी कड़वाहट से लोग मुहॅ सिकोड़ कर दूर होते हैं।

29. आपकी सजा – आप नकली रंग चढा एक लोमड़ी हैं, जो अपने को शेर बता कर जंगल का राजा साबित होने की कोशिश करता है।

30. कोई सजा नहीं – आप (इन्सान) हैं, आप अगले दरवाजे में जा सकते हैं।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास–16 में जानें कि मर्दानगी एवं सामाजिक संस्थाएं कौन–कौन सी हैं, आओ जानें–

16.मर्दानगी एवं सामाजिक संस्थाएं

समानता के साथी नीचे दिये गये अभ्यास को पढ़ें व जानें कि हमारे समाज में कौन सी सामाजिक संस्थाएं हैं, जो मर्दानगी को बनाये रखने के लिए काम करती हैं, या उनके द्वारा मर्दानगी को पोषित करने के लिए काम किया जाता है पढ़ें–

हमारे समाज में विभिन्न संस्थाएँ मर्दानगी के निर्माण में अहम् भूमिका निभाती हैं। ज्यादातर संस्थाओं का योगदान 'धौंसपूर्ण मर्दानगी' तैयार करने में होता है तथा उसे दिखाने तथा सबसे ज्यादा स्वीकार्य बनाने में मदद करती हैं। यह संस्थायें दूसरे किस्म के मर्दानगियों को समाप्त करने या दोयम दर्जा दिलाने में भी काम करती हैं। इन संस्थाओं का मर्दानगी निर्माण में अपना अहम् हित होता है जैसे स्कूल/कालेज में संगठित मर्दानगी का खेल के लिए उपयोग, वैसे ही सेना का उपयोग जंग जीतने के लिए या अधिक से अधिक पुरुषों को सेना में भर्ती करने के लिए।

सभी संस्थाएं अपनी–अपनी तरह से मर्दानगी की धारणाओं को बनाती हैं। कुछ संस्थाएं धौंसपूर्ण मर्दानगियों को ज्यादा प्रकाश में लाती हैं और समाज में मर्दानगी की धौंसपूर्ण छवि को ''हासिल करने'' के रुप में निर्माण करती हैं, जैसे आर्मी, पुलिस, मॉडर्न–मीडिया, राजनीति इत्यादि। कुछ संस्थाए धारदार उदारता को जगह भी देती हैं, पर सभी संस्थाएं मर्दानगी की धारणाओं को बनाने में योगदान देती हैं और उसे बनाये भी रखती हैं।

सत्ता संदर्भ में और विविध संस्थाओं के आपस में यह तय होना कि 'धौंसपूर्ण मर्दानगी स्वीकारी जायेगी या नहीं, उसमें दोहरापन हो सकता है। 'धौसपूर्ण मर्दानगी' को आमतौर पर बुरा ही कहते हैं।

मर्द व मर्दानगी–

मर्दानगी सिक्के का ही दूसरा पहलू जनानगी है। एक तरह से ये दोनों एक दूसरे से उलट हैं। औरत वह है जो मर्द नहीं है। ज्यादातर समाजों में मर्दानगी और जनानगी इसी विरोधी स्वरूप में देखी जा सकती हैं। यदि मर्दों को गुस्सा करने की इजाज़त है तो औरतों को धीरज रखना चाहिए, वगैरह। एक के बगैर दूसरा कारगर नहीं हो सकता। यदि मर्द धौंस जमाना चाहें, लेकिन औरतें उसे सहने से इन्कार कर दे तो ''शान्ति'' और ''मेलजोल'' भंग हो जाएगे। इसी के साथ–साथ समाज में मर्दों की छवि, उनका दर्जा और गुण मानक हैं और औरतों के लिए जरूरी है कि वे उस मानक के अनुसार अपने आपको ढालें। कोई भी व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरूष सब में मर्दानगी और जनानगी के गुण पाए जाते हैं। मुलायमियत वाले मर्दों का, जो कि आक्रामक और दबावपूर्ण नहीं हैं, मजाक उड़ाते हुए, उन्हें 'जनाना' कहा जाता है। ये सोच सामाजिक सन्तुलन को

बिगाड़ती है। समाज में इस बात पर ज्यादा जोर दिया जाता है कि महिलाओं पर दबाव बना रहे। दूसरी ओर जो औरतें दबंग और सशक्त होती हैं उन्हें मर्दानी कहा जाता है। हिजड़े जैविकीय रूप से मर्द होते हैं, पर चाल ढाल और बर्ताव में जनाने होते हैं। इसका मतलब है मर्दानगी और जनानगी जैविकीय श्रेणियां नहीं हैं। हालांकि इन गुणों का औरत और मर्द के जिस्म से कोई वास्ता नहीं है, समाज में इन्हें इस सख्ती के साथ लागू किया जाता है कि वे औरतों व मर्दो के प्राकृतिक गुणों के रूप में नज़र आने लगती हैं।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास (द) में जाकर देखें कि यौनिकता लैंगिकता क्या है? आओ जानें।

(द) यौनिकता / लैंगिकता

यौनिकता / लैंगिकता गतिविधि 01

समानता के साथी बतायें कि उन्हें यौनिकता / लैंगिकता शब्द सुनते ही दिमाग में क्या आता है। उसे आप नीचे दिये बॉक्स में लिखें, जैसे –

1.यौन क्रियाओं के बारे में बतायें?

2.यौन क्रिया के दौरान कौन–2 सी भावानाएं आती हैं?

3.इनकी पहचान क्या–2 है?

4.इससे जुड़ी मान्यताएं कौन–2 सी हैं?

यौन क्रियायें कौन–2 सी हैं?	यौन क्रिया के दौरान की भावनाएं?	यौन क्रिया करने वालों की पहचान ?	यौनिकता से जुड़ी मान्यताएं ?

समानता के साथी ने उपरोक्त कार्य को पूर्ण किया उनका धन्यवाद। अब आगे जानें यौनिकता व लैंगिकता का मतलब क्या है।

यौनिकता–

समानता के साथियों को यौनिकता एवं लैंगिता के बारे में जानना जरूरी है। क्योंकि यौनिक व्यवहार जेंडर आधारित भेदभावपूर्ण तरीके से संचालित होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि– यौनिकता एक जैविकीय इच्छा की सामाजिक संरचना है। यौनिकता व्यक्तिगत अनुभव, जैविक, जेण्डर भूमिका, शक्ति सबंध, साथ ही साथ अन्य तत्व जैसे– उम्र, सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक मानक, मूल्य, महिला–पुरूषों की निर्धारित भूमिका, स्थिति आदि द्वारा संचालित होती है। उदाहरण के लिए महिलाओं के यौनिक संबंधों में निर्धारित भूमिका

प्रायः निष्क्रिय होती है। महिलाओं को अपने यौनिक साथी चुनने के बारे में निर्णय लेने के लिए, यौनिक क्रिया प्रकृति व समय तय करने के लिए, अपने से अनचाहे गर्भ व रोग से बचाने के लिए तथा सबसे ज्यादा स्वयं की यौन इच्छा को पहचानने व स्वीकारने के लिए उत्साहित नहीं किया जाता है। दूसरे तरफ पुरूष पुरूषत्व को प्रमाणित करने के लिए सामाजिक रूप से बनाए जाते हैं। पुरूष प्रथमतः यौनिक सक्रियता के बारे में सोचने के लिए उत्साहित किये जाते हैं। महिलाओं की यौनिक आनन्द को आमतौर पर परुष की यौनिक शक्ति व क्रियाशीलता को प्रमाण के रूप में आंका जाता है। यह प्रमाण उर्वरता विशेष रूप से बच्चे पैदा करने तथा लड़का पैदा करने की क्षमता के रूप में भी देखा जाता है। महिला और पुरूष मिलकर जेण्डर भूमिका को पुर्नस्थापित करते हैं जो प्रजनन स्वास्थ्य व गर्भ निरोधक व्यवहार के परिणामों को प्रभावित करता है। महिलाओं के अनचाहे गर्भ या असुरक्षित गर्भपात महिलाओं के स्वास्थ्य को बड़े जोखिम में डालते हैं। जिससे महिलाएं उपेक्षित स्वास्थ्य, जेण्डर आधारित शोषण व हिंसा, नुकसानदेह व्यवहार जैसे बलात्कार या जबरन यौन सम्पर्क, यौन संचारित रोगों द्वारा बीमारी के शिकार हो जाती हैं। पुरूषों में जल्दी यौनिक क्रिया प्रारम्भ करने हेतु दिया गया दबाव व बहुसाथी के साथ यौन सम्पर्क की अनुमति भी उन्हे यौन संक्रमण व एड्स के लिए जोखिम में डालती है लेकिन अन्ततः महिलाएं ज्यादा जोखिम ग्रस्त हैं।

हम देखते हैं कि हर समाज में यौनिकता को नियंत्रित करने का प्रयास किया जाता है, इस नियंत्रण को बनाये रखने के लिए महिला और पुरुष की यौनिकता/लैंगिकता पर अलग–अलग विचार बनाई गई हैं। ये विचार धारायें महिलाओं की यौनिकता को गंदा, कमजोर एवं दोयम दर्जे की मानती हैं तथा अस्वीकार करती हैं। महिलाओं की यौनिकता पर दोहरे मापदण्ड अपनाना या अस्वीकार करना पूरी तरह से अलोकतांत्रिक, अनुचित और अन्यायपूर्ण है। चूँकि यह समाज द्वारा बनाया गया है अतः समाज के अभिन्न अंग के रूप में हमारी जिम्मदेारी है कि हम इसे बदलें और हम अपनी समझ व व्यवहार के माध्यम से इसे बदल भी सकते हैं।

लैंगिकता–लैंगिकता एक बहुआयामी विचार है जिनके कई आयाम हैं। लैंगिकता में लैंगिक व्यवहार, ज्ञान, सामाजिक और जेण्डर भूमिका व पहचान तथा सामाजिक–सास्ंकृतिक मान्यताएँ शामिल हैं। लैंगिकता केवल प्रजनन से जुड़ा नहीं है। यह पूरे शरीर से जुड़ा है। हमारे समाज में लैंगिकता में काफी विविधिता है और विविधता का आदर के सिद्धान्त के अनुसार हमें उनको स्वीकार करने की जरूरत है। जिनकी लैंगिकता से जुड़े विचार हमसे नहीं मिलते हैं। उन्हें भी सम्मान व पहचान देना जरूरी है।

हमारी लैंगिकता को लेकर समाज में अनेक तरह के मिथक और भ्रम हैं, जिनका हमारे व

पार्टनर/साथी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। इससे बचने के लिए आवश्यक है कि हमें मिथक और भ्रम का तथ्यपरक विश्लेषण करना चाहिए व वैध–स्रोत की (डाक्टर, काउन्सलर) की मदद लेनी चाहिए।

उत्तरमाला – यौनिकना एवं लैंगिकता

आपके सही उत्तर यौनिकता एवं लैंगिकता गतिविधि 01

यौन क्रिया – संभोग, सहलाना, हस्तमैथुन, मुखमैथुन, चूमना, बलात्कार

भावनाएँ – आनन्द, ख्वाब, दुःख, तनाव, गंदा, गुप्त आकर्षण, पापपूर्ण

पहचान – रक्तस्राव, स्खलन वीर्य, समलैंगिक, गे, हेट्रासेक्सुअल, लेस्बियन

मान्यताएँ/विष्वास/ भ्रम – हस्तमैथुन से कमजोरी आती है।, महिलाओं की यौन इच्छा परूषों से अधिक होती है।, लड़की को शादी के पहले सेक्स नहीं करना चाहिये।, मुख और गुदा सेक्स अप्राकृतिक है।, वीर्य की एक बूंद खून की हजार बूंदो के बराबर।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास 17 में जाकर देखें कि शरीर पहचान व विविधता क्या है, आओ जानें।

17.शरीर पहचान व विविधता

समानता के साथी इस अभ्यास में शरीर पहचान व विविधता के बारे में सकारात्मक जानकारी व समझ बढ़ा पायेंगे और समझ पायेंगे कि इसे समझना जरूरी क्यों है। अतः हम कह सकते हैं कि हमें अपने शरीर की जानकारी का होना व शरीर में बदलाव की सही जानकारी होना किशोरावस्था से ही आवश्यक है। इस बदलाव के दौरान सन्तुलित खान पान, स्वच्छता, आवश्यक दवाईयां, संसाधनों की जानकारी जरूरी है और उचित सलाह समय समय पर मिलना आवश्यक है। समानता के साथी आगे शरीर छवि के बारे में जाने–

शरीर की छवि–मानव शरीर के बारे में हमारे समाज में अलग–अलग तरह की छवि बनाई गई है। जिसमें महिलाओं और पुरूषों को यह बताया जाता है कि शरीर के किन अंगों के बारे में खुलकर बात करना गलत है। इतना ही नहीं महिलाओं को पुरूष शरीर तथा पुरूषों को महिला शरीर के बारे में भी सही व पूरी जानकारी नहीं मिलती। जिससे हमारे समाज में इनके चलते अनेक भ्रांतिया व्याप्त हैं जिसका बुरा असर महिलाओं व पुरूष दोनों के स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। जैसे महिलाओं के लिए माहवारी के समय बात को छुपाये रखना तथा पुरूषों के लिए गुप्तरोगों के नाम से बातों को दबाये रखना, जबकि इन बातों का सामने आना व सही सलाह लेना आवश्यक है।

महिला शरीर–महिला शरीर कुछ मामलों में पुरूष के शरीर से भिन्न होता है जिसकी जानकारी होना जरूरी है। महिलाओं की शारीरिक बनावट इस प्रकार होती है जिसमें स्तन, योनि, गर्भाशय, अडांश्य, वल्वा, भगोष्ठ, मूत्रद्वार, झिल्ली व टिटनी उन्हें पुरूषों के शरीर से अलग बनाते हैं। लड़कियॉ 9–16 वर्ष की आयु के बीच अपने शरीर में बदलाव अनुभव कर सकती हैं। कुछ लड़कियों में ये बदलाव अन्य लड़कियों की तुलना में जल्दी शुरू हो सकते हैं जैसे बहुत कम समय में लम्बाई का बढ़ना। किशोरावस्था में लड़कियों के स्तन व कूल्हे बढ़ने लगते हैं, बाहों के नीचे और जांघों के बीच में बाल आने लगते हैं। चेहरे पर मुहांसे भी निकल सकते हैं। यह सभी बदलाव प्राकृतिक हैं। ये बदलाव हमारे शरीर में उपस्थित कुछ हार्मोन (अंतः स्रावी द्रव्य), खान–पान एवं अनुवांशिक घटकों से प्रेरित होते हैं जिसमें महिला की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी शामिल है। सामन्यतः ये बदलाव 17–18 वर्ष की आयु

तक समाप्त हो जाते हैं और लड़की का शरीर एक वयस्क महिला के रूप में विकसित हो जाता है। लड़कियों में मासिक धर्म 9 से 16 वर्ष के बीच होना प्रारम्भ हो जाता है जिसे किशोरावस्था का अन्तिम चरण माना जाता है, जिसके बाद शरीर यौनिक रूप से परिपक्व होने लगता है। ये बदलाव या प्रकियायें प्राकृतिक हैं।

पुरूष शरीर–पुरूष शरीर में बाहरी अंग लिंग व अण्डकोष की थैली लटकी रहती है तथा अन्दर शुक्रांणु बनते हैं। लड़कों के शरीर में लगभग 9 से 15 साल की उम्र में बदलाव आने शुरू हो जाते हैं। कुछ लड़कों में किशोरावस्था दूसरे लड़कों की तुलना में जल्दी शुरू हो जाता है जैसे लम्बाई का बढ़ना। कभी–कभी कद बढ़ने से पहले लड़कों का वजन भी बढ़ सकता है। किशोरावस्था में लड़कों की आवाज भारी होने लगती है तथा शारीरिक श्रम करने से मांसपेशिया मजबूत और कंधे चौड़े होने लगते हैं। लड़कों के चेहरे, बाहों के नीचे तथा जाघों के बीच बाल उगने लगते हैं। तथा चेहरे पर धब्बे या मुहांसे भी निकल सकते हैं। ये सभी बदलाव हार्मोन्स के कारण होते हैं। आमतौर पर 18–19 वर्ष तक लड़कों का शरीर वयस्क शरीर में बदल चुका होता है। महिला शरीर की तरह पुरूषों में भी यह बदलाव प्राकृतिक है।

जैसा कि महिलाओं की कुछ अलग स्वास्थ्य आवश्यकताएं होती हैं, जैविकीय तौर पर महिलाओं की शारीरिक संरचना में भी कुछ फर्क होता है। महिलाएं माहवारी व प्रजनक प्रक्रियाओं से जुड़ी होती हैं। समाज में अलग–अलग सामाजिक मान्यताओं, पुरानी रीति रिवाजों व परम्पराओं के चलते महिलाओं के शारीरिक बदलाव, यौनिक व प्रजनन स्वास्थ्य पर कभी खुलकर चर्चा न होने से महिलाओं को शर्म व झिझक लगती है। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं का प्रजनन व यौन जीवन पूरी तरह समाज द्वारा बनाई गई परम्पराओं पर सीमित रहता है। महिलाओं पर घर के अन्दर कार्यबोझ, जल्दी–जल्दी बेटा पैदा करने का दबाव, स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच न के बराबर होना, महिलाओं की भूमिका को सेवा देखभाल से जुड़े कामों तक ही देखना, महिलाओं के साथ भेदभाव व हिंसा आदि ऐसे मुद्दे हैं जो महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। परिवार नियोजन में पुरूषों की भागीदारी न होना भी महिला स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। किशोरावस्था के दौरान अपने शरीर के बदलाव को समझना व उस पर सही जानकारी होना आवश्यक है। इस बदलाव के दौरान गलत भ्रान्तियों को दूर करना, स्वच्छता, संसाधनों की जानकारी जरूरी है और उचित सलाह समय समय पर मिलना आवश्यक है।

समानता के साथी ने अभ्यास में शरीर पहचान व विविधता पर जानकारी बढ़ाई, उनका धन्यवाद।

अब समानता के साथी अगला अभ्यास–18 में जाकर देखें कि यौनिक लैंगिक अधिकार क्या हैं ?

आओ जानें–

18.यौनिक लैंगिक अधिकार

समानता के साथी यौनिक लैंगिक अधिकार के बारे में नीचे लिखा गया है पढ़ें, और समझें कि यौनिक लैंगिक अधिकार क्या हैं।

हम एक ऐसे समाज में रहते हैं जिसमें एक ही तरह की यौनिकता/लैंगिकता को मान्यता दी जाती है– शादी के रिश्ते में बंधे हुए औरत और मर्द की। एकमात्र उसी को प्राकृतिक और सामान्य बताया जाता है। इसमें भी मर्द की यौनिकता निर्णायक और प्रधान है। औरत की यौनिकता तो वंश चलाने का एक जरिया भर है। यहां तक कि औरत या मर्द होने का मतलब है, दोनों के बीच रिश्ता हो, उनकी भूमिकाएं क्या हों और इनके मुताबिक परिवार का स्वरूप क्या हो– इन सबका सामाजिक ताकतें ऐसा रूप तय करती हैं जिनसे कि समाज में गैरबारबरी बनी रहे। इन सामाजिक ताकतों में महत्वपूर्ण है पितृसत्ता, जिसे बरकरार रखने के लिए विषमलैंगिकता (यौनिकता का वो रूप जिसमें केवल औरत और मर्द के बीच आकर्षण हो) और जेण्डर की एक संकीर्ण परिभाषा की जरूरत होती है। अगर औरत में औरतों से अपेक्षित गुण न हों, मर्द में मर्दो से जुड़े गुण न हों और ये शादी में बंध कर अपनी तय भूमिकाएं निभाते हुए परिवार न बनाएं, तो पितृसत्ता की व्यवस्था चलेगी कैसे? वे सभी जो इस 'आदर्श संरचना' के बाहर जीने की हिम्मत रखते हैं, उन्हे नैतिकता और समाज के लिए खतरा माना जाता है। इस खतरे के कारण सामाजिक व्यवस्था या तो इस 'आदर्श संरचना' से अलग जाने वाले के अस्तित्व को पूरी तरह नकार देती है या उन्हें यह कहकर अस्वीकार कर देती है कि वे पश्चिमी सभ्यता की उपज हैं। जैसे कहा जाता है कि हमारे समाज में लेस्बियन औरतें हैं ही नहीं या पश्चिमी रंग में रंगे हुए उच्च वर्ग के मुट्ठी भर शहरी युवक ही गे हैं। जब उनकी उपस्थिति को अनदेखा करना मुश्किल हो जाता है, तो उन्हे इस तरह दण्डित किया जाता है कि उनके लिए स्वतंत्र व गरिमामय जीवन जीना दूभर हो जाता है।

पिछले कुछ दशकों में समलैंगिक इच्छा रखने वाले लोगों, जिसमें लेस्बियन (औरत जो

औरत के प्रति आकर्षित है), गे (मर्द जो मर्द के प्रति आकर्षित है), बाईसेक्स्युअल (औरत और मर्द दोनों के प्रति आकर्षित), ट्रान्सजेंडर्ड (औरत और मर्द की परिभाषा में नहीं बंधे हुए), हिजड़ा आदि शामिल हैं, की ओर से हिंसामुक्त और भयमुक्त, गरिमामय जीवन के संवैधानिक मानव अधिकार की मांग भारत के अलग–अलग कोनों से उठ रही है। यह आंदोलन ऐसे लोगों के विरूद्ध हो रहे मानव अधिकारों के हनन का विरोध कर रहा है।

समलैंगिक अधिकार मानव अधिकार हैं! यौनिक अभिरूचि केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मुद्दा नहीं है। यह एक बुनियादी मानव अधिकार है क्योंकि किसी को जबरदस्ती उसकी यौनिक अभिरूचि बदलने या उसे स्वीकार करने या उसके ऐसा न करने पर दण्ड देने वाले कानून तथा प्रथाएं मानव व्यक्तित्व के एक गहरे पहलू पर चोट पहुंचाती हैं। ऐसे कानून और प्रथाएं समलैंगिक लोगों की शारीरिक व मानसिक प्रतिष्ठा को नकारते हुए घोर मनोवैज्ञानिक और शारीरिक हिंसा करते हैं क्योंकि इनसे व्यक्ति की बुनियादी गरिमा तथा हैसियत को चोट पहुंचती है। इसलिए यौनिक पहचान या अभिरूचि और सहमति–प्राप्त वयस्क समलैंगिक

समलैंगिक–यौन संबंधों को आपराधिक करार देने को मानव अधिकारों का उल्लंघन माना जाता है।समलैंगिक अपने को ऐसे पुरूष के रूप में पहचानते हैं जो दूसरे पुरूष के प्रति आकर्षित होते हैं तथा उनसे यौनिक आनन्द प्राप्त करते हैं। समलैंगिकता अत्यन्त व्यक्तिगत मुद्दा है। किसी की व्यक्तिगत पहचान पूरी तरह व्यक्तिगत इच्छा का मामला है, जिसका यौनिक व्यवहार से बहुत कम लेना देना है। भारत में यह बहुत आम है जहॉ लोग दूसरे पुरूषों के साथ आनन्द उठाते हैं, किन्तु समलैंगिक मानक से अपने को नहीं पहचानते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति यौनिक आकर्षण के वर्णाक्रम विस्तार (स्पैक्ट्रम) पर बीच में कहीं भी हो सकता है। यह आंका गया है कि केवल 10 प्रतिशत जनसंख्या पूरी तरह विपरीत लिंग के प्रति आकर्षित होती है। यह भी अनुमान है कि 10 प्रतिशत पूरी तरह उसी लिंग के लोगों से आकर्षित होते हैं। बाकी 80 प्रतिशत कहीं भी बीच में होते हैं। समाज के जोरदार दबाव व मॉ–बाप तथा दोस्तों द्वारा अपेक्षित व्यवहार के कारण 80 प्रतिशत से ज्यादातर लोग (और 10 प्रतिशत समलिंगी में से भी कई लोग) मुख्यतः विपरीत लिंगी यौन सम्बन्धों की जीवन शैली को चुनते हैं और महिला व पुरूष दोनो समलिंगी हो सकते हैं और होते हैं। पुरूष समलिंगी ज्यादा दिखाई पड़ते हैं क्योंकि समाज पुरूषों को आमतौर पर यौनिक के मामलों में ज्यादा खुला होने व इच्छा रखने की अनुमति देता है।

समलैंगिकता एक मानवीय गुण है, इसका राष्ट्रीयता से कोई लेना–देना नहीं होता। यह कहा जा सकता है कि समलैंगिकता का आचरण व अहसास काफी पुराने समय (आदि काल) से होता आया है। समलैंगिकता का व्यवहार कई प्राचीन सहित्यों में विस्तार से वर्णित है, जिसमें कामसूत्र भी शामिल है तथा खजुराहो व अन्य प्राचीन भवनों पर वर्णित

है। हिजरा गृहिणीयों को रखने की परम्परा या हरम में युवा लड़कों को रखने के बारे में किये गए अभिलेख ईसा के 1500 वर्ष पूर्व तक ले जाते हैं।

महिला और पुरूष दोनों इस तरह का आकर्षण रख सकते हैं। जीवन के विभिन्न समय में विभिन्न लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव लोगों द्वारा किया जाता है। ज्यादातर लोगों के जीवन में एक समय दूसरे उसी लिंग के प्रति कुछ हद तक आकर्षण अनुभव होता है। यह आम है तथा इसे सामान्य माना जाना चाहिए।

(स्रोत : नाज फाउण्डेशन गाइड)

गे–समलिंगी पुरूष जो इस समूह के लोगों के अधिकार को स्थापित करने के आंदोलन से जुड़े हैं अपने को गे कह सकते हैं और कहते हैं कि वे गे के अधिकार के लिए काम करते हैं।

हिजड़ा (यूनक्स)–हिजड़ा जन्मजात तथा बाद में बद्धी (कास्ट्रेटेड) किया हुआ पुरूष है जिसने अपने अण्डकोष को यौनारम्भ से पहले ही निकलवा दिया है ताकि दूसरे यौनिक लक्षणों का विकास न हो सके। पुरूष हारमोन के कमी से कुछ विशेष लक्षण पैदा होते हैं जैसे महिलाओं जैसी आवाज या चेहरे पर बाल न आना आदि।

मध्य या कुछ एशियाई देशों में हिजरा हरम की महिलाओं की सुरक्षा के लिए नौकरी पर रखे जाते हैं। हिजड़ापन पुरूष हारमोन के पूर्ण कमी का प्रतिफल है। यह कोशिकाओं के या जनन अंगो या अण्ड कोष के छोटे होने के कारण या एकदम न होने के कारण होते हैं। ये पुरूष आमतौर पर अपेक्षित पुरूष जैसे नहीं बनते, जैसे– पुरूष की आवाज या पुरूषों को आने वाली दाढ़ी मूंछ या पूरे शरीर पर बाल आदि। हिजड़ा अपने को महिला जैसा मानते हैं। अतः वे महिला जैसे कपड़े पहनते हैं या वर्ताव करते हैं। उनके अन्दर कपड़ों व ज्वैलरी के प्रति, फैशन के प्रति काफी आकर्षण रहता है। वे काफी चटक रंग के कपड़े पहनते हैं तथा काफी सजते–संवरते हैं।

हिजड़ा भारतीय समाज में स्वीकार्य नहीं है। उन्हें काम नहीं दिया जाता इसलिए उन्हें भीख मॉगना या सड़क पर नाचना पड़ता है। वे उनके साथ ज्यादा सटने की कोशिश करते हैं जो लोग इनके अमर्यादित व्यवहार या तंग करने वाले व्यवहार से डरते हैं। (स्रोत : एजुकेशन इन ह्यूमन सेक्सुअलिटी)

एम.एस.एम. (मेन हू हैव सेक्स विथ मेन)–सारे पुरूष जो दूसरे पुरूषों के साथ संभोग करते हैं वे अपने को समलिंगी या गे नहीं मानते। कई सारे शादीशुदा दूसरे पुरूषों के साथ सेक्स करते हैं।

कोथी–स्वंय द्वारा परिभाषित कोथी हमेशा जनाना व्यवहार के लक्षणों को अपनाते हैं। वे गुदा मैथून कराते हैं। वे अपने कामुक हरकतों द्वारा पंथी पुरूष को लुभाने का प्रयास करते हैं जिसमें मुख मैथुन, गुदा मैथुन व हस्त मैथुन शामिल होता है। एक कोथी दूसरे

कोथी से सीखते हैं।

पंथी–ये पुरूष हैं जो आमतौर पर गुदा मैथुन करते हैं (लिंग का दूसरे के गुदा में प्रवेश) तथा उम्मीद की जाती है कि कोथी की अपेक्षा ज्यादा मर्दाना होंगे। यह देखा जाता है कि इसमें से ज्यादा लोगों की कोई यौनिक पहचान नहीं होती जैसे समलिंगी या गे। ये आमतौर पर वे पुरूष हैं जो वीर्य गिराने के लिए साधन ढूढ़ते हैं। ये तुल्नात्मक रूप से अपने साथी की यौनिक पहचान के प्रति काफी उदासीन होते हैं। उनमें से कुछ अक्सर उसी क्षेत्र में घूमते रहते हैं और उनमें से कुछ का किसी विशेष कोथी के साथ सम्बन्ध भी हो जाता है जिसको वे चाहते हैं। (स्रोत : प्रयास नेटवर्क, लैग्वेंज एण्ड सेक्सुअल विहैवियर ऑफ मैन)

लेस्बियन–जबकि समलैंगिकता तकनीकी तौर पर महिला और पुरूष दोनों को शामिल करती है जो अपने ही लिंग में सेक्स करते हैं, किन्तु लेस्बियन एक पहचान है जो केवल महिलाओं व महिलाओं की वरीयता पर ही लागू होती है। दो या दो से अधिक महिलाएं चूमती हैं, लाड़ करती हैं या दुलारती है तथा हस्तमैथुन करती हैं जिससे उन्हें यौनिक आनन्द मिलता है।(स्रोत : एजुकेशन इन ह्यूमन सेक्सुअलिटी)

ट्रान्स वेस्टाइट्ज (विपरीत लिंगी पहनावा व्यवहार)–ट्रान्सवेस्टाइट एक यौनिक व्यवहार है जिसमें व्यक्ति विपरित लिंग के पहनावे को या साज को पहन कर यौनिक उत्तेजना को महसूस करता है। आज के स्टाइल में जहॉ पर यूनीफार्म के कपड़े का चलन है, विपरीत लिंग के कपड़े पहनने के प्रति आकर्षण की कम मांग है। एक पुरूष अतिरंजित जनाने कपड़े, चमकदार वार्डर वाले अण्डरवेयर, बड़े–बड़े नकली बाल (विग) चेहरे पर सजावट आदि इस्तेमाल कर सकता है।

ट्रान्स सेक्सुअल–ट्रान्स सेक्सुअल जैवकीय रूप से महिला या पुरूष कोई भी हो सकता है, किन्तु विपरीत लिंग जैसे व्यक्ति बनने की इच्छा रखता है। ट्रान्स सेक्सुअल महसूस करते हैं कि वे गलत शरीर में बॉध दिए गए हैं और सरजरी के किसी हद तक जा सकते हैं तथा अपना हारमोन बदलवा कर अपना लिंग बदलवा सकते हैं। ट्रान्स सेक्सुअल को सरजरी में जाने से पहले गहरे मनोवैज्ञानिक परामर्श की आवश्यकता होती है।(स्रोत : एजुकेशन इन ह्यूमन सेक्सुअलिटी)

यौनिक अधिकार जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं–

यौनिक अधिकार कुछ नैतिक सिद्धान्तों पर आधारित है (कोरिया और पचेस्की)। ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं–

1. शारीरिक निष्ठा (बॉडिली इंटिग्रिटी) – अपने शरीर पर नियंत्रण और सुरक्षा का अधिकार। इसका अर्थ है कि सभी स्त्रियों और पुरूषों को न केवल अपने शरीर को हानि से बचाने का बल्कि अपने शरीर का पूरा संभावित आनंद उठाने का अधिकार है।

2. स्वाधिकार (परसनहुड) – स्वाधीनता का अधिकार। इसका अर्थ है कि सभी स्त्रियों और पुरूषों को अपने लिए निर्णय लेने का अधिकार है।

3. समानता (इक्वॉलिटी) – सभी व्यक्ति समान हैं और उन्हें आयु, जाति, वर्ग प्रजाति, लिंग, शारीरिक योग्यता, धार्मिक या अन्य विश्वासों, यौनिक प्रवृत्ति तथा अन्य ऐसे कारणों पर आधारित भेदभावों के बिना मान्यता दी जानी चाहिए।

4. विविधता (डायवर्सिटी) – भिन्नता के लिए आदर। लोगों की यौनिकता और उनके जीवन के अल्य पहलुओं में विविधता भेदभाव का आधार नहीं होना चाहिए। विविधता के सिद्धांत का दुरूपयोग पिछले तीनों नैतिक सिद्धान्तों के लिए नहीं होना चाहिए । (स्रोत : सामान्य आधार यौनिकता–तारशी)

समानता के साथी ने अभ्यास यौनिक लैंगिक अधिकार को पढ़ा अपनी जानकारी बढ़ाई। साथी का धन्यवाद।

समानता के साथी – जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें

(अ) समानता के साथी यौनिक लैंगिक अधिकारों के बारे में अपने स्तर से समुदाय में किस तरह जागरूकता बढ़ा सकते हैं लिखें ?

_____
_____
_____

(ब) यदि समानता के साथी ने कभी यौनिक लैंगिक अधिकारों के बारे में समुदाय में चर्चा या जागरूकता का काम किया तो किस तरह की चुनौतियां आई लिखें ?

चुनौतियां क्या आई –

_____
_____
_____

आपने चेनौतियों से निपटने के लिए क्या किया ?

_____
_____
_____

अब समानता के साथी अगला अभ्यास–19 में 'साथी चयन का अधिकार व कम उम्र में शादी' के बारे में जानें

19.साथी चयन का अधिकार व कम उम्र में शादी

समानता के साथी नीचे लिखी बातों को पढ़ें और विशलेषण करें कि, इन बातों के बारे में जानना जरूरी क्यों है।

साथी चयन के बारे में –कानूनन 21 वर्ष का लड़का और 18 वर्ष की लड़की को यह अधिकार है कि वह अपने साथी का चयन खुद कर सकते हैं। साथी चयन में किसी भी प्रकार से उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी राय थोपी नहीं जा सकती और न ही दबाव बनाया जा सकता। वे अपनी इच्छा से किसी भी धर्म या जाति से अपने साथी का चुनाव कर सकते हैं। लेकिन आज भी हमारे समाज में धर्म, गोत्र आदि के आधार पर अपनी इच्छा से साथी चुनने पर लड़का और लड़की के साथ तरह–तरह की हिंसक घटनाएं होती रहती हैं। इस तरह की घटनाओं में कई बार पुलिस का व्यवहार भी पक्षपात वाला होता है। अतः इस बारे में युवाओं के साथ–साथ समुदाय स्तर पर लोगों को अधिक जागरूक व संवेदनशील बनाने की जरूरत है।

षादी की उम्र का चयन–बाल विवाह निरोधक अधिनियम 1929 के अनुसार 21 साल से कम उम्र के लड़के और 18 साल से छोटी लड़की की शादी कानूनन जुर्म है। इस कानून का उलघंन करने पर दण्ड का प्रावधान है। बाल विवाह की शिकायत कोई भी व्यक्ति पुलिस थाने या मजिस्ट्रेट के पास जाकर कर सकता है। लेकिन हमारे भारतीय परिवारों में आज भी लड़कों और

लड़कियों की शादी कम उम्र में हो रही हैं। कम उम्र में शादी होने के कारण लड़कियों की पढ़ाई रूक जाती है जिससे उनके विकास के मौके कम हो जाते हैं, जल्दी मॉ बनने और जल्दी–जल्दी बच्चे पैदा होने के कारण सबसे ज़्यादा महिलाओं का स्वास्थ्य प्रभावित होता है तथा असमय महिलाएं मृत्यु का शिकार हो जाती हैं।

हमारे समाज में स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारक सबसे ज़्यादा प्रभावी रूप से देखने को मिलते हैं। सामाजिक कारकों में रूढ़िवादी सामाजिक व धार्मिक मान्यताएं, परम्पराएं, जातिवाद, वर्गवाद आदि है जिनका सबसे ज़्यादा असर गरीबों व वंचित समुदाय खासकर महिलाओं और बच्चों पर पड़ता है। पढ़ाई के पूरे मौके न मिलना, कम उम्र में शादी, जल्दी–जल्दी बच्चे पैदा होना, संतुलित व पौष्टिक आहार न मिलना, जेंडर के आधार पर भेदभाव व महिलाओं के साथ हिंसा, स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी न होने आदि अनेक कारणों से हमारा स्वास्थ्य प्रभावित होता है। तथा स्वास्थ्य संस्थाओं में सेवाएं देने में भेदभाव, लापरवाही, समय पर इलाज न मिलना, सेवाओं के बदले पैसों की मांग आदि अनेक समस्याएं हैं जो लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं पाने के हक को प्रभावित करता है। हमारे देश में हर साल गर्भावस्था के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच के पूर्व विभिन्न सामाजिक कारणों की वजह से हज़ारों महिलाओं की असमय मृत्यु हो जाती है।

समानता के साथी ने अभ्यास में साथी चयन का अधिकर व कम उम्र में शादी के बारे में जानकारी बढ़ाई। समानता के साथी का धन्यवाद।

समानता के साथी – जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

समानता के साथी साथी चयन का अधिकार व कम उम्र में शादी को लेकर अपने स्तर से क्या कर सकते हैं ?

(अ) साथी चयन का अधिकार को लेकर अपने परिवार के स्तर पर क्या कर सकते हैं लिखें ?

_____

_____

(ब) कम उम्र में शादी को रूकवाने को लेकर अपने परिवार के स्तर पर क्या कर सकते हैं लिखें ?

_____

_____

(स) साथी चयन का अधिकार को लेकर अपने समुदाय के स्तर पर क्या कर सकते हैं लिखें ?

_____

_____

(अ) कम उम्र में शादी को रूकवाने को लेकर अपने समुदाय के स्तर पर क्या कर सकते हैं लिखें ?

_____

_____

यदि समानता के साथी ने कभी साथी चयन का अधिकार व कम उम्र में शादी को रूकवाने की पहल की तो किस तरह की चुनौतियां आई लिखें –?

_____

_____

परिणाम क्या रहा लिखें ?

_____

_____

समानता के साथी अगला अभ्यास–20 में जान पायेंगे कि, यौन अधिकार एवं उससे जुड़ी मिथ भ्रांतिया कौन–कौन सी हैं आओ जानें।

20.यौन अधिकार एवं इससे जुड़े मिथ व भ्रान्तियां

समानता के साथी नीचे लिखी बातों को पढ़ें और मनन करें कि हमारे समाज में यौन अधिकार से जुड़े मिथ एवं भ्रांतिया किस कदर फैली हैं, और उसका प्रभाव किस तरह दिखाई दे रहा है। आओ जानें–

पुरूषों को अपनी लैंगिकता को लेकर तमाम गलतफहमियां होती हैं तथा बहुत सारे मिथक भी प्रचलित हैं। अनेक कारणों से यौन संक्रामक बीमारियों, निःसन्तानता, जननांगों के संक्रमण, एड्स, पुरूष गर्भनिरोधकों के इस्तेमाल, इलाज व रोकथाम आदि पर पुरूषों को सही व पूरी जानकारी नहीं मिल पाती। बिना किन्हीं वैज्ञानिक प्रमाणों व आधारों के तमाम पाठ्य सामग्री व पोर्न फिल्मों के माध्यमों से पुरूषों खासकर युवाओं के अंदर डर व भ्रांतिया पैदा कर हकीमों, झोला झाप डाक्टरों व कम्पंनियों द्वारा लाभ कमाने के लिए बाज़ारों में भ्रामक दवाओं, यंत्रों आदि को बेचा जा रहा है तथा उन्हें आक्रामक लैंगिक व्यवहारों के रूप में तैयार किया जा रहा है। इसलिए पुरूषों के स्वास्थ्य ज़रूरतों व सकारात्मक लैगिंक व्यवहारों हेतु ठोस व प्रभावी पहल की ज़रूरत है।

विपणन/सनसनीखेज–

वर्तमान में बाज़ारीकरण का असर लोगों की आम जिन्दगी में अपनी जगह बना चुका है। भ्रामक विज्ञापनों के माध्यम से लोगों खासकर युवाओं व बच्चों के स्वास्थ्य समस्याओं को जिस तरह पेश किया जाता है जो कि भ्रन्तियां पैदा करती हैं उनका असल जिन्दगी से कोई लेना देना नहीं होता है। बाज़ारीकरण में यौन समस्या को मुनाफे की योजना बनाकर तमाम तरह की दवाईयां, टॉनिक, चूर्ण, इन्जेक्शन बनाकर बाज़ार में उपलब्ध कराये जा रहे हैं। बाज़ार पर प्रायः पुरूषों का नियंत्रण व पहुँच है जिसके कारण महिलाओं को ज़्यादा नुकसान व जोखिम उठाना पड़ रहा है। पुरूषों में भी मर्दानगी को लेकर तमाम् भ्रम पैदा किया जाता है जिसके कारण वे तमाम तरह के नये–नये प्रयोग करते हैं जिनका असर महिलाओं पर भी पड़ता है।

उत्पादों में लुभाने वाली बातें–

- तुरन्त असरकारी, लाभ ना हो तो पैसा वापस, एक कैपसूल काफी है।
- ज्ञानियों के अनुभव व दुलर्भ जड़ी बूटियों के मिश्रण से बना पौरूषमणी चूर्ण
- वर्षों की रिसर्च व अनुभवी वैज्ञानिकों की खोज से तैयार हॉर्स पावर इन्जेक्शन
- लाखों करोड़ों लोगों का विश्वास इसीलिए है खास आज ही आजमाईये ।
- यदि चूक कर गये तो, जिन्दगी भर पश्चाताप, हमेशा जवान बनाये रखे बलसाली चूर्ण आदि।

उत्पादों में सनसनी व भ्रांमकता फैलाने वाली बातें–

- यदि आपने विश्वास नहीं किया तो, आप अपनी जिन्दगी से प्यार नहीं करते।
- यदि ये लक्ष्ण दिखाई दे रहें हैं तो, आप गम्भीर बीमारी के शिकार हैं।
- आज करोड़ों लोग ज़रा सी भूल के कारण ज़िन्दगी से हताश हैं।
- यदि आप इन बातों पर गम्भीर नहीं हैं तो, आप अपने साथी के साथ धोखा कर रहे हैं।
- जिसने इन बातों को मज़ाक में लिया, आज वह जवानी में भी बूढ़ा बनकर जी रहा है आदि।

मिथक

पुरूष व महिलाओं के सन्दर्भ में : पुरूषों के साथ जुड़े मिथक जेंडर मर्दानगी के साथ दिखाई देते हैं। जैसे– हस्तमैथुन करने से नुकसान होता है, स्वप्नदोष (गीले सपने आना) एक बीमारी है, लिंग बड़ा होना चाहिए, यौनिक व्यवहार में पुरूष को ताकतवर होना चाहिए, यौन रिश्तों के लिए पहल पुरूष को ही करनी चाहिए, पार्टनर के साथ जबरदस्ती यौन संबंध बनाने पर पुरूष को आनन्द मिलता है, महिलाओं की ना में ही हां छुपी होती है आदि। ये सब धारणाएं गलत हैं जो कि पुरूषों के साथ साथ समाज को भी खोखला कर रही हैं । इसी तरह महिलाओं के साथ भी कई सारे मिथक जुड़े हैं जैसे– महिला को यौन रिश्ते बनाने के लिए पहल नहीं करना चाहिए, यौन झिल्ली का फटना यौन सुचिता का प्रमाण है, माहवारी के दिनों में महिला अपवित्र होती है आदि। ये धारणाएं भी महिलाओं के साथ साथ समाज को भी कमजोर कर रही हैं।

स्वास्थ्य के बारे में हमारे समाज में कई तरह के मिथक भरे पड़े हैं जिनके कारण कई बार लोगों को उसका खामियाज़ा भुगतना पड़ता है। स्वास्थ्य से जुड़े मिथक अलग अलग क्षेत्रों में अलग अलग स्वरूपों में देखने या सुनने को मिलते हैं। स्वास्थ्य मिथकों में

महिलाओं के सन्र्दभ में अलग व पुरूषों के सन्र्दभ में अलग धारणाएं बनाई गई हैं जो निराधार हैं।

सेक्स, लैंगिकता व यौनिकता सम्बंधी सही जानकारी न होने के कारण हमारे समाज में महिलाओं और पुरूषों के स्वास्थ्य से जुड़े कई तरह के मिथक व गलत धारणाएं प्रचलित हैं। जिनका गहरा असर पुरूषों व महिलाओं के स्वास्थ्य व स्वास्थ्य सेवाओं पर पड़ता है। जैसे कि महिला को माहवारी के समय अछूत बनकर रहना व पुरूषों को अपनी मर्दाना ताकत बनाये रखने के लिए तरह तरह की दवाईयों व नुस्खों की आज़माईश करना। अतः स्वास्थ्य मुद्दों पर बात करने के लिए स्वास्थ्य मिथकों पर वैज्ञानिक आधारों पर सकारात्मक समझ बनाना आवश्यक है। आज बहुत सारे युवक सही जानकारी न मिलने के कारण तनावग्रस्त हो जाते हैं तथा हिंसक गतिविधियों में शामिल हो जाते हैं जिनका असर उनके साथी पर भी पड़ता है। अतः माहवारी, आम बीमारियों, गर्भावस्था, सेक्स से सम्बंधी गलत धारणाओं पर समझ बढ़ाने की ज़रूरत है। समाज में प्रचलित मान्यताएं व व्यवहार हैं जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता है। कामुकता एवं यौन स्वास्थ्य पर हमारे समाज में बहुत सारे मिथक जुड़े हुए हैं जिनका असर हमारे लैंगिक व यौनिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। जैसे बच्चों की देखभाल करना पुरूषों का काम नहीं है। कई सारे मिथक जेंडर व मर्दानगी से जुड़े हैं जिनका प्रभाव महिला तथा पुरूष दोनों पर पड़ रहा है। लेकिन सबसे ज्यादा प्रभावित महिलाएं हैं। समाज में प्रचलित मिथकों की आड़ में, बाजार तरह–तरह के उत्पाद व नुस्खे तैयार कर मुनाफा कमा रहा हैं। कुछ मान्यताऐं व धारणाऐं ऐसी बनी हैं कि लोग उन पर विश्वास करते हैं और जोखिम में रहते हैं। यौन/प्रजनन स्वास्थ्य से जुड़े मिथक हमारे समाज में प्रभावी तरीके से हावी हैं। जिनके कारण सही व सकारात्मक दी जाने वाली जानकारियां व सेवाएं बाधित होती हैं। समाज में मिथकों के प्रकार व स्वरूप भी अलग अलग आंचलों में अलग–अलग तरह से दिखाई देते हैं। इन मिथकों में महिला व पुरूषों के लिए अलग मानक व विश्वास बनाये गये हैं। जिनमें ज्यादातर मिथक जोखिम भरे हैं।

समानता के साथी ने यौन अधिकार एवं उससे जुड़ी मिथ भ्रांतियों पर सकारात्मक जानकारी बढ़ाई। समानता के साथी का धन्यवाद।

समानता के साथी – जेंडर समानता के लिए अपनी योजना तैयार करें ?

समानता के साथी यौन अधिकार से जुड़ी और कौन–कौन सी मिथ भ्रांतिया हैं लिखें ?

_____

_____

_____

_____

_____

समानता के साथी यौन अधिकार से जुड़ी मिथ भ्रांतियों को दूर करने के लिए अपने स्तर से क्या कर सकते हैं लिखे ?

_____

_____

_____

_____

अब समानता के साथी निष्ठाभाव से 'एक साथ अभियान' के तहत संकल्प लेंगे, जिससे कि दूसरे लोग भी प्रभावित होकर जेंडर समानता की मुहिम में जुड़ने लगेंगे।

संकल्प पत्र

मैं 'समानता साथी' शपथ लेता हूँ कि .....

- बेटी–बेटा के लालन पालन में कोई भेदभाव नहीं करूंगा और दोस्त बनकर उनकी भावनाओं को समझूंगा और मददगार बनूँगा।
- घर में लड़कियों के इच्छा अनुसार उनकी पढ़ाई पूरी करवाने में सहयोग करूंगा जिससे कि वो आत्मनिर्भर हो सकें।
- घर के कामों में बराबर की भागीदारी लेकर घर की लड़कियों व महिलाओं को बाहर आने–जाने के अवसर प्रदान करने में मददगार बनूँगा तथा उन पर होने वाली रोक टोक का विरोध करूंगा।
- बेटी की जल्दी शादी नहीं करूंगा और अपने आस पड़ोस में भी लोगों को समझाऊंगा।
- संपत्ति में पत्नी को पूरा हक मिले, इसके लिए मैं जिम्मेदार रहूँगा और बेटी और बेटा में संपत्ति का बराबर बटवारा करूंगा।
- अपने घर में ऐसा माहौल बनाने में मददगार बनूँगा जिसमें लड़कियां व महिलाएं अपनी बातों को बेझिझक कह पायें।
- कोई भी बातचीत व भाषा में ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करूंगा जो कि लड़कियों व महिलाओं को नीचा दिखाये व उन्हें भावनात्मक ठेस पहुँचाये।
- पत्नी के साथ मारपीट, गाली गलौच नहीं करूंगा और न ताने दूँगा बल्कि बराबरी के रिश्ते बनाये रखूंगा।
- मैं छेड़खानी नहीं करूंगा, छेड़खानी करने वालों का विरोध करूंगा और यह प्रयत्न करूंगा की घर से बाहर महिलाएं और लड़कियां सुरक्षित रहें।
- लड़कियों, महिलाओं व बच्चों के साथ हिंसा नहीं करूंगा और अपने जीवन में हर तरह की हिंसा का विरोध करूंगा।

समानता के साथी का नाम हस्ताक्षर

साथी का पता

सर्म्पक नम्बर

समानता के साथी ने 'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान (स्त्री पुरूष बराबरी में पुरूषों की भागीदारी) में जुड़कर जेंडर समानता लाने के लिए संकल्प लिया।
समानता के साथी का धन्यवाद।

समानता के साथी ने 'एक साथ' राष्ट्रीय अभियान 'मन एक दर्पण' समानता कुंजी पुस्तक के माध्यम से जेंडर समानता का कोर्स पूरा किया। सामानता के साथी का धन्यवाद।

सेन्टर फॉर हेल्थ एण्ड सोशल जस्टिस

यंग वूमेंन हॉस्टल नं. 2 (बेसमेंट), एवेन्यू 21, जी ब्लॉक, साकेत, नई दिल्ली–10017,

फोनः 91–11–26511425, 26535203, टेलीफैक्सः 91–11–236041,

ईमेलः eksaathcampaign@gmail.com, chsj@chsj.org वेबसाइटः www.eksaathcampaign.net